PSC ACADEMY

HISTORY OF CHHATTISGARH

By RAKESH SAO

As per New Syllabus…

CGPSC PRE + MAINS

PAPER – 3 UNIT – 3

WWW.PSCACADEMY.IN

2nd Edition 2019

Printing and Publishing Rights with the Publishers….

No part of this book may be reproduced or copied in any form or by any means without the written permission of the publishers. Breach of this condition is liable for legal action.

Information and Facts given in this book is yet to be authenticated. Please refer and consist with original source.

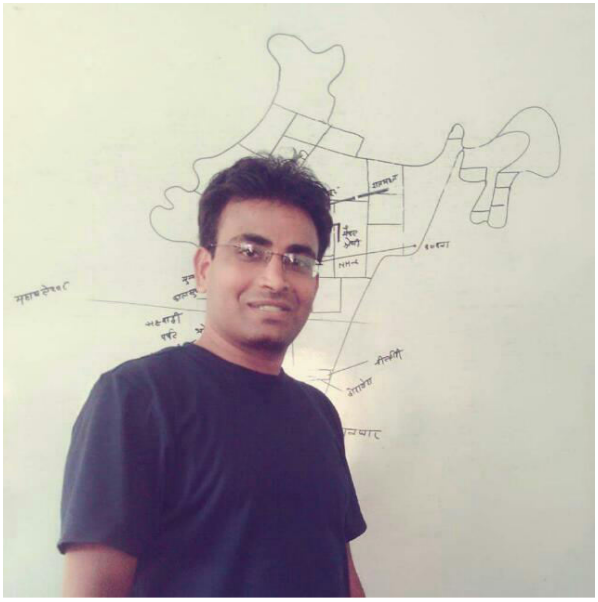

RAKESH SAO

CSE (BIT , Durg)

DIRECTOR (PSC ACADEMY)

कल्चुरी वंश

- कल्चुरी वंश (550 ई. – 1741 ई.)
- रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)
- छत्तीसगढ़ के 36 गढ़
- रायपुर का कल्चुरी वंश (1300 ई. – 1750 ई.)
- कल्चुरीकालीन महत्वपूर्ण तथ्य
- कल्चुरीकालीन प्रशानिक व्यवस्था
- सामाजिक जीवन
- आर्थिक जीवन (अर्थव्यवस्था)
- धार्मिक जीवन
- साहित्य एवं भाषा
- महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर
- मुख्य परीक्षा आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

कल्चुरी वंश (550 ई. – 1741 ई.)

कल्चुरी वंश (550 ई. – 1741 ई.)

- कल्चुरी वंश का आदिपुरुष - **कृष्णराज I**
- त्रिपुरी कल्चुरी वंश के संस्थापक - **वामराज देव**
- त्रिपुरी में स्थायी रूप से राजधानी स्थापित करने का श्रेय - **कोकल्ल I**

क्र.	शासक	शासनकाल	विशेष
1	कृष्णराज I	550 – 575	▪ कल्चुरी वंश का आदिपुरुष ▪ राजधानी - महिष्मति (अवंती महाजनपद)
2	शंकरगढ़ I	575 – 600	
3	बुद्धराज I	600 – 620	
620 – 850 ई. तक कल्चुरीकालीन इतिहास की जानकारी प्राप्त नहीं हुई |			

त्रिपुरी कल्चुरी के प्रमुख शासक (850 ई. – 1000 ई.)

क्र.	शासक	शासनकाल	विशेष
1	वामराज देव	850 – 875	▪ त्रिपुरी के कल्चुरी वंश के संस्थापक ▪ राजधानी - त्रिपुरी
2	कोकल्ल I	875 – 900	▪ त्रिपुरी में स्थायी रूप से राजधानी स्थापित करने का श्रेय
3	शंकरगढ़ II 'मुग्धतुंग'	900 – 925	**बिलहरी अभिलेख (जबलपुर)** ▪ कोकल्ल I के 18 पुत्रों में से सबसे बड़ा पुत्र ▪ 900 ई. में शंकरगण द्वितीय (मुग्धतुंग) ने कोसल के सोमवंशी शासक से पाली जीता था | ▪ 900 ई. में शंकरगण द्वितीय (मुग्धतुंग) ने कोसल के बाणवंश के शासक **विक्रमादित्य** को पराजित किया था | ▪ अपने भाइयों को कोसल में मंडलाधिपति बना दिया | ▪ 950 ई. में सोमवंशी शासकों ने पुन: कोसल क्षेत्र में में अपना अधिकार कर लिया |
4	लक्ष्मणराज		▪ तात्कालीन त्रिपुरी शासक लक्ष्मणराज ने अपने पुत्र कलिंगराज को छत्तीसगढ़ भेजा |
5	कलिंगराज	1000 – 1020	▪ कलिंगराज ने 1000 ई. में **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर दक्षिण कोसल में **कल्चुरी राजवंश** की नींव रखी |

छत्तीसगढ़ का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

रतनपुर कल्चुरी के प्रमुख शासक

क्र.	शासक	शासनकाल	विशेष
1	कलिंगराज	1000 – 1020	▪ छत्तीसगढ़ में कल्चुरी वंश के संस्थापक ▪ उपाधि – परममहेश्वर
2	कमलराज	1020 – 1045	▪ महत्वाकांक्षी शासक
3	रत्नदेव I	1045 – 1065	▪ रतनपुर के संस्थापक
4	पृथ्वीदेव I	1065 – 1095	▪ उपाधि – सकलकोसलाधिपति , प्रचण्डकोसलाधिपति
5	जाजल्लदेव I	1095 – 1120	▪ कल्चुरी वंश का सबसे प्रतापी शासक ▪ उपाधि – गजशार्दूल (गजबेटकर) , श्रीमज्जाजल्यदेव
6	रत्नदेव II	1120 – 1135	▪ उपाधि – त्रिकलिंगाधिपति
7	पृथ्वीदेव II	1135 – 1165	▪ सर्वाधिक अभिलेख
8	जाजल्लदेव II	1165 – 1168	▪ सबसे अल्पकालीन शासनकाल (3 वर्ष)
9	जगतदेव	1168 – 1178	▪ पत्नी - सोमल्ला देवी (वर्णन - रत्नदेव III के खरौद शिलालेख)
10	रत्नदेव III	1178 – 1198	▪ अराजक स्थिति
11	प्रतापमल्ल	1198 – 1222	▪ तांबे के चक्राकार व षट्कोणाकार सिक्के
	अंधकार युग		
12	बाहरेन्द्र साय	1480 – 1525	▪ सर्वाधिक लम्बा शासनकाल (45 वर्ष)
13	कल्याण साय	1544 – 1581	▪ अकबर का समकालीन ▪ जहाँगीर का समकालीन ▪ **जहाँगीर** के दरबार में 8 वर्षो तक नजरबंद ▪ **जमाबंदी प्रणाली के जन्मदाता**
14	लक्ष्मण साय	1581 – 1596	▪ अकबर का समकालीन ▪ जहाँगीर का समकालीन
15	शंकर साय	1596 – 1606	
16	मुकुंद साय	1606 – 1622	
17	त्रिभुवन साय	1622 – 1659	
18	अदली साय	1659 – 1653	
19	जगमोहन साय	1653 – 1675	
20	रणजीत साय	1675 – 1685	

21	तखतसिंह	1685 – 1689	▪ औरंगजेब का समकालीन
22	राजसिंह	1689 – 1712	▪ औरंगजेब का समकालीन ▪ दरबारी कवि - गोपाल प्रसाद मिश्र
23	सिरदार सिंह	1712 – 1732	
24	रघुनाथ सिंह	1732 – 1741 1741 – 1745	▪ अंतिम स्वतंत्र कल्चुरी शासक **(1732 – 1741)** ▪ मराठा अधीन प्रथम शासक **(1741 – 1745)**
25	मोहन सिंह	1745 – 1758	▪ मराठा अधीन अंतिम शासक **(1745 – 1758)** ▪ अंतिम शासक

रतनपुर

- रतनपुर की प्रसिद्धि चारों युगों में विद्यमान रही |

क्र.	युग	रतनपुर
1	सतयुग (महाभारत)	मणिपुर
2	त्रेतायुग	माणिकपुर
3	द्वापरयुग	हीरापुर
4	कलयुग	रतनपुर
5	कल्चुरीकाल	रत्नपुर , कुबेरपुर , चतुर्युगी पूरी

- **रत्नदेव प्रथम** के शासनकाल में रतनपुर के वैभव को देखकर **"कुबेरपुर"** तथा **"चतुर्युगी पूरी"** की संज्ञा प्रदान की गयी |

रायपुर

- रायपुर की प्रसिद्धि चारों युगों में विद्यमान रही |

क्र.	युग	रायपुर
1	सतयुग (महाभारत)	कनकपुर
2	त्रेतायुग	हाटकपुर
3	द्वापरयुग	कंचनपुर
4	कलयुग	कलिपुर
5	कल्चुरीकाल	रायपुर (ब्रह्मदेव राय के नाम पर)

रायपुर (राजधानी)

क्र.	वर्ष	व्यक्ति	शासन	विशेष
1	1409	ब्रह्मदेव राय	रायपुर कल्चुरी वंश	रायपुर पहली बार राजधानी बना
2	1818	एगेन्यु	द्वितीय ब्रिटिश अधीक्षक	आधुनिक छत्तीसगढ़ में पहली बार छत्तीसगढ़ की राजधानी बना

कल्चुरी वंश (550 ई. – 1741 ई.)

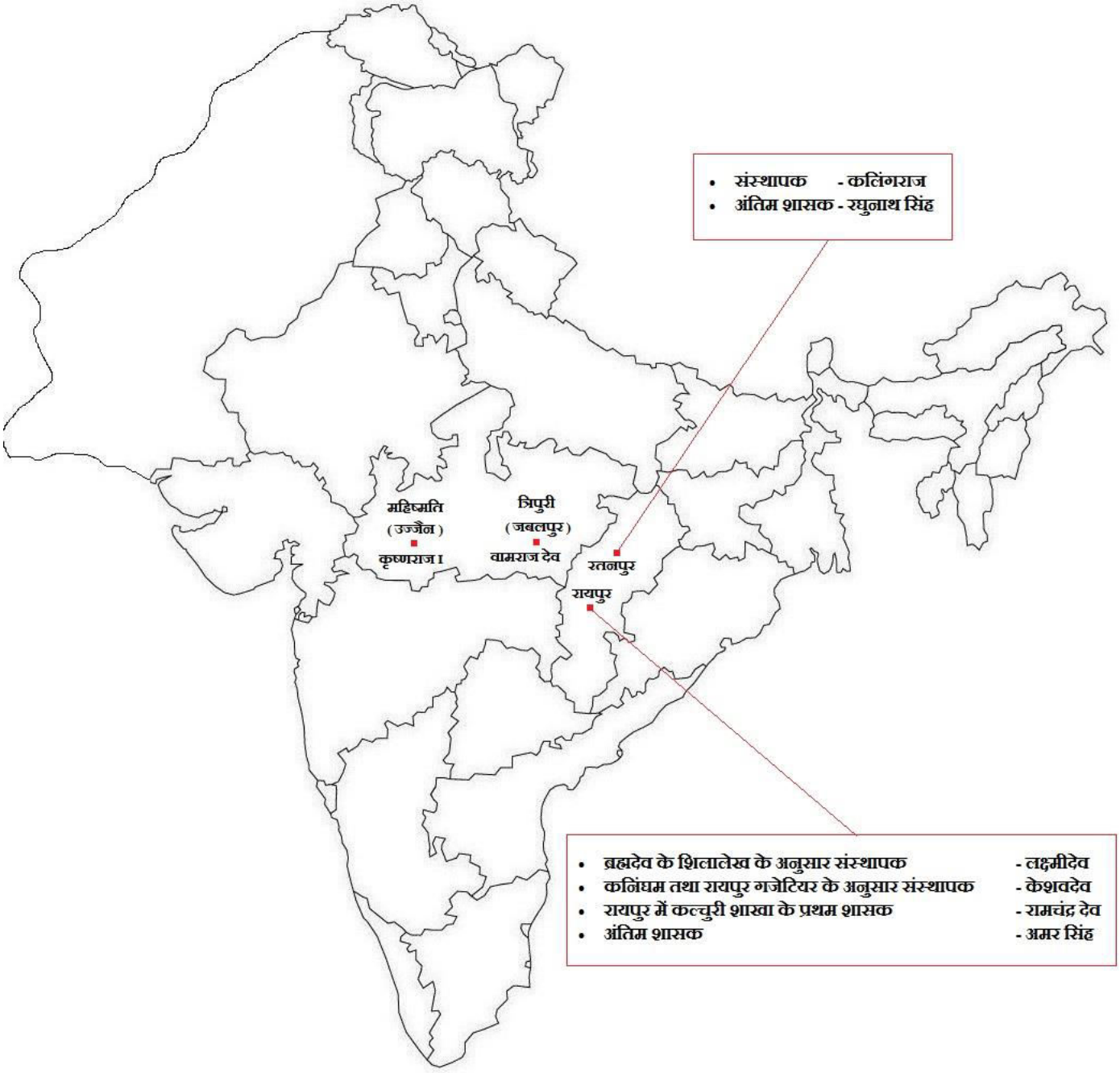

कल्चुरी वंश (550 ई. – 1741 ई.)

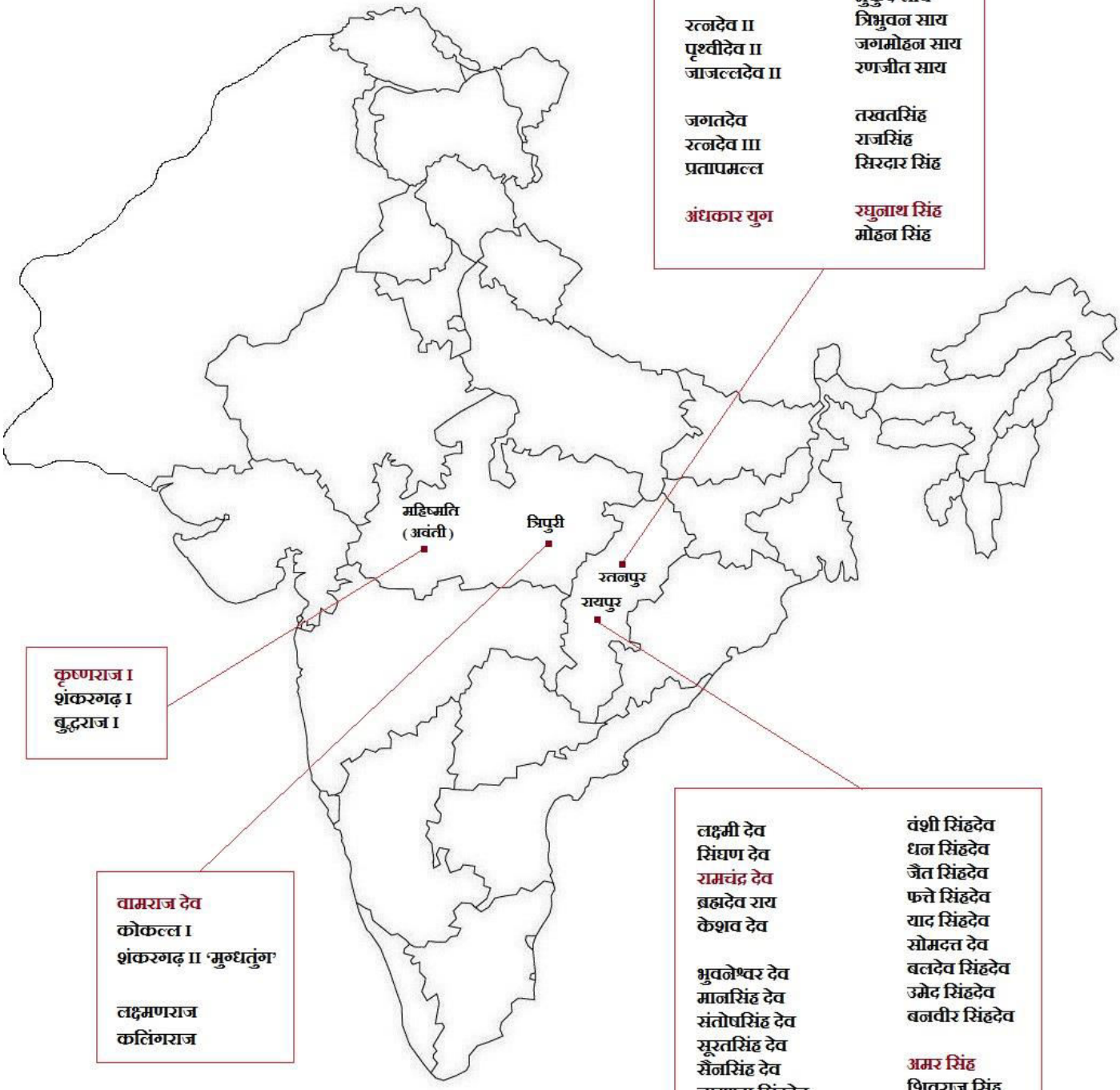

कलिंगराज
कमलराज
रत्नदेव I
पृथ्वीदेव I
जाजल्लदेव I

रत्नदेव II
पृथ्वीदेव II
जाजल्लदेव II

जगतदेव
रत्नदेव III
प्रतापमल्ल

अंधकार युग

बाहरेन्द्र साय
कल्याण साय
लक्ष्मण साय

शंकर साय
मुकुंद साय
त्रिभुवन साय
जगमोहन साय
रणजीत साय

तखतसिंह
राजसिंह
सिरदार सिंह

रघुनाथ सिंह
मोहन सिंह

कृष्णराज I
शंकरगढ़ I
बुद्धराज I

वामराज देव
कोकल्ल I
शंकरगढ़ II 'मुग्धतुंग'

लक्ष्मणराज
कलिंगराज

लक्ष्मी देव
सिंघण देव
रामचंद्र देव
ब्रह्मदेव राय
केशव देव

भुवनेश्वर देव
मानसिंह देव
संतोषसिंह देव
सूरतसिंह देव
सैनसिंह देव
चामुण्डा सिंहदेव

वंशी सिंहदेव
धन सिंहदेव
जैत सिंहदेव
फत्ते सिंहदेव
याद सिंहदेव
सोमदत्त देव
बलदेव सिंहदेव
उमेद सिंहदेव
बनवीर सिंहदेव

अमर सिंह
शिवराज सिंह

छत्तीसगढ़ का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

कल्चुरी वंश की राजधानी

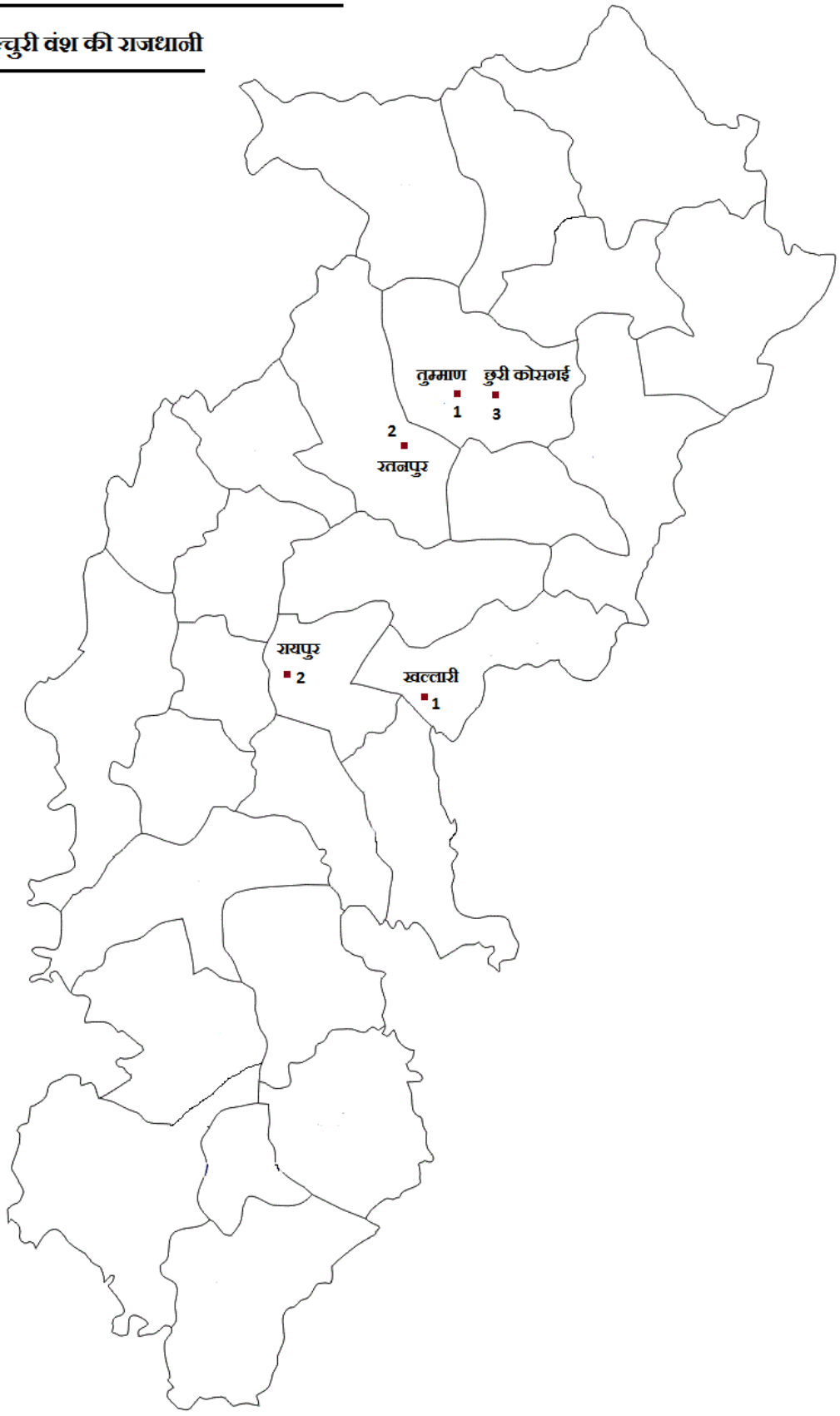

छत्तीसगढ़ का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

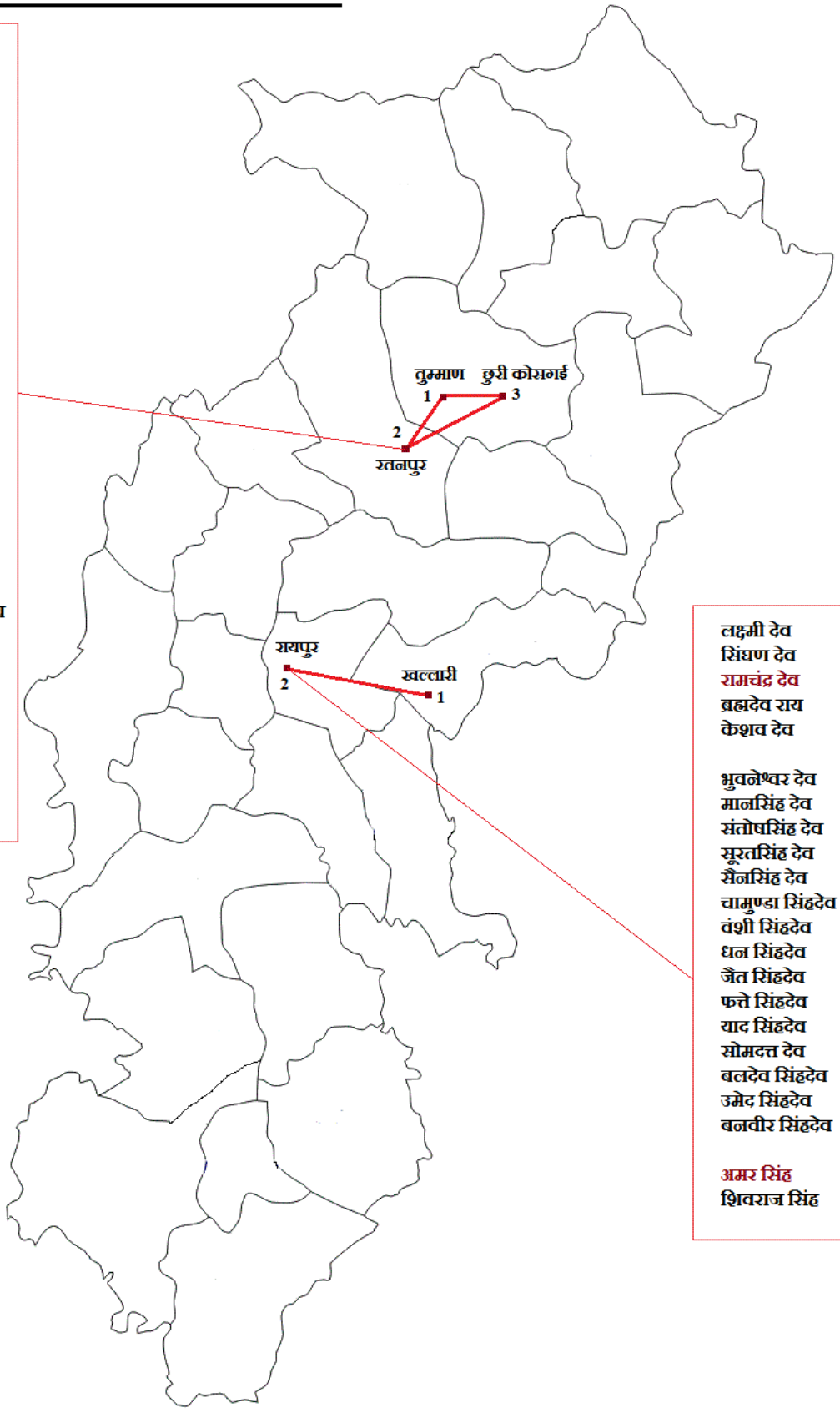

कलिंगराज
कमलराज
रत्नदेव I
पृथ्वीदेव I
जाजल्लदेव I

रत्नदेव II
पृथ्वीदेव II
जाजल्लदेव II

जगतदेव
रत्नदेव III
प्रतापमल्ल

अंधकार युग

बाहरेन्द्र साय
कल्याण साय
लक्ष्मण साय

शंकर साय
मुकुंद साय
त्रिभुवन साय
जगमोहन साय
रणजीत साय

तखतसिंह
राजसिंह
सिरदार सिंह

रघुनाथ सिंह
मोहन सिंह

लक्ष्मी देव
सिंघण देव
रामचंद्र देव
ब्रह्मदेव राय
केशव देव

भुवनेश्वर देव
मानसिंह देव
संतोषसिंह देव
सूरतसिंह देव
सैनसिंह देव
चामुण्डा सिंहदेव
वंशी सिंहदेव
धन सिंहदेव
जैत सिंहदेव
फत्ते सिंहदेव
याद सिंहदेव
सोमदत्त देव
बलदेव सिंहदेव
उमेद सिंहदेव
बनवीर सिंहदेव

अमर सिंह
शिवराज सिंह

छत्तीसगढ़ का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

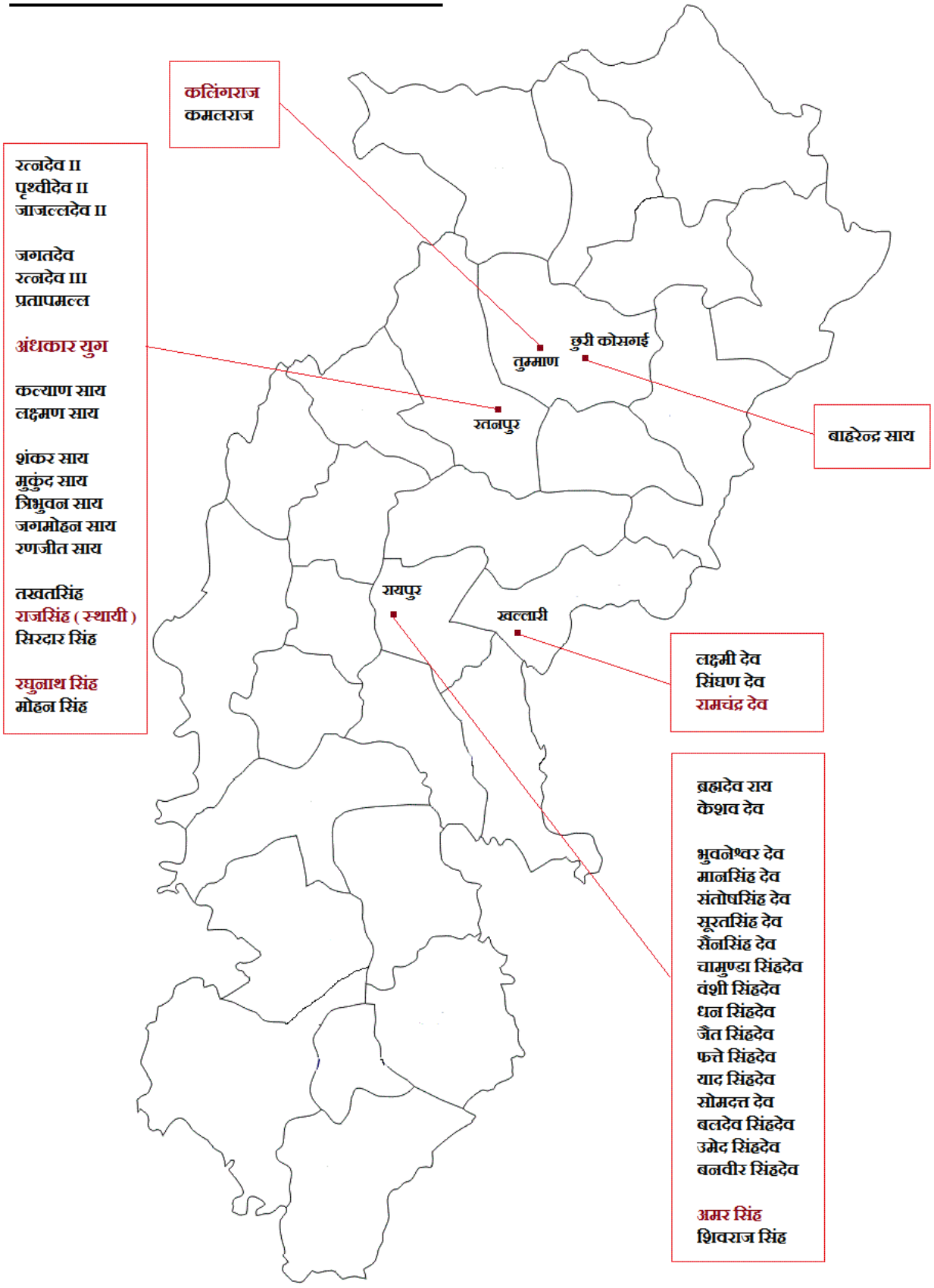

कल्चुरी वंश (550 ई. – 1741 ई.)

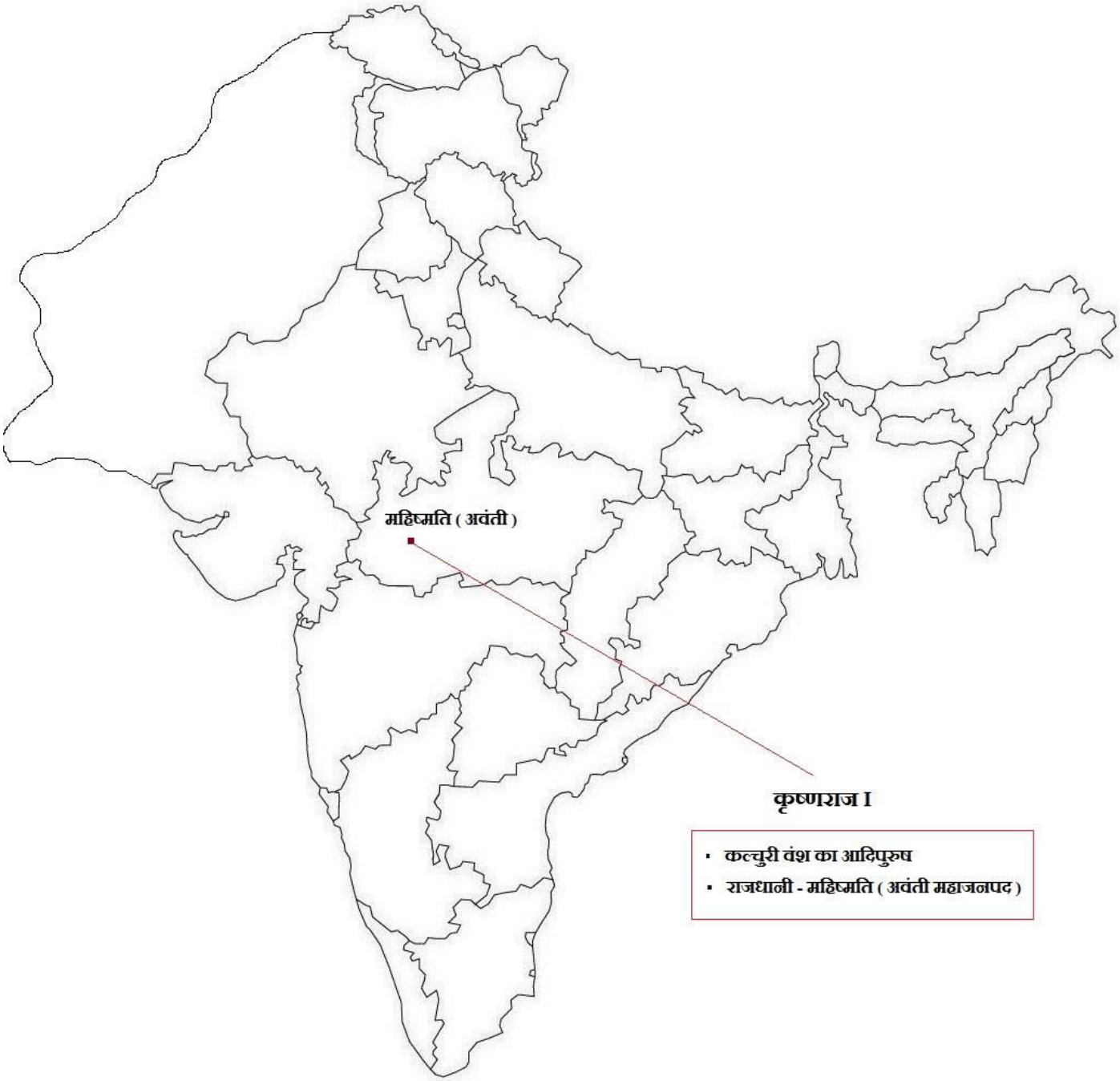

त्रिपुरी कल्चुरी के प्रमुख शासक (850 ई. – 1000 ई.)

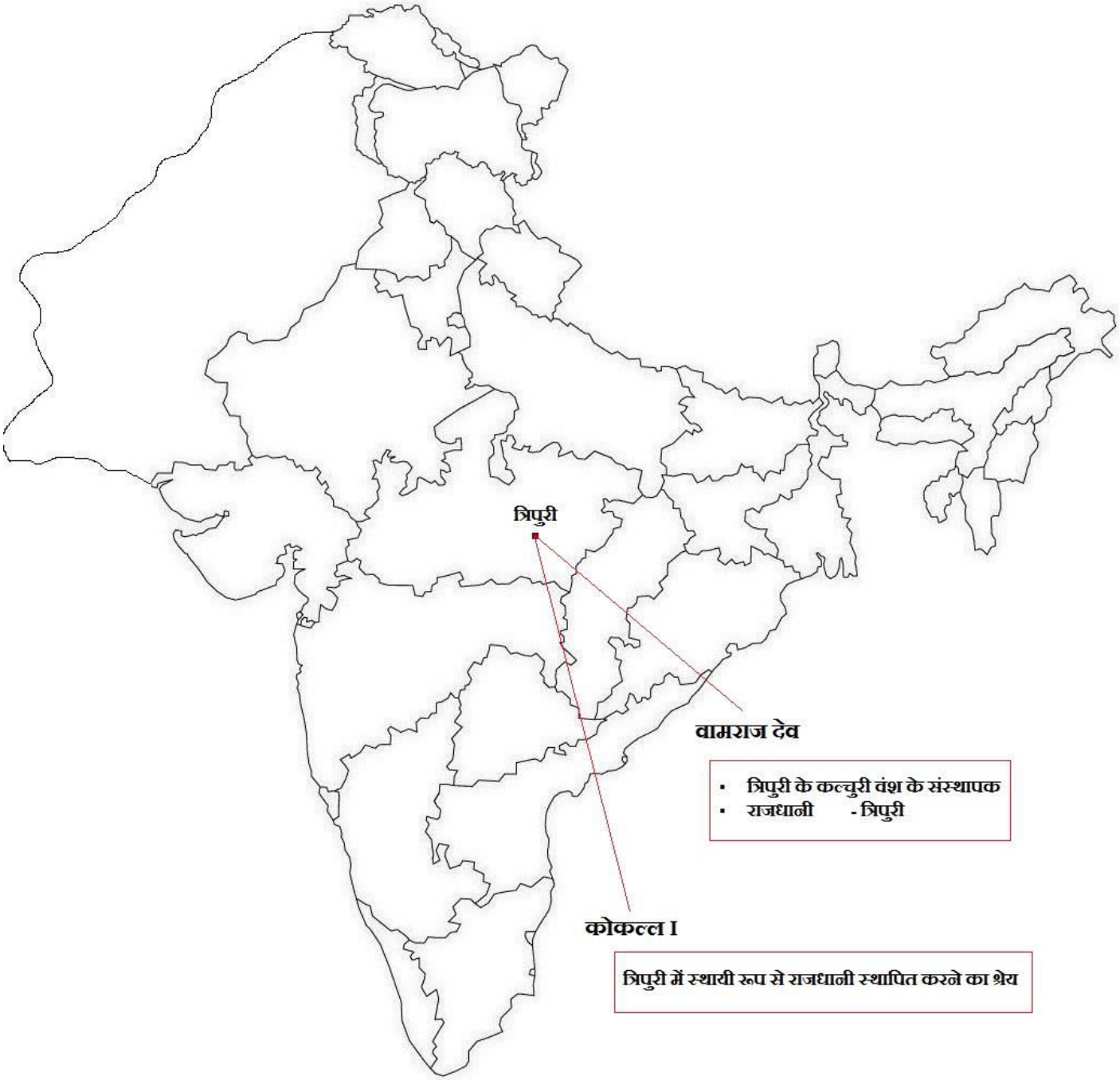

त्रिपुरी कल्चुरी के प्रमुख शासक (850 ई. – 1000 ई.)

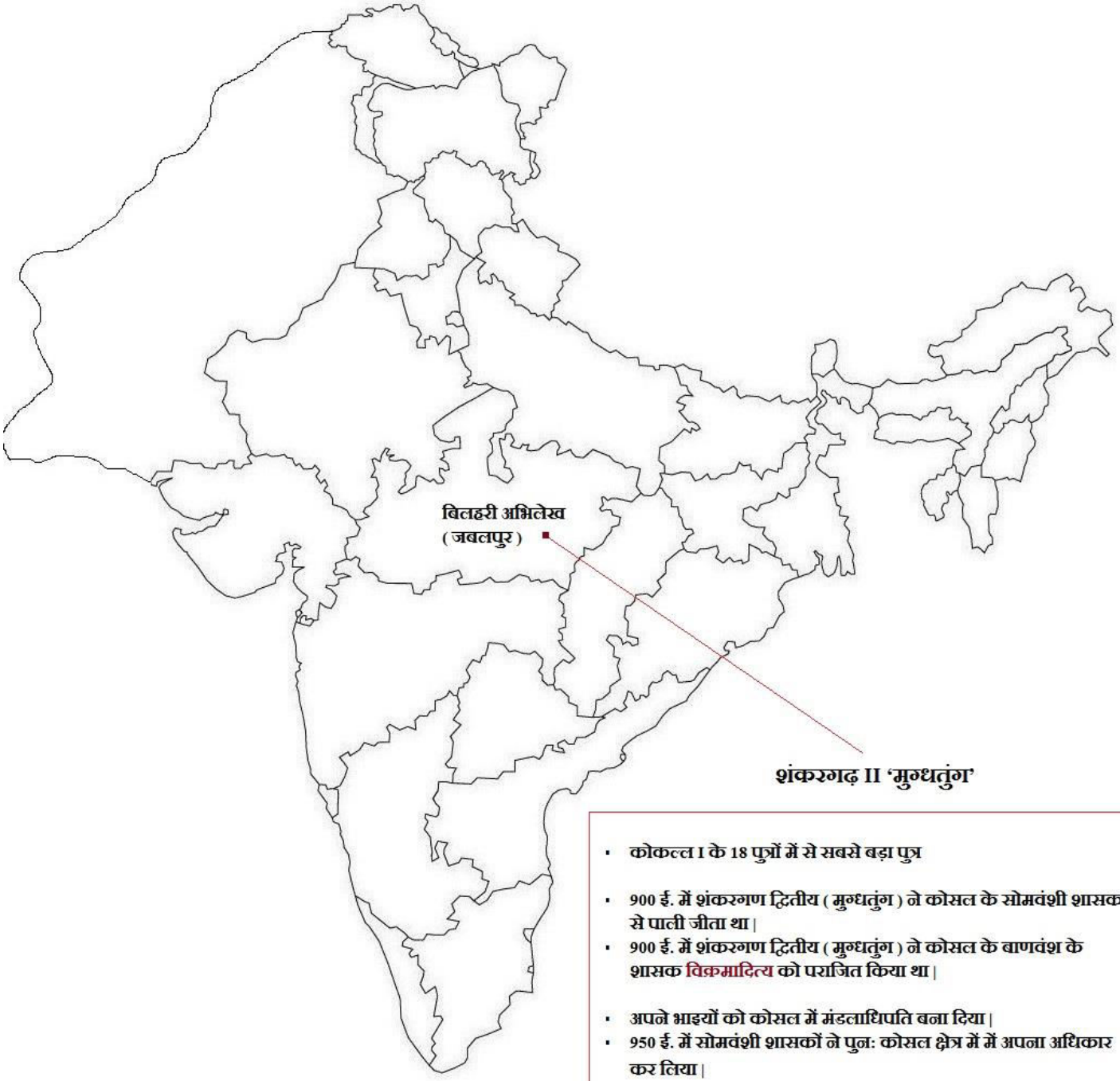

शंकरगढ़ II 'मुग्धतुंग'

- कोकल्ल I के 18 पुत्रों में से सबसे बड़ा पुत्र
- 900 ई. में शंकरगण द्वितीय (मुग्धतुंग) ने कोसल के सोमवंशी शासक से पाली जीता था |
- 900 ई. में शंकरगण द्वितीय (मुग्धतुंग) ने कोसल के बाणवंश के शासक विक्रमादित्य को पराजित किया था |
- अपने भाइयों को कोसल में मंडलाधिपति बना दिया |
- 950 ई. में सोमवंशी शासकों ने पुनः कोसल क्षेत्र में में अपना अधिकार कर लिया |

त्रिपुरी कल्चुरी के प्रमुख शासक (850 ई. – 1000 ई.)

छत्तीसगढ़ का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

- छत्तीसगढ़ के प्राचीन इतिहास में **हैहय कल्चुरी राजवंश** का स्थान महत्वपूर्ण है |
- त्रिपुरी के कल्चुरी राजवंश की एक नवीन **लहुरी शाखा** ने छत्तीसगढ़ में अपना साम्राज्य स्थापित किया |
- छत्तीसगढ़ में **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक **कलिंग राज** है |
- **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर **तुम्माण** को राजधानी के रूप में स्थापित कर **कल्चुरी राजवंश की लहुरी शाखा** का प्रारंभ किया |

- शासन अवधि - **1000 ई. – 1741 ई.**
- वंश - **हैहय वंश**
- शाखा - **लहुरी**
- उल्लेख - पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध का वर्णन
- वंश की स्थापना - **सोमवंशी शासकों** को **कलिंगराज** द्वारा पराजित करना
- पतन - **मराठा भास्कर पंत** द्वारा रतनपुर पर आक्रमण तथा रघुनाथ सिंह द्वारा अधीनता स्वीकारना
- संस्थापक - **कलिंगराज** **(1000 – 1020)**
- वास्तविक संस्थापक - **कलिंगराज** **(1000 – 1020)**
- अंतिम स्वतंत्र शासक - **रघुनाथ सिंह** **(1732 – 1741)**
- मराठा अधीन प्रथम शासक - **रघुनाथ सिंह** **(1741 – 1745)**
- अंतिम शासक - **रघुनाथ सिंह**
- मराठा अधीन अंतिम शासक - **मोहन सिंह** **(1745 – 1758)**
- प्रथम राजधानी - **तुम्माण** **(कलिंगराज)**
- द्वितीय राजधानी - **रतनपुर** **(रत्नदेव प्रथम)**
- तृतीय राजधानी - **छुरी कोसगई** **(बाहरेन्द्र साय)**
- स्थायी राजधानी - **रतनपुर** **(राजसिंह)**
- धर्म - **शैव धर्म**
- उपासक - **शक्ति / शाक्त**
- मंदिर - **शिव या माता**
- मंदिर द्वार पर स्थित प्रतिमा - **गजलक्ष्मी / शिवलिंग**
- मंदिर द्वार पर उत्कीर्ण - **ॐ नमः शिवाय**
- ताम्रपत्र का आरंभ - **ॐ नमः शिवाय**
- आराध्य देवता - **बमकेश्वर महादेव**
- आराध्य देवी - **महिषासुर मर्दिनी**
- कुलदेवी - **गजलक्ष्मी**
- राजकीय भाषा - **संस्कृत**
- विशेष - **छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला वंश (741 वर्ष)**
- स्थानीय प्रशासन हेतु - **पंचकुल संस्था**

कलिंगराज (1000 – 1020)

- **उल्लेख**
  - पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में **सोमवंशी शासकों** से विजय पराक्रम का वर्णन
  - **अलबरूनी** द्वारा रचित **तहकीक – ए – हिन्द** में वर्णन
- पिता - लक्ष्मणराज
- समकालीन - राजाराम प्रथम (चोल वंश)
- उपाधि - परममहेश्वर
- राजधानी - तुम्माण
- स्थापत्य - महिषाशुर मर्दिनी मंदिर / महामाया मंदिर (चैतुरगढ़)
- **विशेष**
  - लक्ष्मणराज का पुत्र
  - छत्तीसगढ़ में **कल्चुरी राजवंश** के **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक
  - कलिंगराज ने 1000 ई. में **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर दक्षिण कोसल में **कल्चुरी राजवंश** की नींव रखी |

कमलराज (1020 – 1045)

- समकालीन - गांगेयदेव (त्रिपुरी कल्चुरी वंश)
- सेनापति - साहिल्ल
- **विशेष**
  - सर्वाधिक महत्वाकांक्षी शासक
  - गांगेयदेव (त्रिपुरी कल्चुरी वंश) को **उत्कल अभियान (उड़ीसा अभियान)** में सैन्य सहायता प्रदान किया |
  - **उत्कल अभियान से वापस लौटते समय कमलराज ने** साहिल्ल नामक व्यक्ति को अपने साथ लाया, जिसने राज्य विस्तार किया |

रत्नदेव I / रत्नराज (1045 – 1065)

- पत्नी - नोनल्ला (कोमोमण्डल के शासक **वजूवर्मा** की पुत्री)
- उपाधि - रत्नराज प्रथम
- नगर स्थापत्य - रतनपुर (1050)
- राजधानी - रतनपुर(1050)
- संज्ञा - रत्नदेव प्रथम के शासनकाल में रतनपुर के वैभव को देखकर **"कुबेरपुर"** तथा **"चतुर्युगी पूरी"** की संज्ञा प्रदान की गयी |

प्रमुख स्थापत्य

क्र.	स्थापत्य	स्थान	जिला
1	तालाबों का जाल	रतनपुर	बिलासपुर
2	गज किला (हाथी किला)	रतनपुर	बिलासपुर
3	महामाया मंदिर	रतनपुर	बिलासपुर
4	नानादेव कुल भूषित मंदिर (नानवर्ण विचित्र रत्नखचिम मंदिर)	रतनपुर	बिलासपुर
5	बमकेश्वर महादेव मंदिर	तुम्माण	कोरबा
6	महिषाशुर मर्दिनी मंदिर	लाफागढ़	कोरबा

पृथ्वीदेव I (1065 – 1095)

- उपाधि - सकलकोसलाधिपति , प्रचण्डकोसलाधिपति
- **विशेष**
  - 21000 ग्रामों का अधिपति
  - सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में अपने साम्राज्य का विस्तार करने वाला प्रथम शासक

प्रमुख स्थापत्य

क्र.	स्थापत्य	स्थान	जिला
1	पृथ्वी देवेश्वर महादेव मंदिर	तुम्माण	कोरबा
2	रतनपुर का विशाल तालाब	रतनपुर	बिलासपुर
3	चतुंष्किका (चार खम्भों वाला मण्डप) बमकेश्वर महादेव मंदिर के भीतर	तुम्माण	कोरबा

प्रमुख ताम्रपत्र

क्र.	ताम्रपत्र	स्थान	जिला	विवरण
1	आमोदा ताम्रपत्र	चाम्पा (हसदेव नदी)	जांजगीर – चाम्पा	▪ कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध में विजय का वर्णन ▪ उपाधि - सकलकोसलाधिपति , प्रचण्डकोसलाधिपति ▪ 21000 ग्रामों का स्वामी ▪ **पृथ्वी देवेश्वर महादेव मंदिर** का निर्माण
2	रायपुर ताम्रपत्र	रायपुर	रायपुर	कल्चुरी संवत 821 अर्थात् 1095 ई.
3	लाफागढ़ ताम्रपत्र	लाफागढ़	कोरबा	

जाजल्लदेव I (1095 – 1120)

- पत्नी - **लाछल्ला**
- सेनापति - जगपालदेव
- उपाधि - गजशार्दूल (गजबेटकर) , श्रीमज्जाजल्यदेव
- नगर स्थापत्य - जाजल्लदेवपुर (जांजगीर)
- जीर्णोद्धार - पाली का शिव मंदिर
- शिलालेख - रतनपुर शिलालेख
- सिक्का - स्वर्ण सिक्का (स्वर्ण सिक्का पर गजशार्दूल व श्रीमज्जाजल्यदेव चित्रित करवाया)
- **विशेष**
  - **कल्चुरी वंश का सबसे प्रतापी शासक**
  - मकरध्वज जोगी के साथ तीर्थटन को गये व वापस नहीं आये |

प्रमुख स्थापत्य

क्र.	स्थापत्य (मंदिर)	स्थान	जिला
1	नकटा मंदिर (विशाल विष्णुमंदिर)	जांजगीर	जांजगीर – चाम्पा
2	जांजगीर का विशाल तालाब	जांजगीर	जांजगीर – चाम्पा

रतनपुर शिलालेख

क्र.	शासक	राजधानी	विवरण
1	गोपालदेव (फणिनाग वंश)	कवर्धा	जाजल्लदेव के अधीन शासन किया |
2	भुजबल	स्वर्णपुर	**स्वर्णपुर** के शासक **भुजबल** को पराजित किया |
3	सोमेश्वर I (छिंदक नागवंश)	बारसूर	▪ छिंदक नागवंशी शासक सोमेश्वर I को पराजित किया तथा सपरिवार कैद किया | ▪ माता **गुंडमहादेवी** के अनुग्रह पर कैद से मुक्त किया |

रत्नदेव II (1120 – 1135)

- सेनापति - वल्लभराज
- उपाधि - त्रिकलिंगाधिपति
- ताम्रपत्र - अकलतरा , खरौद , पारागांव , शिवरीनारायण , सरखोर
- **विशेष**
  - 36 विधाओं का ज्ञाता
  - युद्ध में रूचि रखने वाला

रत्नदेव II के विजय अभियान

क्र.	युद्ध	शासक	परिणाम
1	शिवरीनारायण का युद्ध	रत्नदेव II Vs **अनंतवर्मन चोडगंग** (गंग वंश)	उड़ीसा के गंग वंश के शासक अनंतवर्मन चोडगंग को पराजित किया |
2	त्रिपुरी कल्चुरी से युद्ध	रत्नदेव II Vs **गयाकर्ण** (त्रिपुरी कल्चुरी)	त्रिपुरी अधिसत्ता को अस्वीकार कर **स्वतंत्र शासन** की शुरुवात किया |

पृथ्वीदेव II (1135 – 1165)

- भाई - अकालदेव
- नगर स्थापत्य - अकलतरा (अकालदेव)
- सेनापति - जगतपाल (जगपाल) , ब्रह्मदेव
- जीर्णोद्धार - राजिम का राजीवलोचन मंदिर (सामंत जगतपाल)
- शिलालेख - कोटागढ़ , अकलतरा , राजिम , बिलाईगढ़ , कोनी , आमोदा , रतनपुर , पारागांव , घोटिया
- अंतिम शिलालेख - रतनपुर शिलालेख (1163)
- विशेष - **सर्वाधिक शिलालेख**
- युद्ध - सामंत **ब्रह्मदेव** के नेतृत्व में **जटेश्वर (कलिंग शासक)** को पराजित किया \|

जाजल्लदेव II (1065 – 1168)

- विशेष - सबसे अल्पकालीन शासनकाल (3 वर्ष)
- शिलालेख - मल्हार शिलालेख

शिवरीनारायण का युद्ध (मल्हार शिलालेख)

- जाजल्लदेव II Vs **जयसिंह** (त्रिपुरी कल्चुरी शासक)
- विजेता - जाजल्लदेव II
- **जयसिंह** ने जाजल्लदेव II के साम्राज्य पर आक्रमण किया तथा पराजित हुआ \|

जगतदेव (1168 – 1178)

- जाजल्लदेव II का छोटा भाई
- पत्नी - सोमल्ला देवी (वर्णन - रत्नदेव III के खरौद शिलालेख)
- पुत्र - रत्नदेव III
- युद्ध - गंग राजाओं का दमन
- शिलालेख - खरौद शिलालेख

रत्नदेव III (1178 – 1198)

- प्रधानमंत्री - गंगाधरराव (उड़ीसा का ब्राह्मण)
- स्थापत्य - एकवीरा माता मंदिर (रतनपुर)
- जीर्णोद्धार - खरौद का लखनेश्वर महादेव मंदिर (सामंत गंगाधरराव)
- शिलालेख - खरौद शिलालेख

प्रमुख स्थापत्य

क्र.	स्थापत्य (मंदिर)	स्थान	जिला
1	लखनीदेवी मंदिर (1165)	रतनपुर	बिलासपुर
2	एकवीरा माता मंदिर		
3	पूरारति शिव मंदिर		
4	मठ मंदिर		

खरौद शिलालेख

- इसके शासनकाल में **अराजक स्थिति** निर्मित हो गयी |
- गंगाधरराव राज्य की स्थिति को नियंत्रित किया |

प्रतापमल्ल (1198 – 1222)

- विशेष - कम उम्र सबसे प्रतापी शासक
- सेनापति - जसराज , यशोराज
- सिक्का - तांबे के चक्राकार व षट्कोणाकार सिक्के
  - इन सिक्कों में **सिंह व कटार** की आकृति चित्रित करवाया |

कल्चुरी शासन का अंधकार युग

- प्रतापमल्ल के पश्चात् लगभग 300 वर्षों का कल्चुरी इतिहास से संबंधित प्रमाणिक जानकारी प्राप्त नहीं होता है |
- अत: प्रतापमल्ल के उत्तराधिकारियों का क्रमबद्ध इतिहास लिखित रूप में नहीं मिलता है |

बाहरेन्द्र साय (1480 – 1525)

- राजधानी - छुरी कोसगई
- शिलालेख - रतनपुर , छुरी कोसगई
- **विशेष**
  - कोसगई में **कोषागार** का निर्माण करवाया |
  - बाहरेन्द्र साय पर मांडू का महमूद खिलजी (पठान शासक) ने आक्रमण किया |
  - बाहरेन्द्र साय ने पठानों को सोन नदी तक खदेड़ दिया |

प्रमुख स्थापत्य

क्र.	स्थापत्य (मंदिर)	स्थान	जिला
1	चैतुरगढ़ का किला	लाफागढ़	कोरबा
2	कोसगई माता मंदिर	छुरी कोसगई	कोरबा

कल्याण साय (1544 – 1581)

- समकालीन - अकबर (मुग़ल सम्राट) , जहाँगीर (मुग़ल सम्राट)
- स्थापत्य - रतनपुर स्थित **गज किले** के भीतर **'श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर'**
- **विशेष**
  - मुग़ल सम्राट **अकबर के दरबार** में 8 वर्षो तक नजरबंद रहे |
  - छत्तीसगढ़ में राजस्व की **जमाबंदी प्रणाली के जन्मदाता** | (कल्याण साय की राजस्व पुस्तिका)
  - **जमाबंदी व्यवस्था** के आधार पर **मिस्टर चिस्म** ने छत्तीसगढ़ को **36 गढ़ों** में विभाजित किया |

बाबू रेवाराम की पाण्डुलिपि

- कल्याण साय तथा मंडला के शासक के विवाद होने के कारण तत्कालीन मुग़ल सम्राट अकबर ने कल्याण साय को दिल्ली बुलवाया |
- मुग़ल सम्राट **अकबर** ने कल्याण साय को 8 वर्षो के लिए नजरबंद करवा दिया |
- राजा का पूर्ण अधिकार प्राप्त कर रतनपुर आया |

तुजुक-ए-जहाँगीर व गोपल्ला गीत

- मुग़ल सम्राट **जहाँगीर** ने कल्याण साय को 8 वर्षो के लिए नजरबंद करवा दिया | **[CGPSC MAINS 2011]**

मिस्टर चिस्म (1868)

- बिलासपुर के **प्रथम अंग्रेज बंदोबस्त अधिकारी**
- कल्याण साय की राजस्व पुस्तिका में वर्णित **जमाबंदी व्यवस्था** के आधार पर **मिस्टर चिस्म** ने 1868 में छत्तीसगढ़ को **36 गढ़ों** में विभाजित किया |

लक्ष्मण साय (1581 – 1596)

- बहीखाता व्यवस्था के जनक
- बजट प्रणाली (लेखा – जोखा) के जनक
- तालुकदारी - लोरमी व तरेंगा तालुकदारी प्रथा की शुरुवात की |

तखतसिंह (1685 – 1689)

- समकालीन - औरंगजेब (मुग़ल सम्राट)
- नगर स्थापत्य - तखतपुर

राजसिंह (1689 – 1712)

- समकालीन - औरंगजेब (मुग़ल सम्राट)
- दरबारी कवि - गोपाल मिश्र (1689 में रचित **खूब तमाशा** में औरंगजेब की आलोचना)
- नगर स्थापत्य - राजपुर (जुनाशहर) , रतनपुर के समीप
- **विशेष**
  - राजसिंह नि:संतान होने के कारण उन्होंने **मोहन सिंह** को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया |
  - राजसिंह के मृत्यु के समय मोहनसिंह शिकार पर गये हुए थे |
  - अत: राजसिंह ने अपनी सत्ता **चाचा सिरदार सिंह** को सौंपा |
- **खूब तमाशा (1689)**
  - औरंगजेब की आलोचना
  - राजसिंह ने **नियोग** के माध्यम से पुत्ररत्न की प्राप्ति की |

प्रमुख स्थापत्य

क्र.	स्थापत्य (मंदिर)	स्थान	जिला
1	हवामहल	रतनपुर	बिलासपुर
2	बादलमहल	रतनपुर	बिलासपुर

सिरदार सिंह (1712 – 1732)

- राजसिंह का चाचा
- सिरदार सिंह नि:संतान होने के कारण उन्होंने **रघुनाथ सिंह** को अपना उत्तराधिकारी बनाया |

रघुनाथ सिंह (1732 – 1741)

- **भास्कर पंत** - 1741 में मराठा शासक रघुजी प्रथम (रघुजी भोंसले प्रथम) का सेनापति **भास्कर पंत** उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया |
- **कल्याण गिरि गुंसाई** - **भास्कर पंत** ने मराठा प्रतिनिधि के रूप में रतनपुर में **कल्याण गिरि गुंसाई** की नियुक्ति की |
- **मीरहबीब** - छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु **मीरहबीब** ने मराठों को आमंत्रण भेजा |
- रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |
- अंतिम स्वतंत्र कल्चुरी शासक - **रघुनाथ सिंह** **(1732 – 1741)**
- मराठा अधीन प्रथम शासक - **रघुनाथ सिंह** **(1741 – 1745)**
- अंतिम शासक - **रघुनाथ सिंह**

मोहन सिंह (1745 – 1758)

- 1758 में मराठा शासक **बिम्बजी भोंसले** ने छत्तीसगढ़ में प्रत्यक्ष शासन की शुरुवात किया |
- मराठा अधीन अंतिम शासक - **मोहन सिंह** **(1745 – 1758)**
- प्रथम मराठा शासक - **बिम्बजी भोंसले** **(1758 – 1787)**

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

कलिंगराज (1000 – 1020)

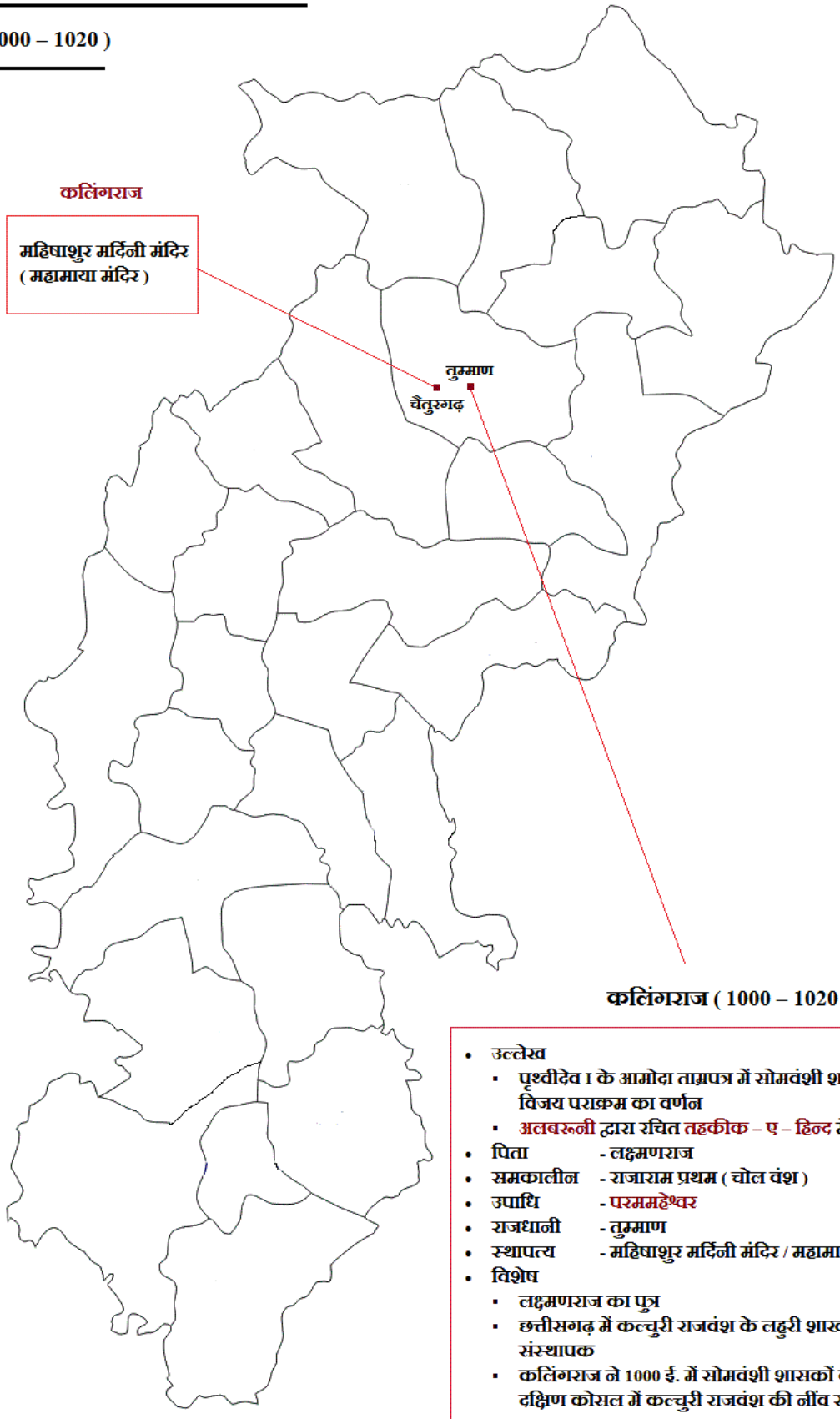

कलिंगराज (1000 – 1020)

- उल्लेख
  - पृथ्वीदेव I के आमोदा ताम्रपत्र में सोमवंशी शासकों से विजय पराक्रम का वर्णन
  - अलबरूनी द्वारा रचित तहकीक – ए – हिन्द में वर्णन
- पिता - लक्ष्मणराज
- समकालीन - राजाराम प्रथम (चोल वंश)
- उपाधि - परममहेश्वर
- राजधानी - तुम्माण
- स्थापत्य - महिषाशुर मर्दिनी मंदिर / महामाया मंदिर (चैतुरगढ़)
- विशेष
  - लक्ष्मणराज का पुत्र
  - छत्तीसगढ़ में कल्चुरी राजवंश के लहुरी शाखा के वास्तविक संस्थापक
  - कलिंगराज ने 1000 ई. में सोमवंशी शासकों को पराजित कर दक्षिण कोसल में कल्चुरी राजवंश की नींव रखी |

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

कमलराज (1020 – 1045)

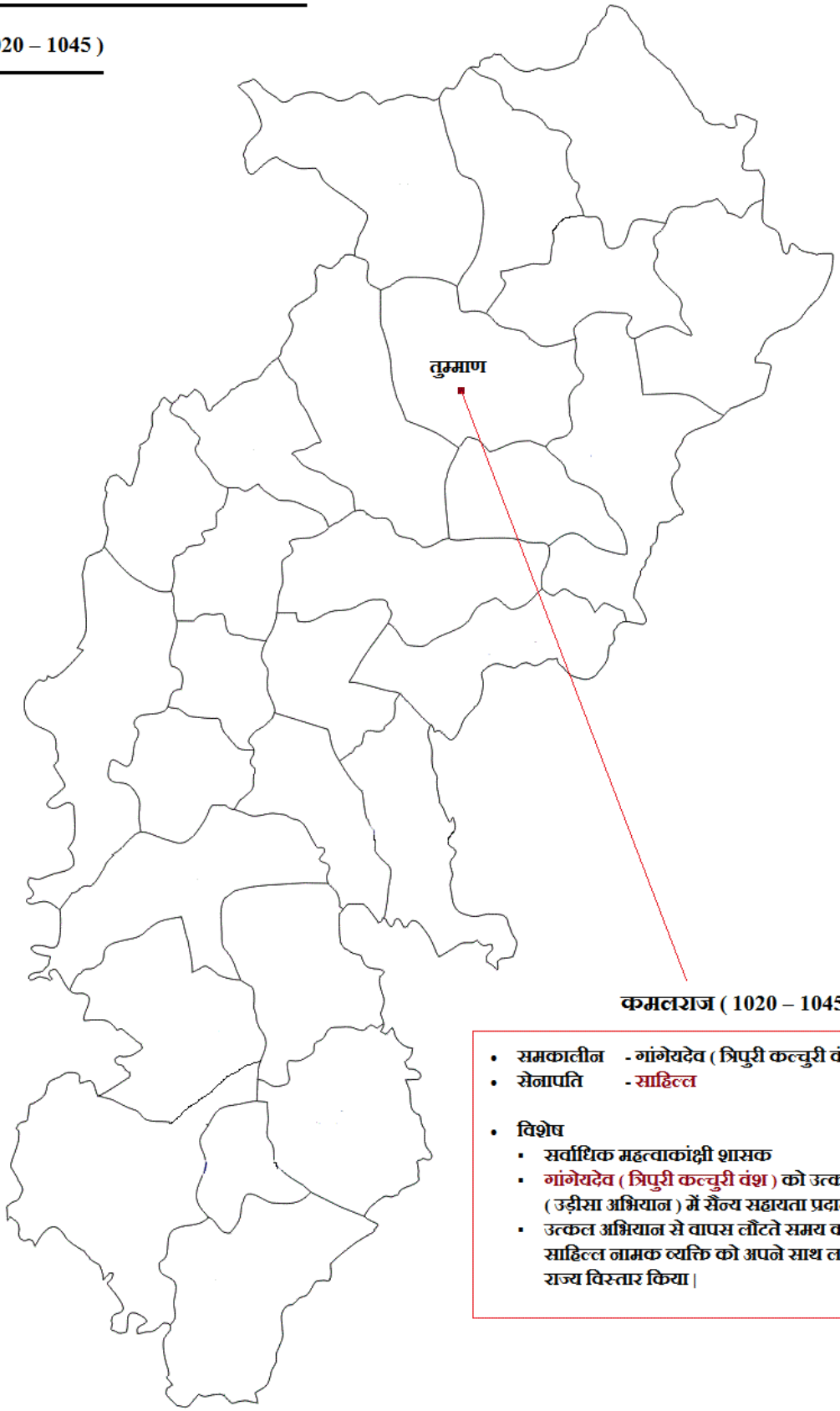

कमलराज (1020 – 1045)

- समकालीन - गांगेयदेव (त्रिपुरी कल्चुरी वंश)
- सेनापति - साहिल्ल

- विशेष
  - सर्वाधिक महत्वाकांक्षी शासक
  - गांगेयदेव (त्रिपुरी कल्चुरी वंश) को उत्कल अभियान (उड़ीसा अभियान) में सैन्य सहायता प्रदान किया |
  - उत्कल अभियान से वापस लौटते समय कमलराज ने साहिल्ल नामक व्यक्ति को अपने साथ लाया, जिसने राज्य विस्तार किया |

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

रत्नदेव I / रत्नराज (1045 – 1065)

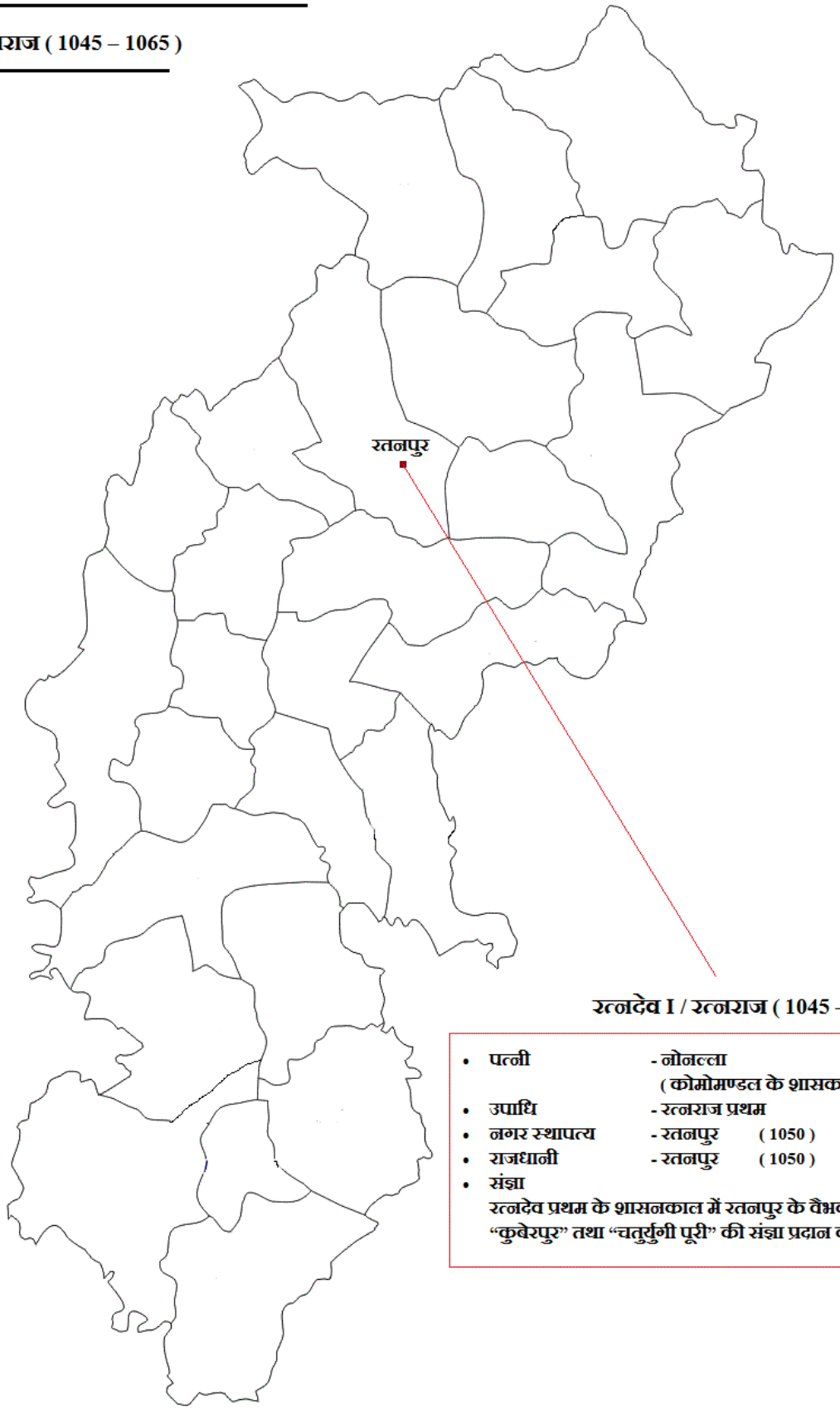

रत्नदेव I / रत्नराज (1045 – 1065)

- पत्नी - नोनल्ला
  (कोमोमण्डल के शासक वज्रवर्मा की पुत्री)
- उपाधि - रत्नराज प्रथम
- नगर स्थापत्य - रतनपुर (1050)
- राजधानी - रतनपुर (1050)
- संज्ञा
  रत्नदेव प्रथम के शासनकाल में रतनपुर के वैभव को देखकर "कुबेरपुर" तथा "चतुर्युगी पूरी" की संज्ञा प्रदान की गयी |

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

रत्नदेव I के प्रमुख स्थापत्य

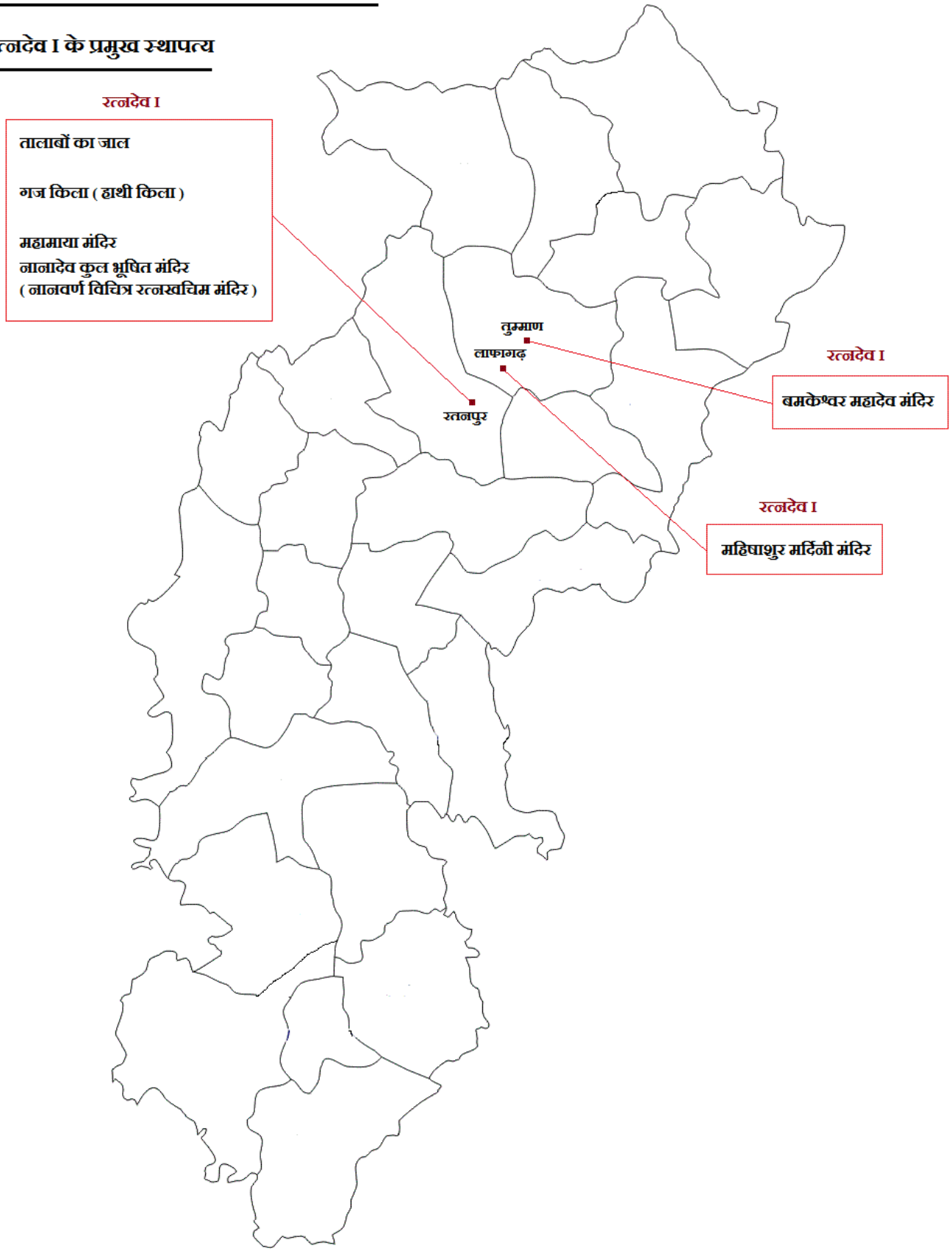

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

पृथ्वीदेव I (1065 – 1095)

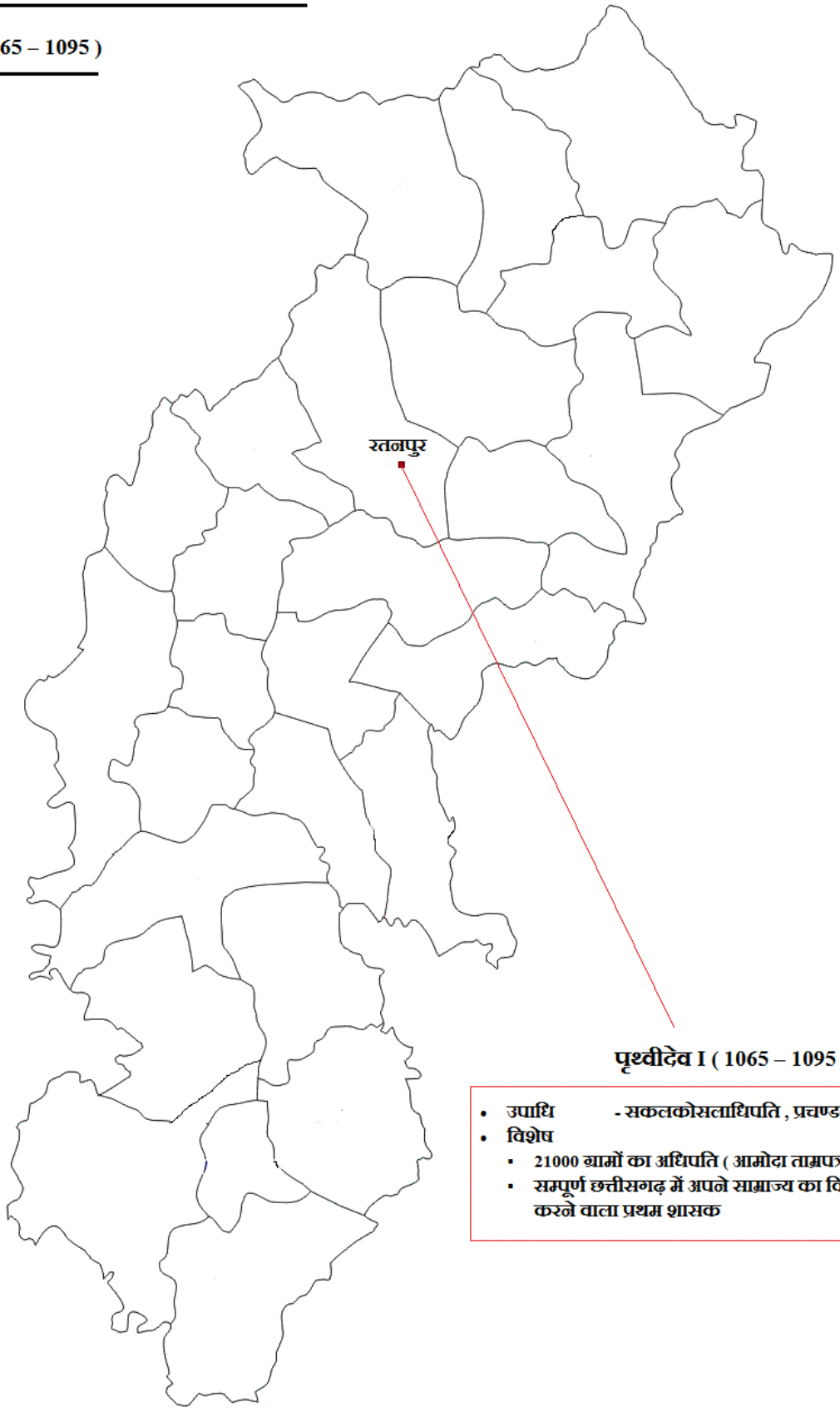

पृथ्वीदेव I (1065 – 1095)

- उपाधि - सकलकोसलाधिपति , प्रचण्डकोसलाधिपति
- विशेष
  - 21000 ग्रामों का अधिपति (आमोदा ताम्रपत्र)
  - सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में अपने साम्राज्य का विस्तार करने वाला प्रथम शासक

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

पृथ्वीदेव I के प्रमुख स्थापत्य

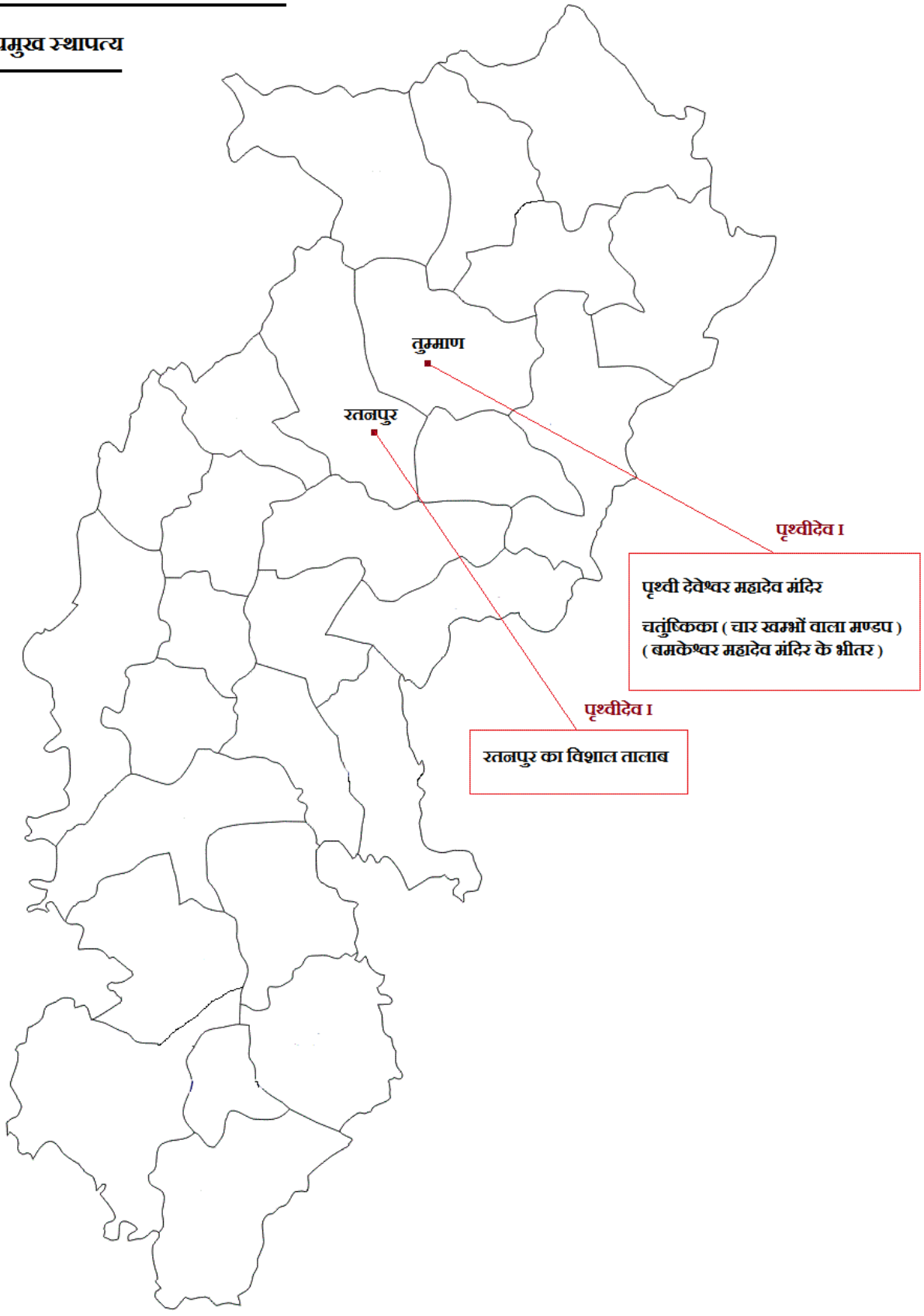

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

पृथ्वीदेव I के प्रमुख ताम्रपत्र

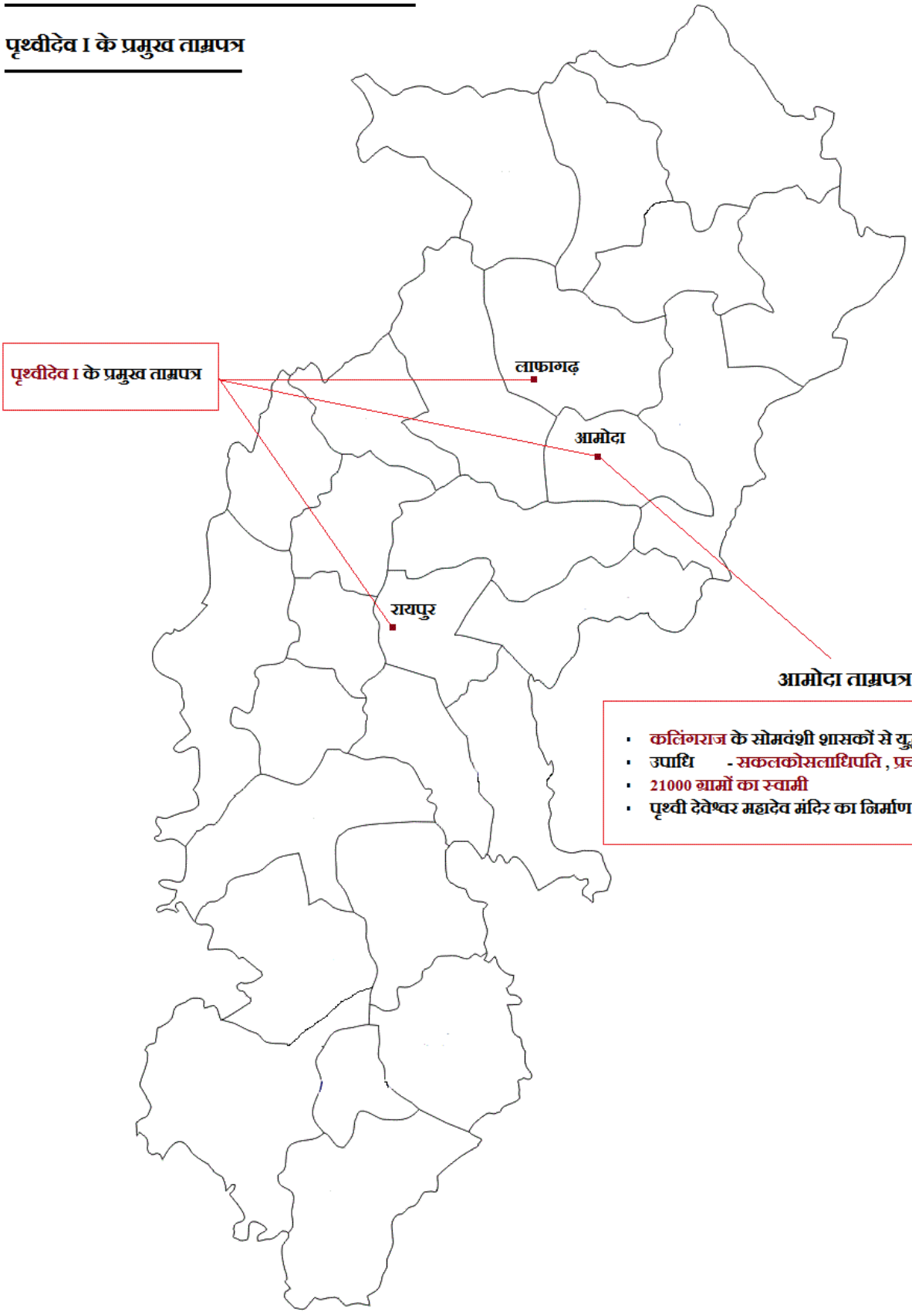

आमोदा ताम्रपत्र

- कलिंगराज के सोमवंशी शासकों से युद्ध में विजय का वर्णन
- उपाधि - सकलकोसलाधिपति , प्रचण्डकोसलाधिपति
- 21000 ग्रामों का स्वामी
- पृथ्वी देवेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

जाजल्लदेव I (1095 – 1120)

स्वर्ण सिक्का

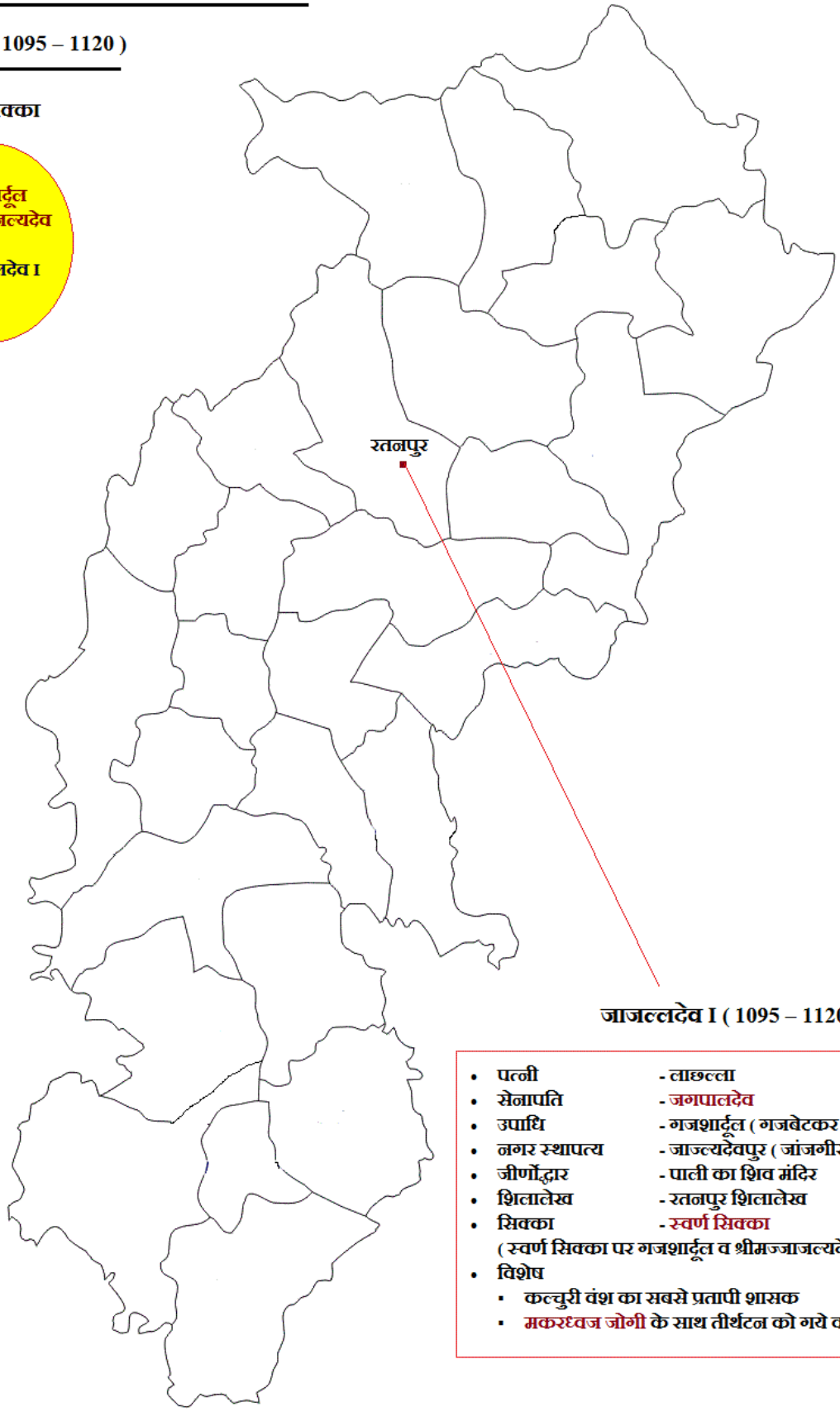

जाजल्लदेव I (1095 – 1120)

- पत्नी - लाछल्ला
- सेनापति - जगपालदेव
- उपाधि - गजशार्दूल (गजबेटकर) , श्रीमज्जाजल्यदेव
- नगर स्थापत्य - जाज्ल्यदेवपुर (जांजगीर)
- जीर्णोद्धार - पाली का शिव मंदिर
- शिलालेख - रतनपुर शिलालेख
- सिक्का - स्वर्ण सिक्का
  (स्वर्ण सिक्का पर गजशार्दूल व श्रीमज्जाजल्यदेव चित्रित करवाया)
- विशेष
  - कल्चुरी वंश का सबसे प्रतापी शासक
  - मकरध्वज जोगी के साथ तीर्थटन को गये व वापस नहीं आये |

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

जाजल्लदेव I के प्रमुख स्थापत्य

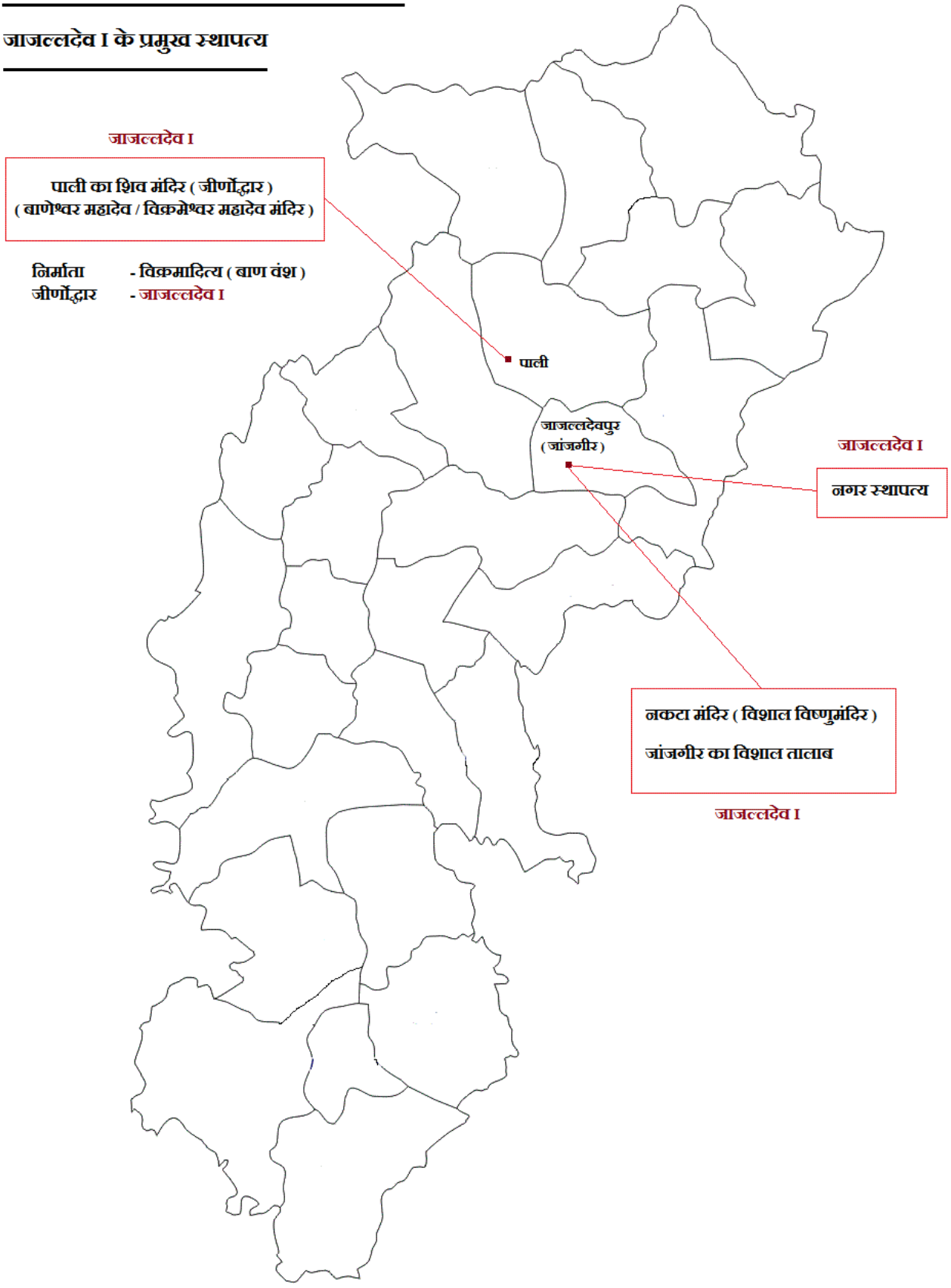

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

जाजल्लदेव I के विजय अभियान

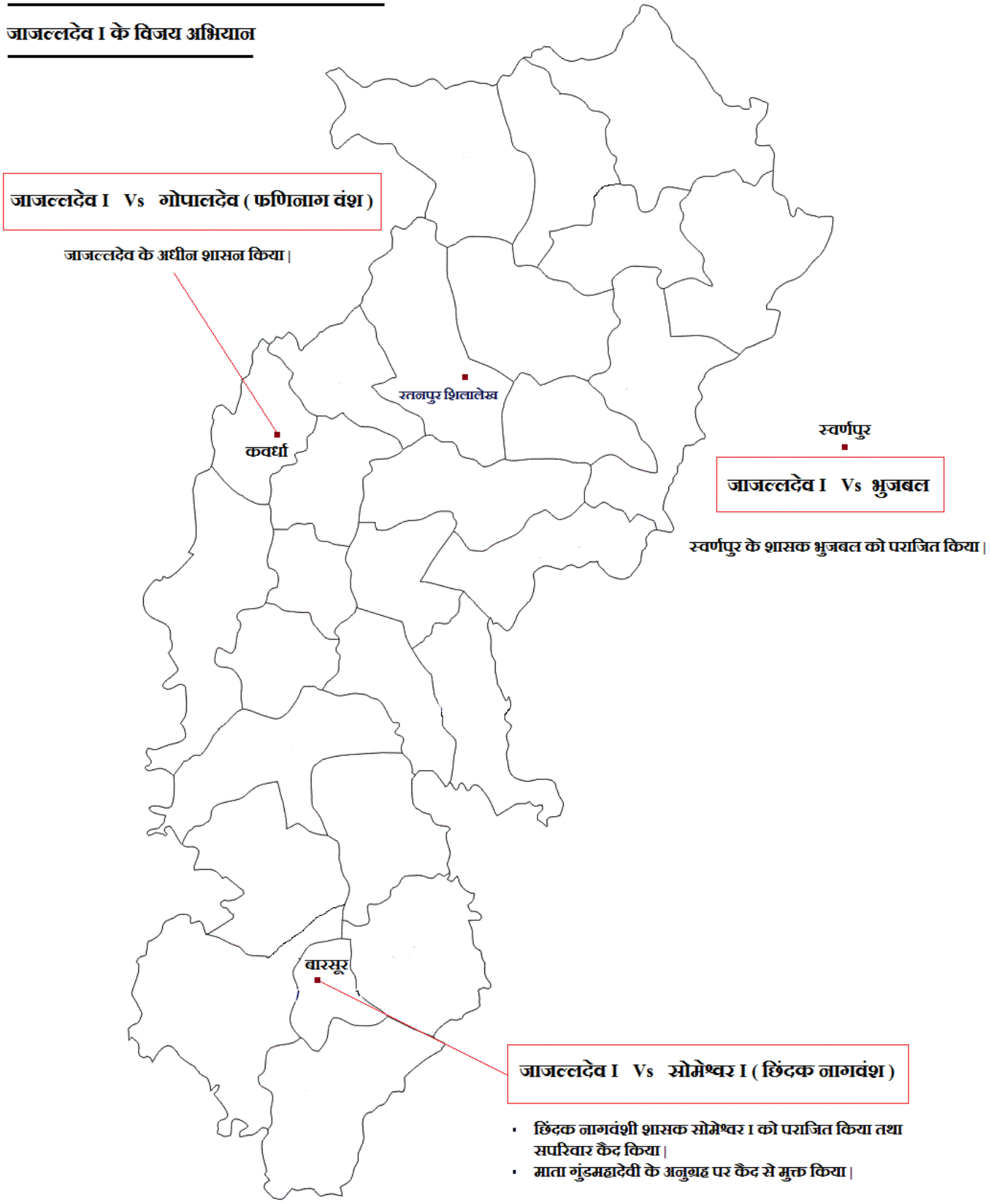

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

रत्नदेव II (1120 – 1135)

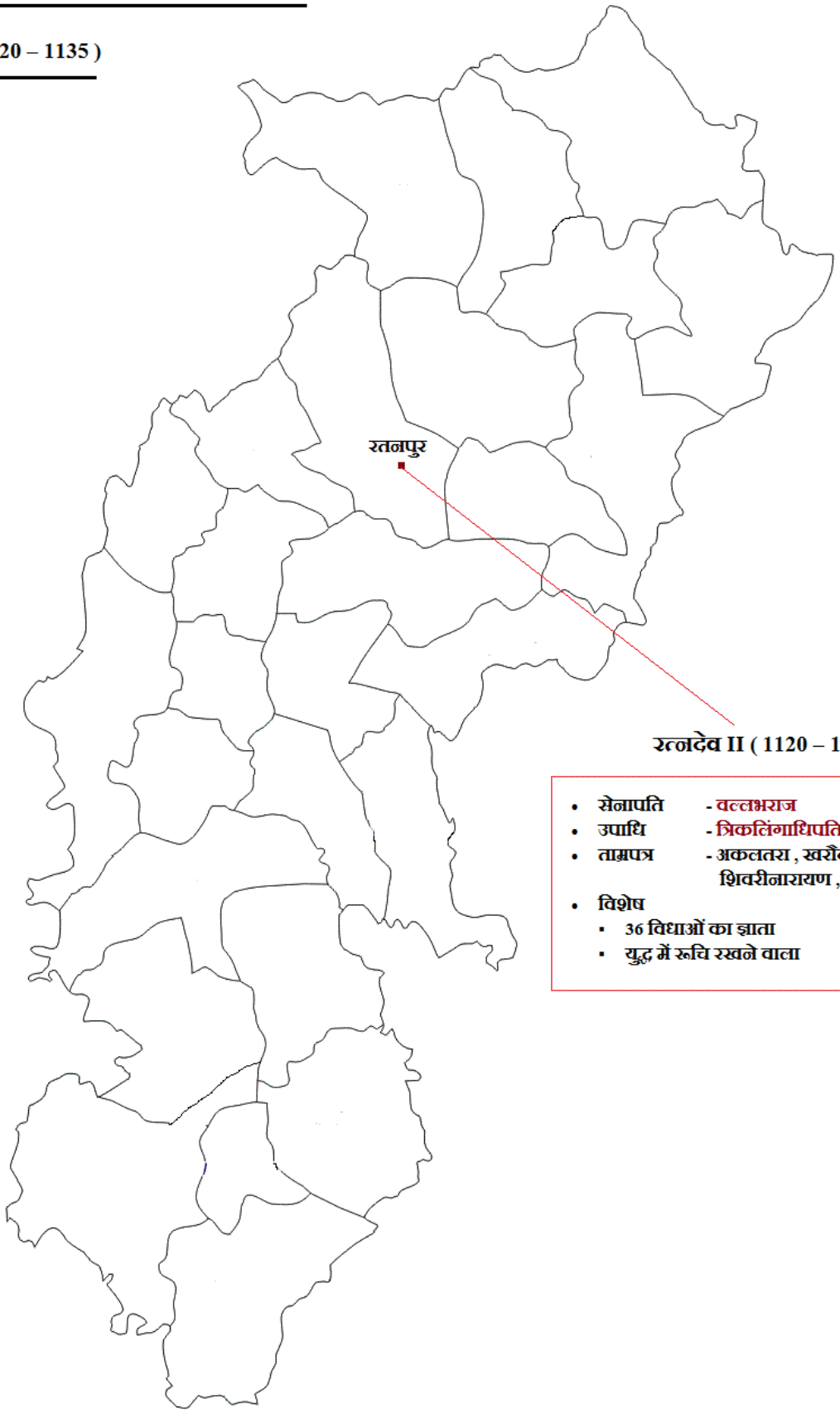

रत्नदेव II (1120 – 1135)

- सेनापति - वल्लभराज
- उपाधि - त्रिकलिंगाधिपति
- ताम्रपत्र - अकलतरा , खरौद , पारागांव , शिवरीनारायण , सरखोर
- विशेष
  - 36 विधाओं का ज्ञाता
  - युद्ध में रूचि रखने वाला

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

रत्नदेव II के विजय अभियान

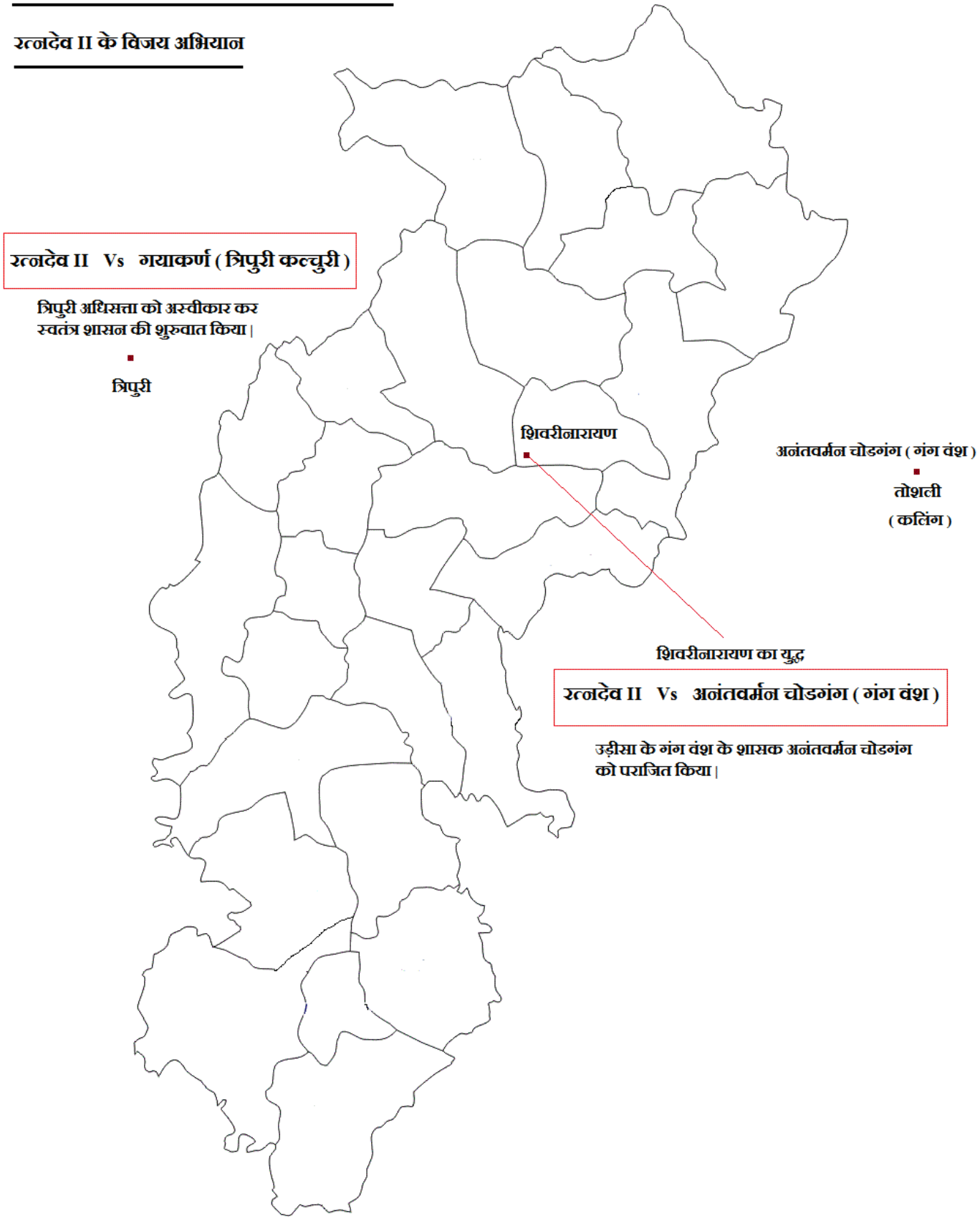

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

पृथ्वीदेव II (1135 – 1165)

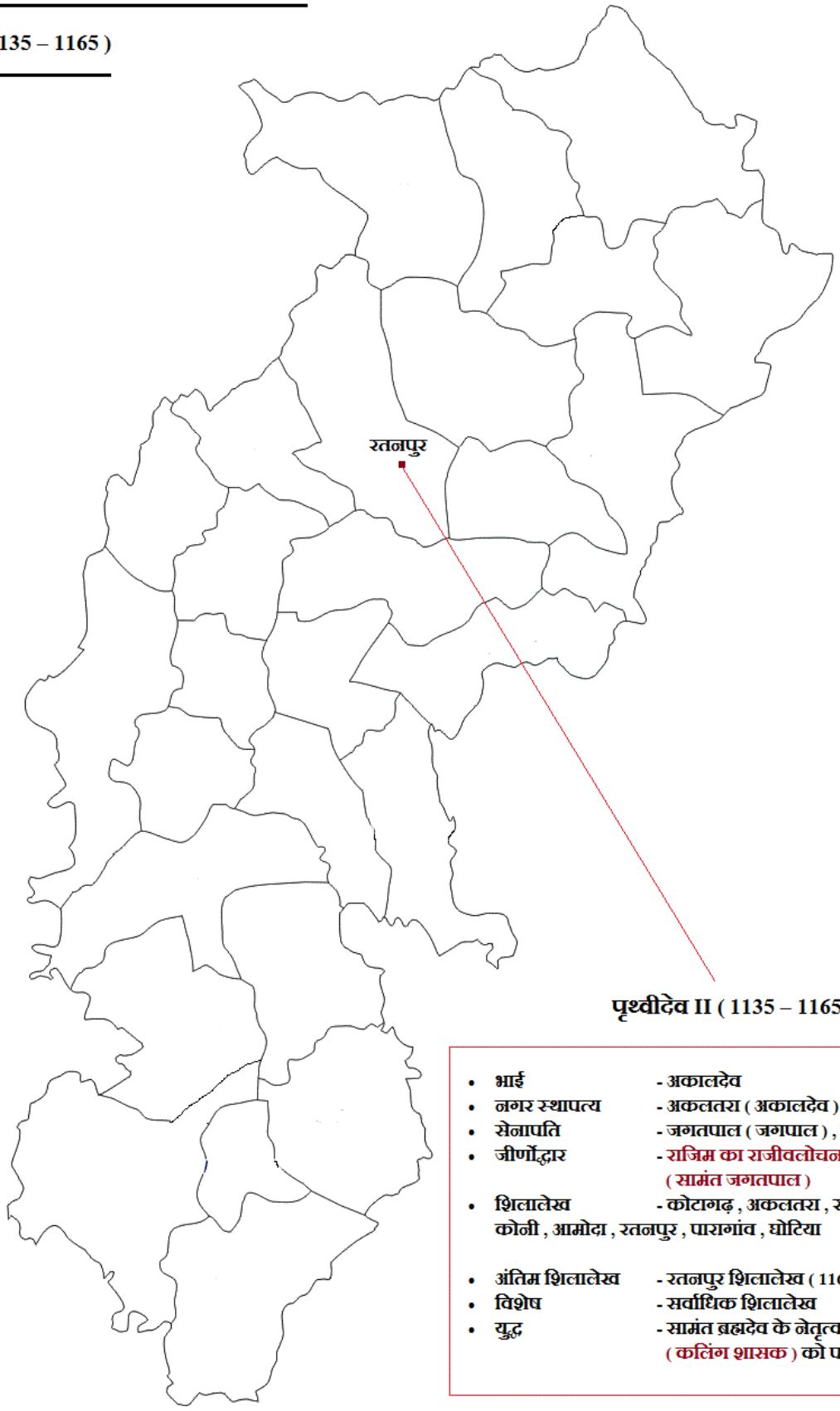

पृथ्वीदेव II (1135 – 1165)

- भाई - अकालदेव
- नगर स्थापत्य - अकलतरा (अकालदेव)
- सेनापति - जगतपाल (जगपाल) , ब्रह्मदेव
- जीर्णोद्धार - राजिम का राजीवलोचन मंदिर (सामंत जगतपाल)
- शिलालेख - कोटागढ़ , अकलतरा , राजिम , बिलाईगढ़ , कोनी , आमोदा , रतनपुर , पारागांव , घोटिया
- अंतिम शिलालेख - रतनपुर शिलालेख (1163)
- विशेष - सर्वाधिक शिलालेख
- युद्ध - सामंत ब्रह्मदेव के नेतृत्व में जटेश्वर (कलिंग शासक) को पराजित किया |

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

पृथ्वीदेव II के प्रमुख स्थापत्य

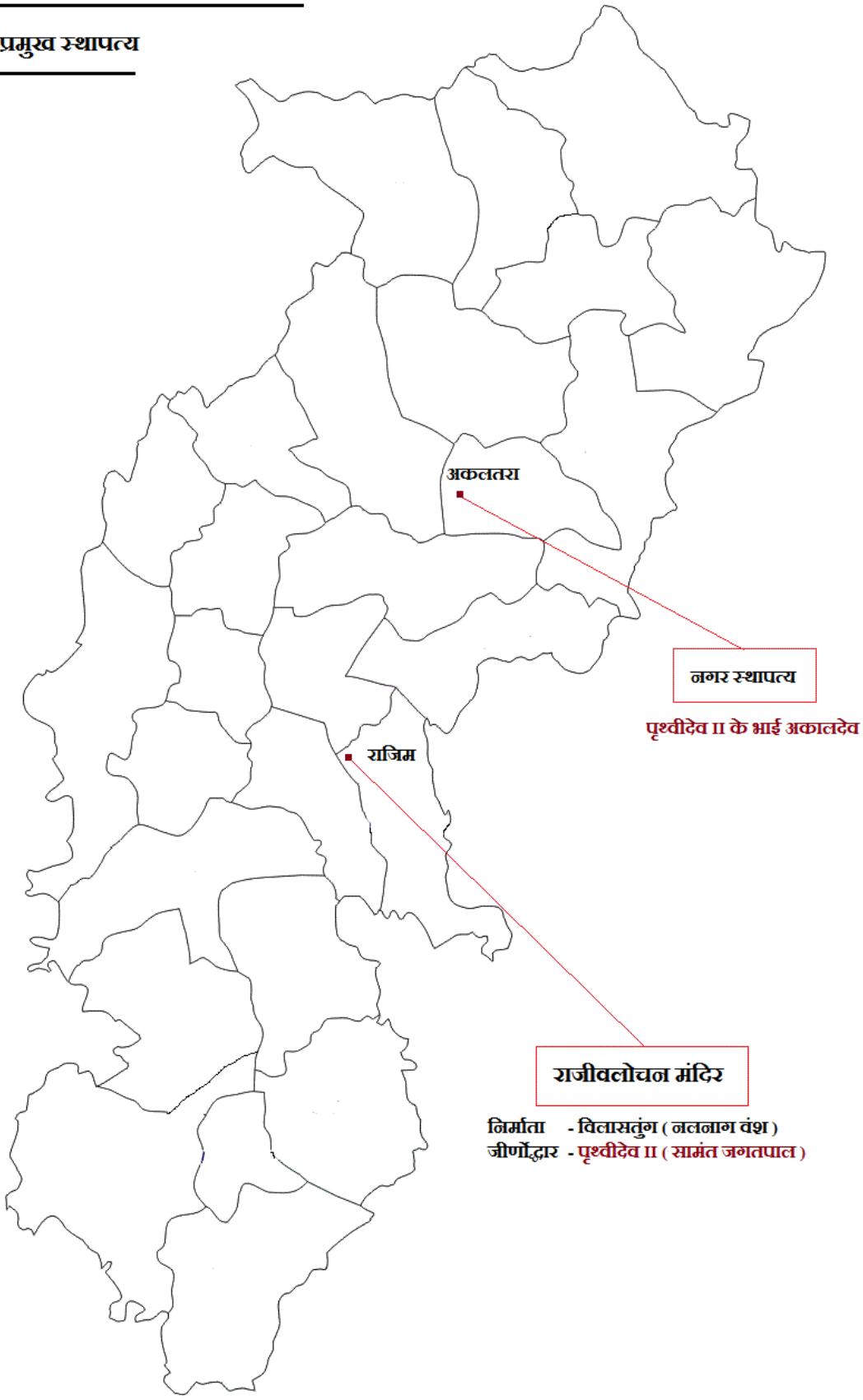

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

पृथ्वीदेव II के प्रमुख शिलालेख

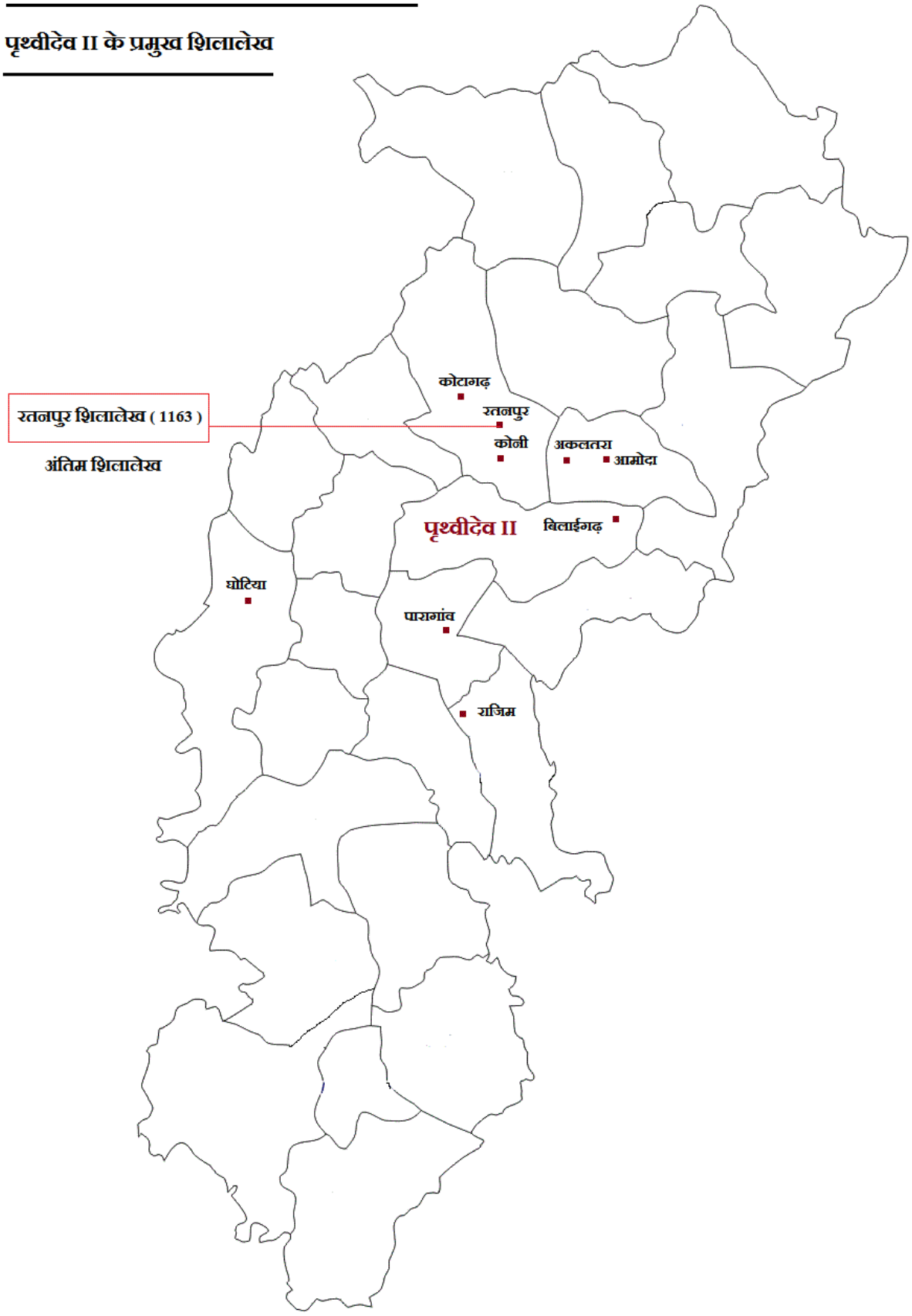

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

पृथ्वीदेव II के विजय अभियान

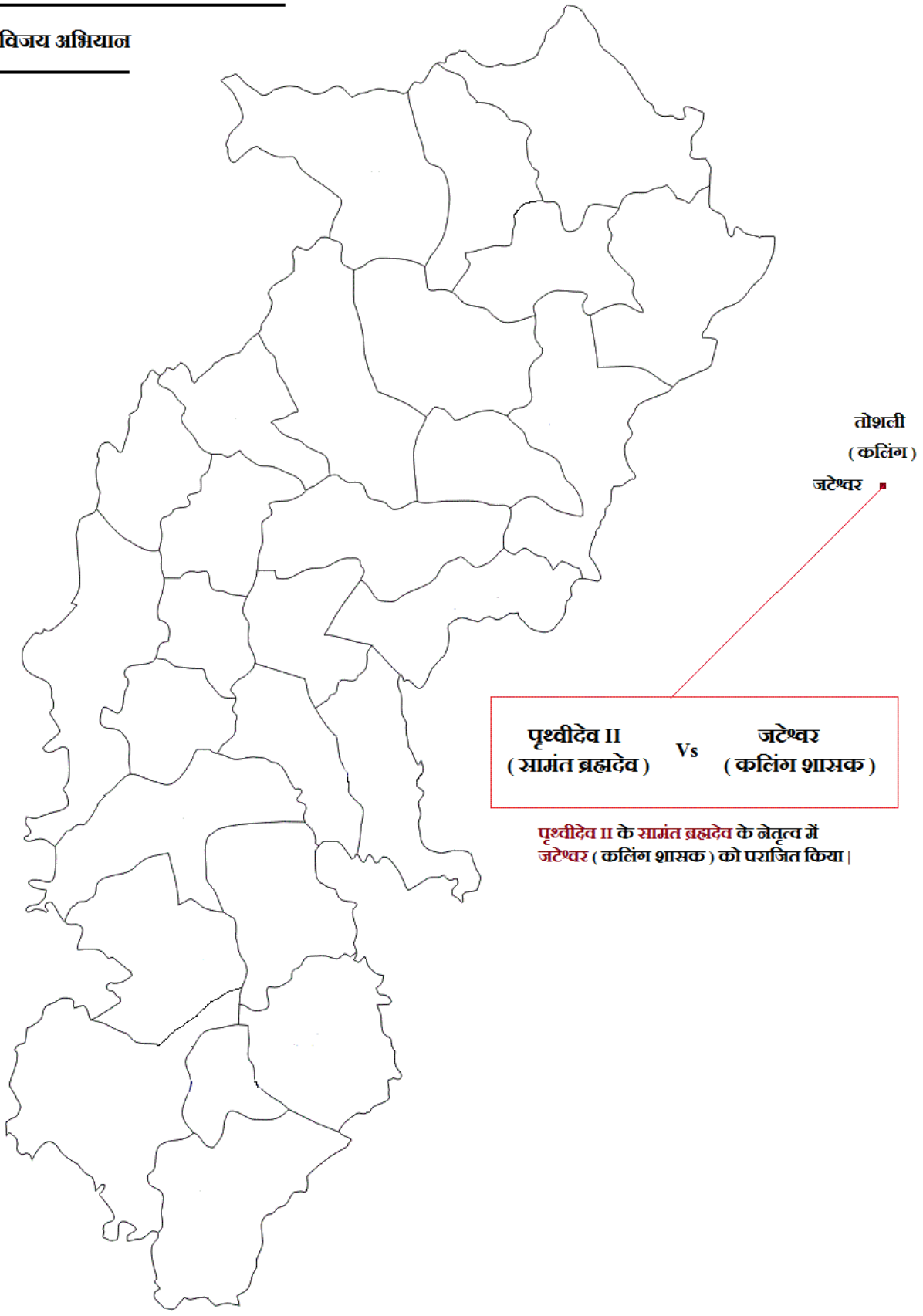

पृथ्वीदेव II के सामंत ब्रह्मदेव के नेतृत्व में जटेश्वर (कलिंग शासक) को पराजित किया।

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

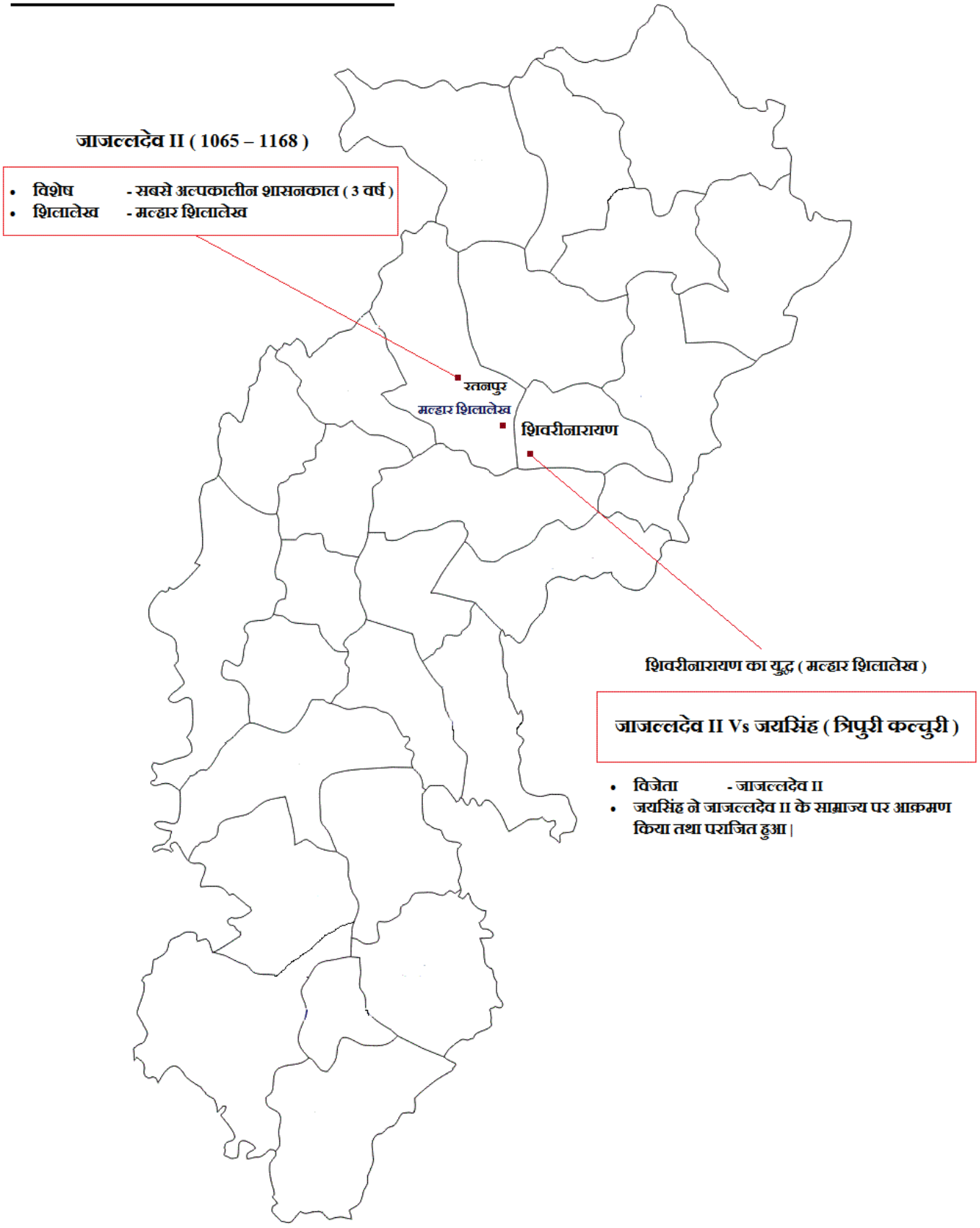

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

जगतदेव (1168 – 1178)

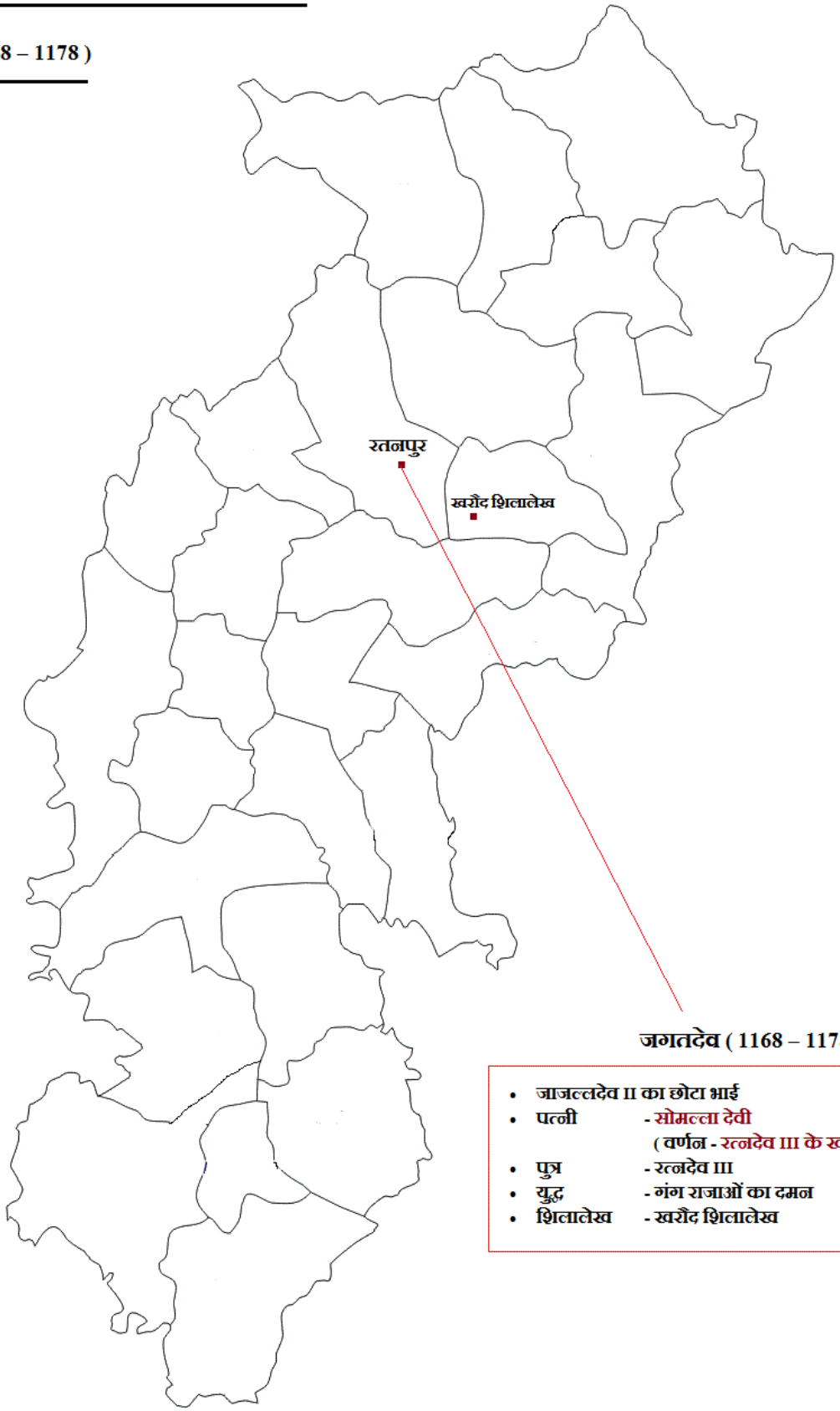

जगतदेव (1168 – 1178)

- जाजल्लदेव II का छोटा भाई
- पत्नी - सोमल्ला देवी
  (वर्णन - रत्नदेव III के खरौद शिलालेख)
- पुत्र - रत्नदेव III
- युद्ध - गंग राजाओं का दमन
- शिलालेख - खरौद शिलालेख

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

रत्नदेव III (1178 – 1198)

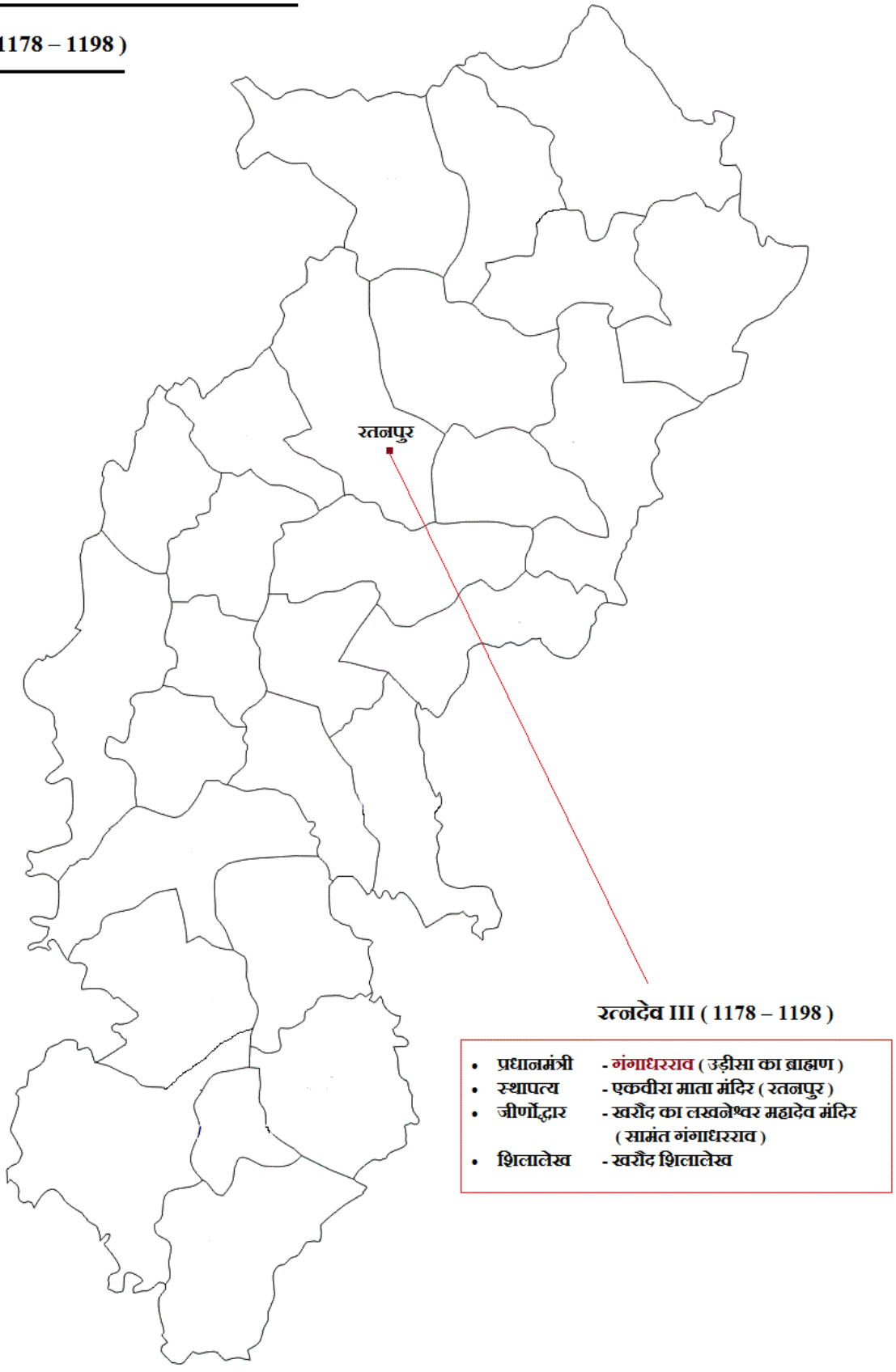

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

रत्नदेव III के प्रमुख स्थापत्य

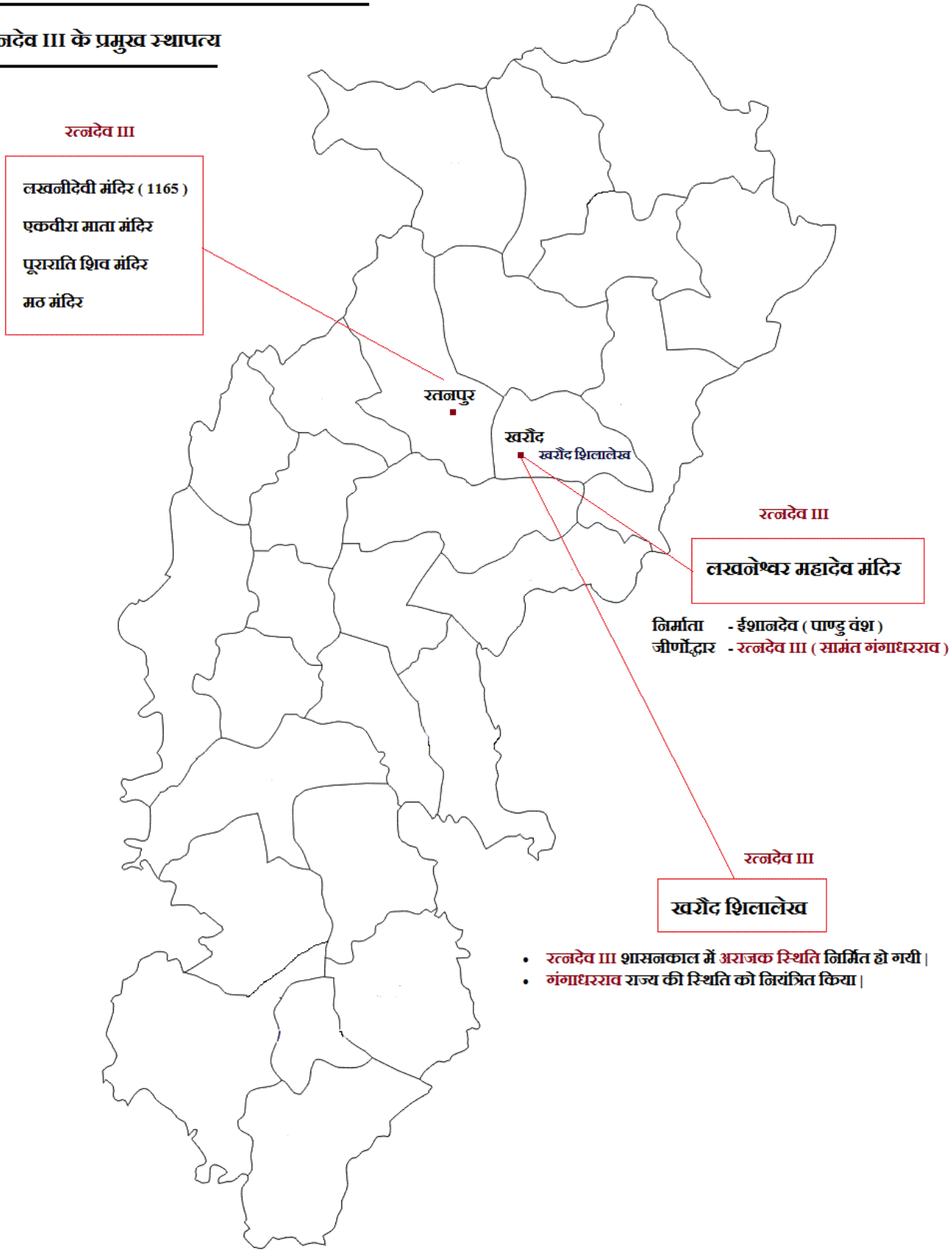

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

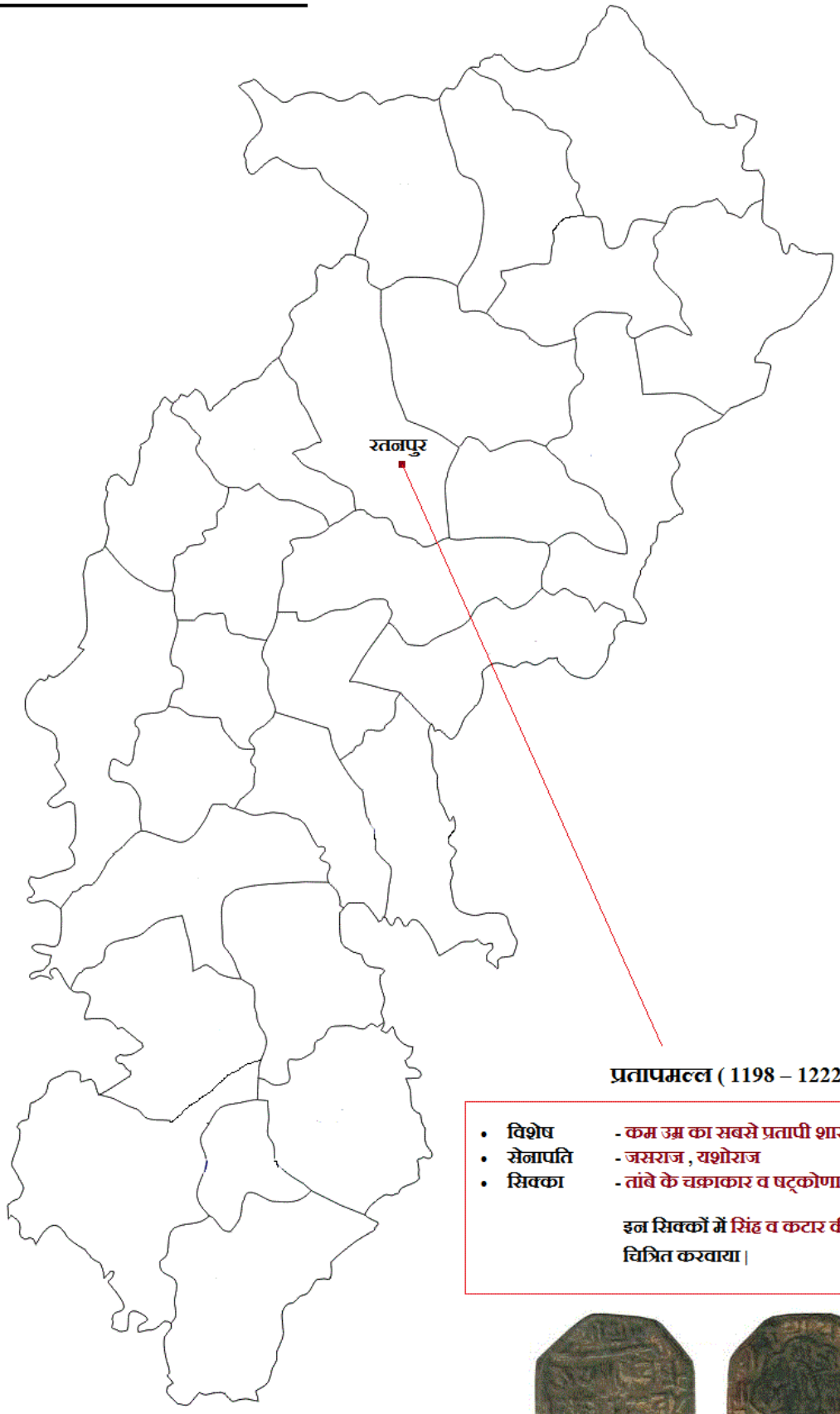

प्रतापमल्ल (1198 – 1222)

- विशेष - कम उम्र का सबसे प्रतापी शासक
- सेनापति - जसराज , यशोराज
- सिक्का - तांबे के चक्राकार व षट्कोणाकार सिक्के

इन सिक्कों में सिंह व कटार की आकृति चित्रित करवाया।

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

बाहरेन्द्र साय (1480 – 1525)

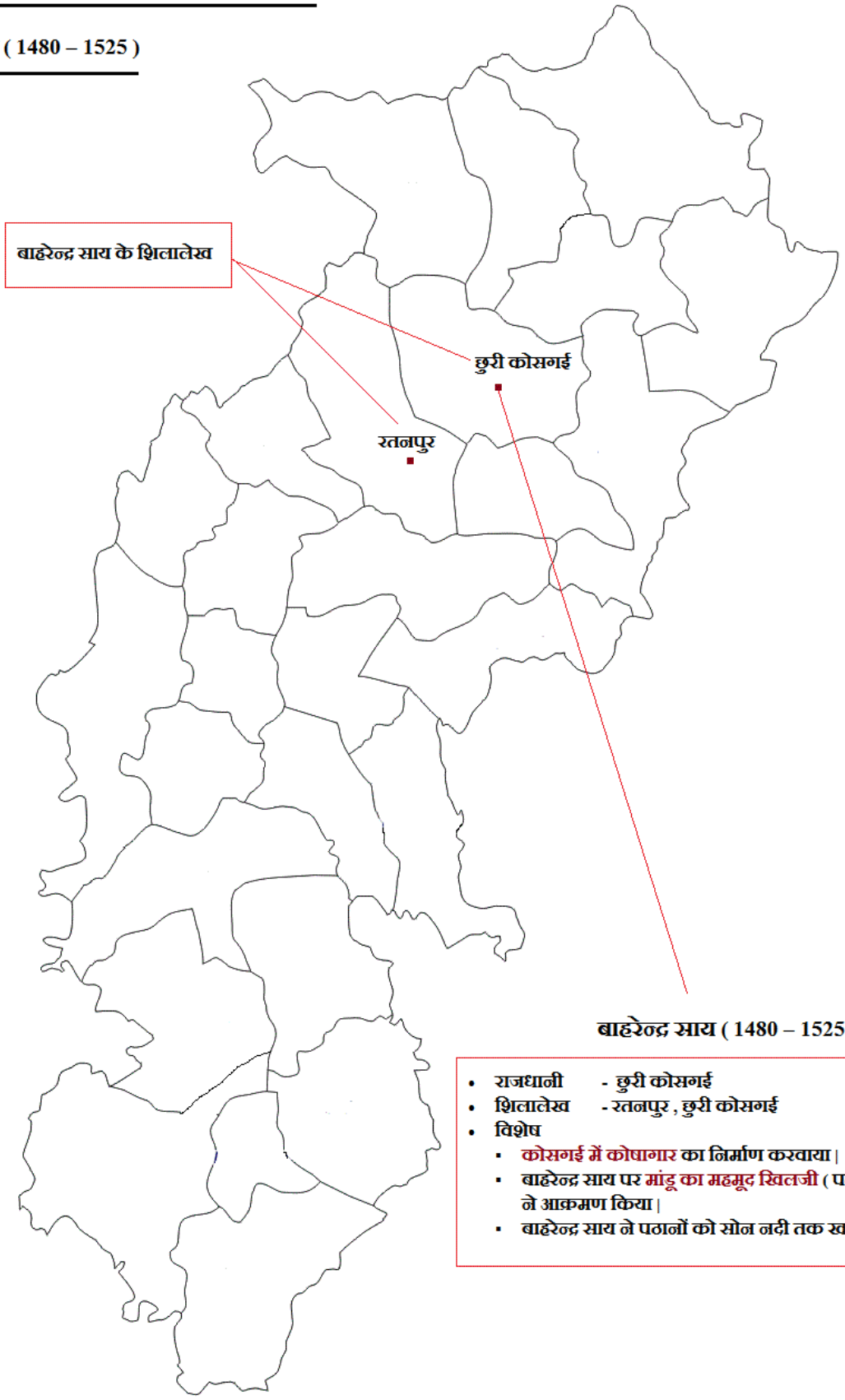

बाहरेन्द्र साय (1480 – 1525)

- राजधानी - छुरी कोसगई
- शिलालेख - रतनपुर , छुरी कोसगई
- विशेष
  - कोसगई में कोषागार का निर्माण करवाया |
  - बाहरेन्द्र साय पर मांडू का महमूद खिलजी (पठान शासक) ने आक्रमण किया |
  - बाहरेन्द्र साय ने पठानों को सोन नदी तक खदेड़ दिया था |

बाहरेन्द्र साय के विजय अभियान

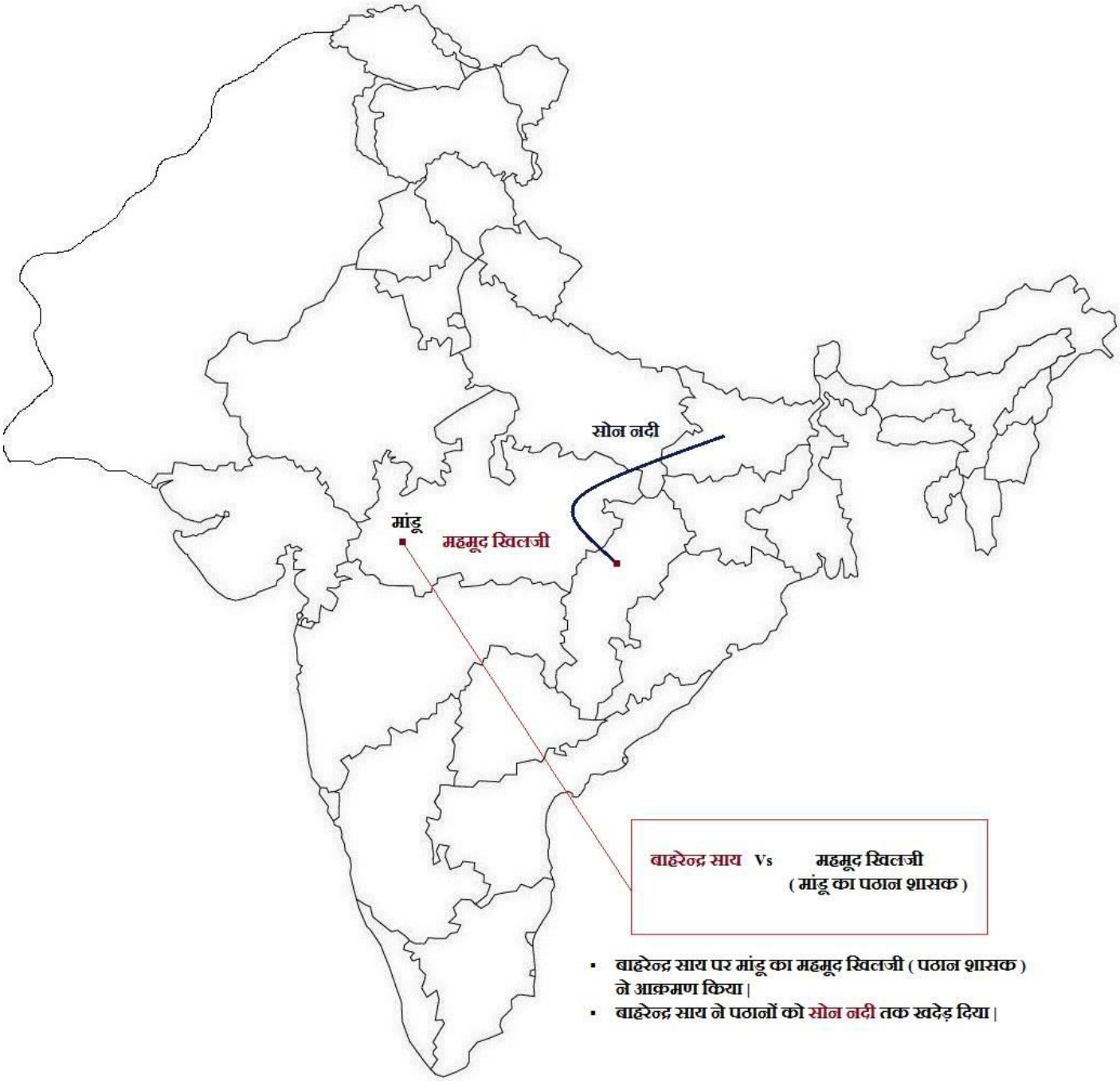

- बाहरेन्द्र साय पर मांडू का महमूद खिलजी (पठान शासक) ने आक्रमण किया |
- बाहरेन्द्र साय ने पठानों को सोन नदी तक खदेड़ दिया |

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

कल्याण साय (1544 – 1581)

कल्याण साय

'श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर'

(गज किले के भीतर)

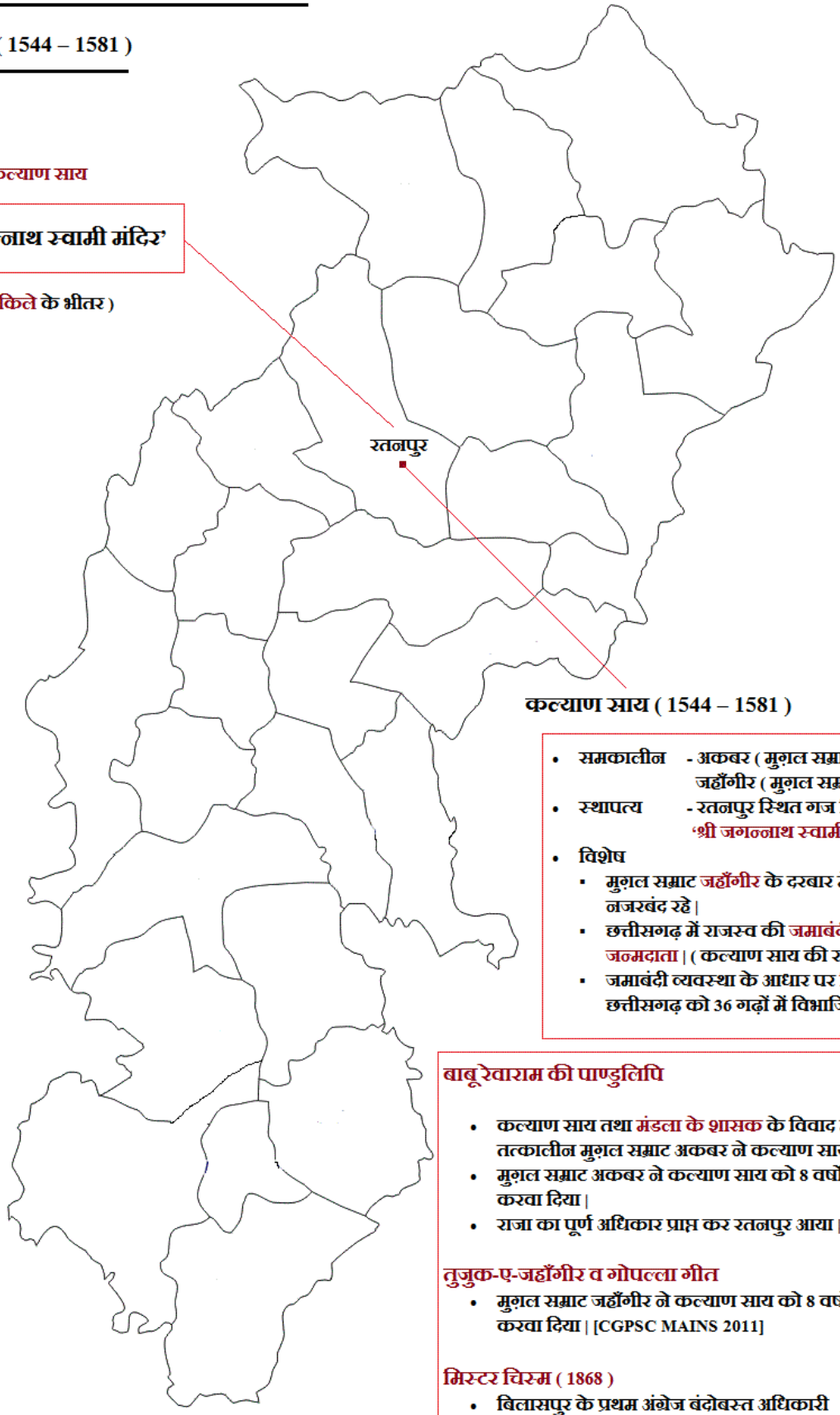

कल्याण साय (1544 – 1581)

- समकालीन - अकबर (मुग़ल सम्राट)
  जहाँगीर (मुग़ल सम्राट)
- स्थापत्य - रतनपुर स्थित गज किले के भीतर 'श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर'
- विशेष
  - मुग़ल सम्राट जहाँगीर के दरबार में 8 वर्षों तक नजरबंद रहे |
  - छत्तीसगढ़ में राजस्व की जमाबंदी प्रणाली के जनमदाता | (कल्याण साय की राजस्व पुस्तिका)
  - जमाबंदी व्यवस्था के आधार पर मिस्टर चिस्म ने छत्तीसगढ़ को 36 गढ़ों में विभाजित किया |

बाबू रेवाराम की पाण्डुलिपि

- कल्याण साय तथा मंडला के शासक के विवाद होने के कारण तत्कालीन मुग़ल सम्राट अकबर ने कल्याण साय को दिल्ली बुलवाया |
- मुग़ल सम्राट अकबर ने कल्याण साय को 8 वर्षों के लिए नजरबंद करवा दिया |
- राजा का पूर्ण अधिकार प्राप्त कर रतनपुर आया |

तुजुक-ए-जहाँगीर व गोपल्ला गीत

- मुग़ल सम्राट जहाँगीर ने कल्याण साय को 8 वर्षों के लिए नजरबंद करवा दिया | [CGPSC MAINS 2011]

मिस्टर चिस्म (1868)

- बिलासपुर के प्रथम अंग्रेज बंदोबस्त अधिकारी
- कल्याण साय की राजस्व पुस्तिका में वर्णित जमाबंदी व्यवस्था के आधार पर मिस्टर चिस्म ने 1868 में छत्तीसगढ़ को 36 गढ़ों में विभाजित किया |

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

लक्ष्मण साय (1581 – 1596)

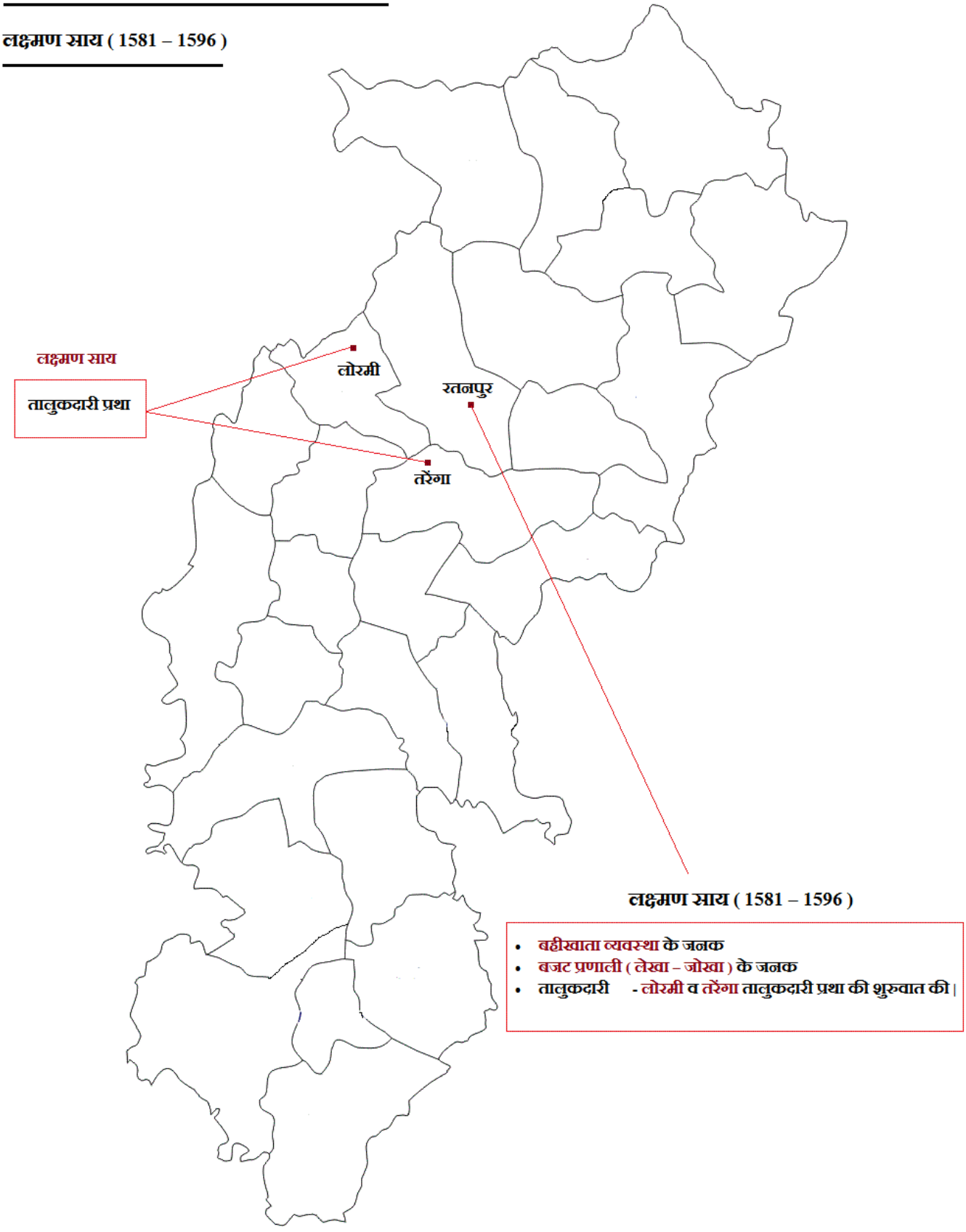

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

लक्ष्मण साय (1581 – 1596)

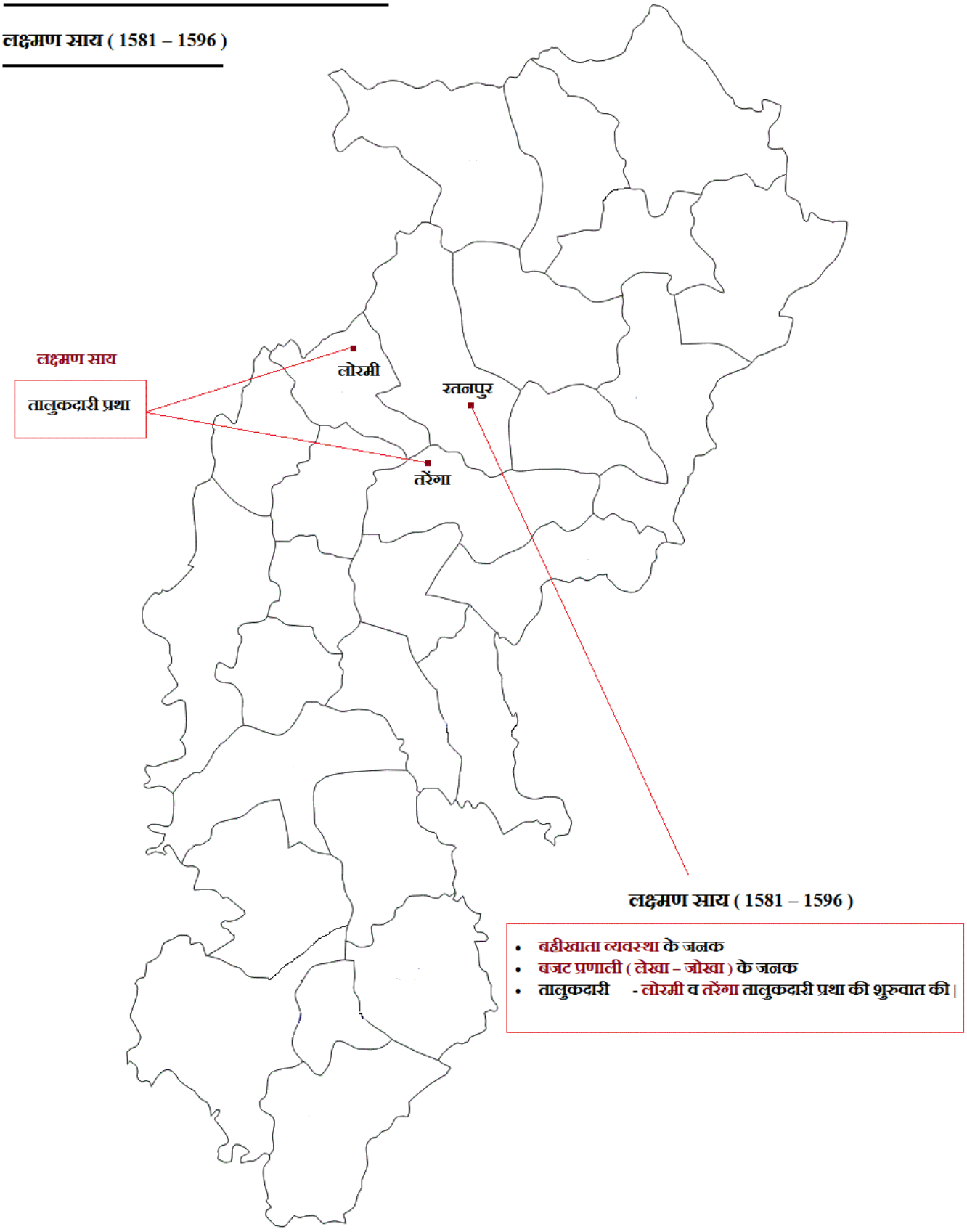

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

तखतसिंह (1685 – 1689)

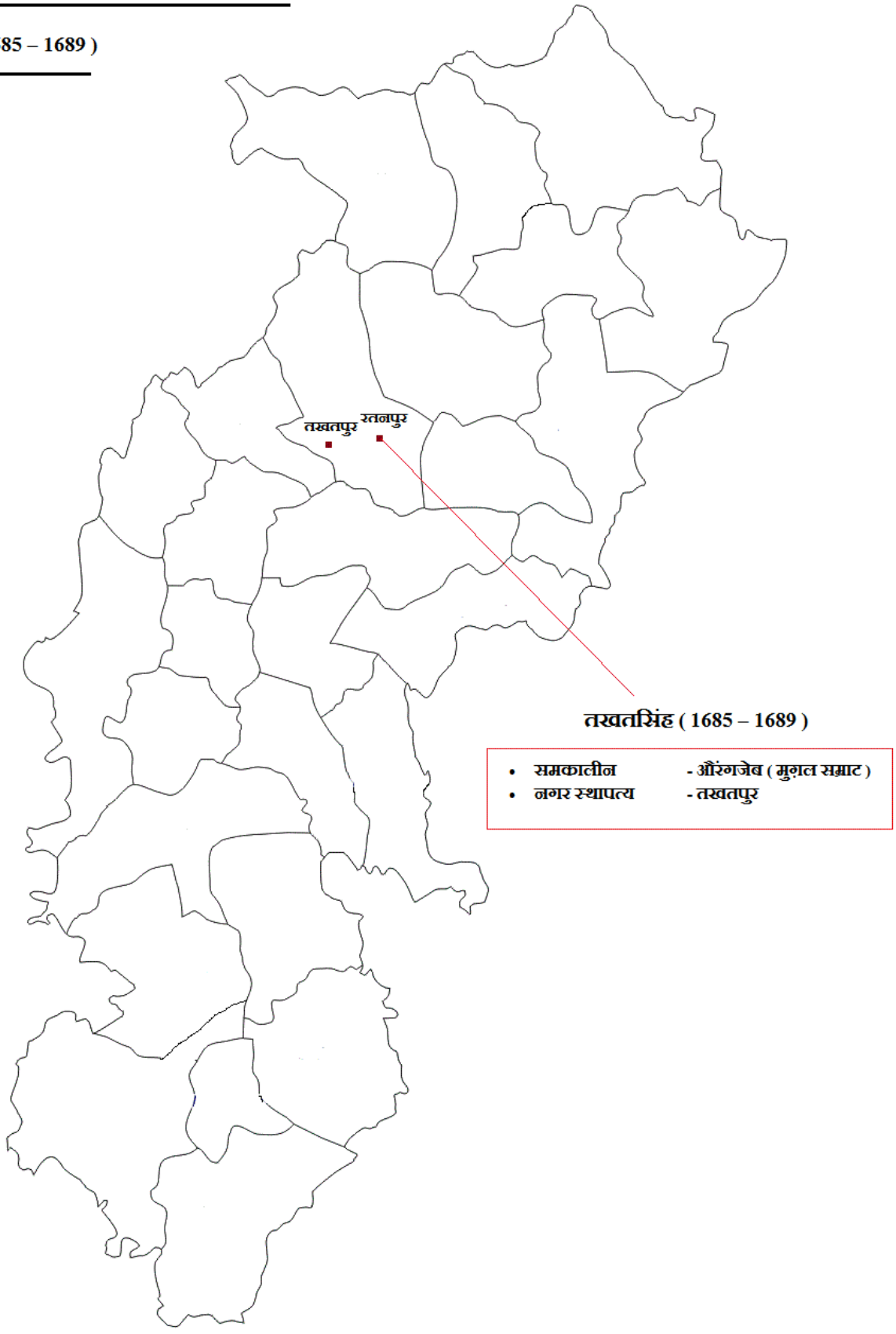

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

राजसिंह (1689 – 1712)

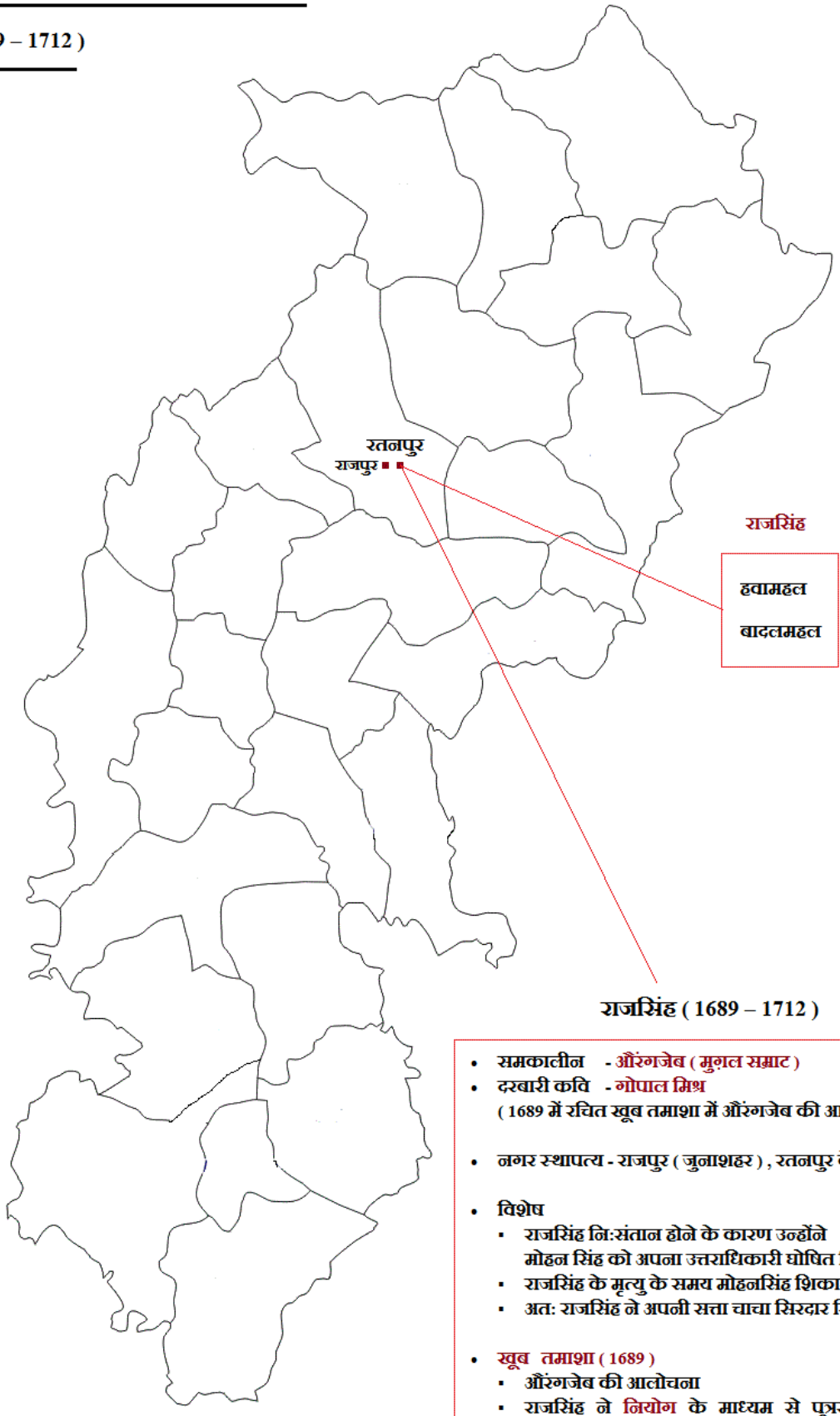

राजसिंह (1689 – 1712)

- समकालीन - औरंगजेब (मुग़ल सम्राट)
- दरबारी कवि - गोपाल मिश्र
  (1689 में रचित खूब तमाशा में औरंगजेब की आलोचना)
- नगर स्थापत्य - राजपुर (जुनाशहर) , रतनपुर के समीप
- विशेष
  - राजसिंह नि:संतान होने के कारण उन्होंने मोहन सिंह को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया |
  - राजसिंह के मृत्यु के समय मोहनसिंह शिकार पर गये हुए थे |
  - अत: राजसिंह ने अपनी सत्ता चाचा सिरदार सिंह को सौंपा |
- खूब तमाशा (1689)
  - औरंगजेब की आलोचना
  - राजसिंह ने नियोग के माध्यम से पुत्ररत्न की प्राप्ति की |

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

सिरदार सिंह (1712 – 1732)

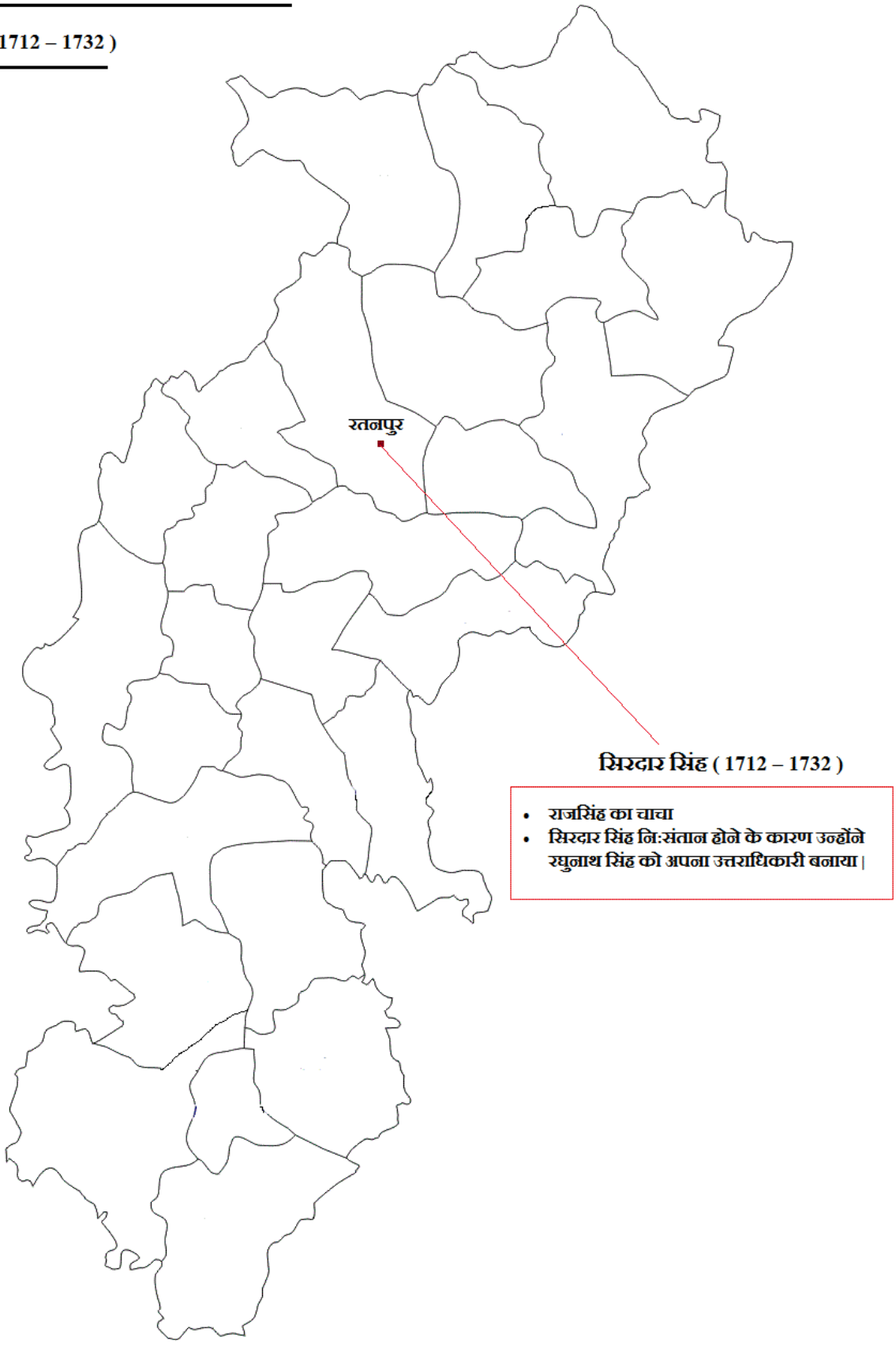

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

रघुनाथ सिंह (1732 – 1741)

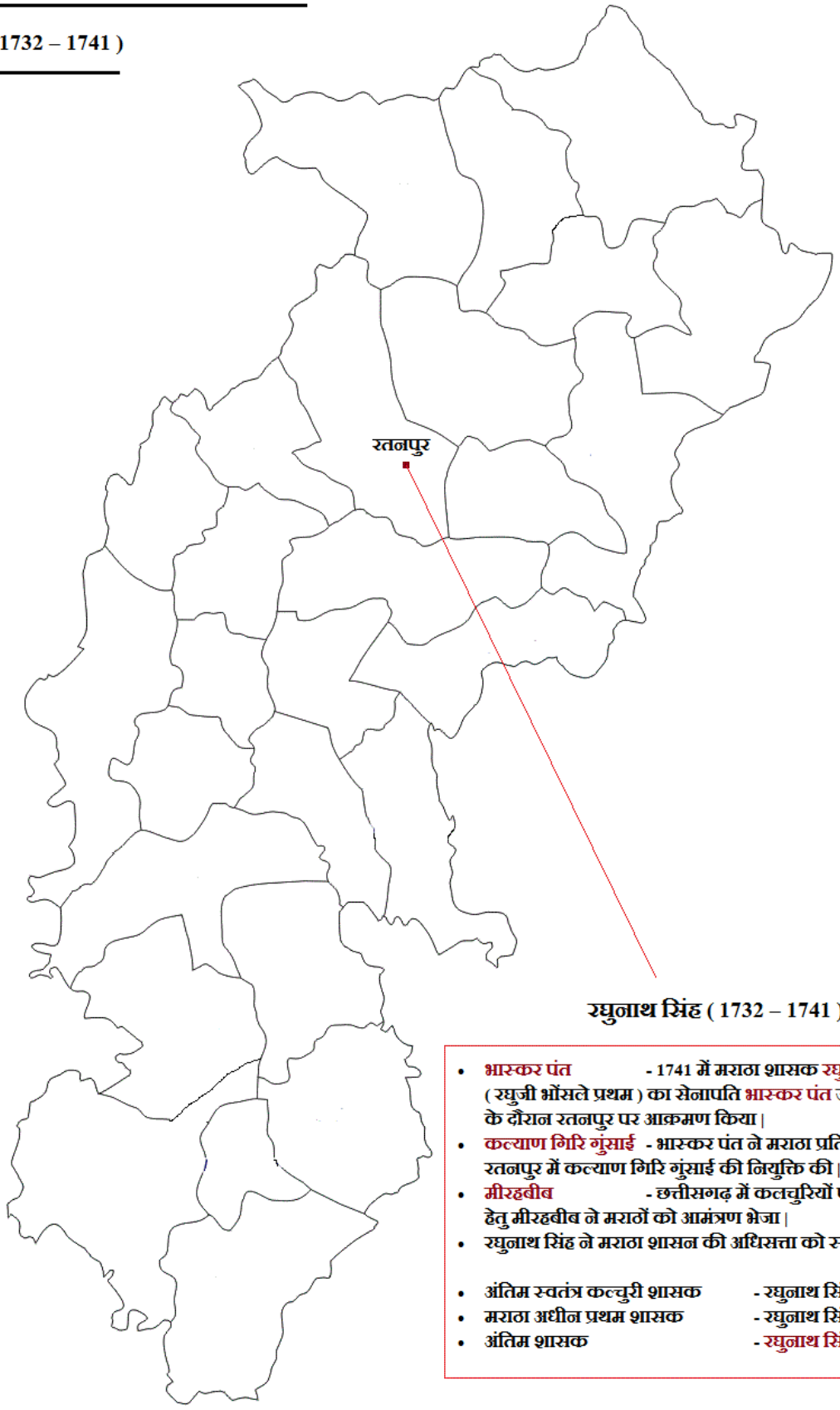

रघुनाथ सिंह (1732 – 1741)

- **भास्कर पंत** - 1741 में मराठा शासक रघुजी प्रथम (रघुजी भोंसले प्रथम) का सेनापति भास्कर पंत उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया |
- **कल्याण गिरि गुंसाई** - भास्कर पंत ने मराठा प्रतिनिधि के रूप में रतनपुर में कल्याण गिरि गुंसाई की नियुक्ति की |
- **मीरहबीब** - छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु मीरहबीब ने मराठों को आमंत्रण भेजा |
- रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |

- अंतिम स्वतंत्र कल्चुरी शासक - रघुनाथ सिंह (1732 – 1741)
- मराठा अधीन प्रथम शासक - रघुनाथ सिंह (1741 – 1745)
- अंतिम शासक - रघुनाथ सिंह

रघुनाथ सिंह (1732 – 1741)

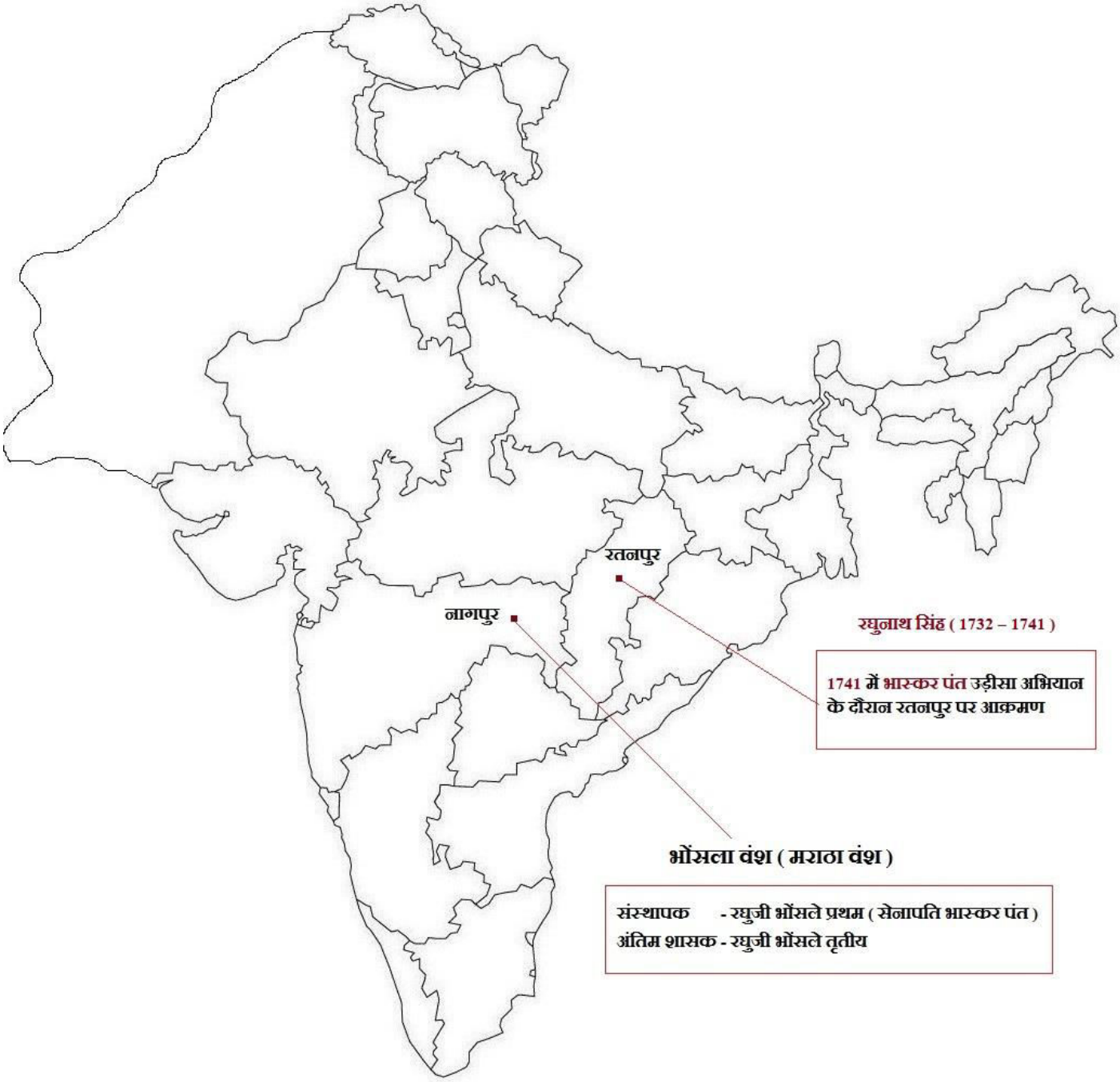

रतनपुर का कल्चुरी वंश (1000 ई. – 1741 ई.)

मोहन सिंह (1745 – 1758)

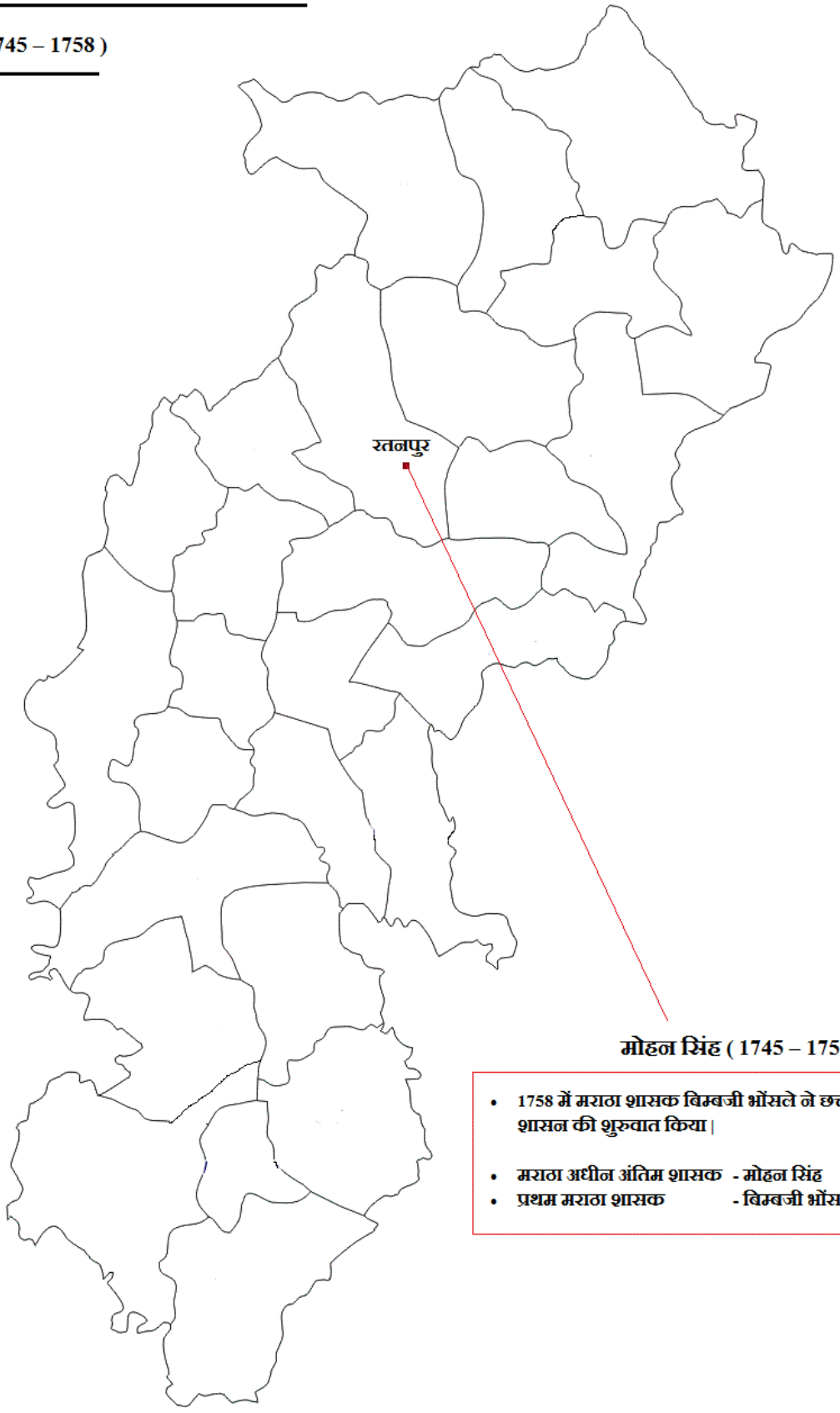

मोहन सिंह (1745 – 1758)

- 1758 में मराठा शासक बिम्बजी भोंसले ने छत्तीसगढ़ में प्रत्यक्ष शासन की शुरुवात किया |
- मराठा अधीन अंतिम शासक - मोहन सिंह (1745 – 1758)
- प्रथम मराठा शासक - बिम्बजी भोंसले (1758 – 1787)

36 गढ़

मिस्टर चिस्म (1868)

- बिलासपुर के **प्रथम अंग्रेज बंदोबस्त अधिकारी**
- कल्याण साय की राजस्व पुस्तिका में वर्णित **जमाबंदी व्यवस्था** के आधार पर **मिस्टर चिस्म** ने 1868 में छत्तीसगढ़ को **36 गढ़ों** में विभाजित किया |
- शिवनाथ नदी के उत्तर में 18 गढ़ तथा दक्षिण में 18 गढ़ हैं |

36 गढ़ों का विभाजन

क्र.	रतनपुर शाखा के 18 गढ़ (शिवनाथ नदी के उत्तर में)	जिला	क्र.	रायपुर शाखा के 18 गढ़ (शिवनाथ नदी के दक्षिण में)	जिला
1	करकट्टी कंडारी	अनुपपुर	1	सिमगा	बलौदा – बाज़ार
2	पंडरभट्ठा	बिलासपुर	2	लवन	
3	पेण्ड्रागढ़		3	सिरपुर	महासमुंद
4	केंदागढ़		4	खल्लारी	
5	ओखरगढ़		5	मोहदी	
6	रतनपुर		6	सूअरमार	
7	विजयपुर		7	राजिम	गरियाबंद
8	मातिन	कोरबा	8	फिंगेश्वर	
9	लाफागढ़		9	टेंगनागढ़	धमतरी
10	पोड़ी उपरोड़ा		10	रायपुर	रायपुर
11	छुरी कोसगई		11	ओमेरा	
12	मदनपुर (चाम्पा)	जांजगीर – चाम्पा	12	सारंगढ़	बेमेतरा
13	सोढ़ीगढ़		13	सिरसागढ़	
14	कोटगढ़		14	दुर्गगढ़	दुर्ग
15	खरौद		15	पाटनगढ़	
16	नवागढ़	बेमेतरा	16	अकलवाड़ा	बालोद
17	मारोगढ़		17	सिंगारपुर	राजनांदगांव
18	सेमरिया	बलौदा – बाज़ार	18	सिंगारगढ़	अज्ञात

मिस्टर चिस्म (1868)

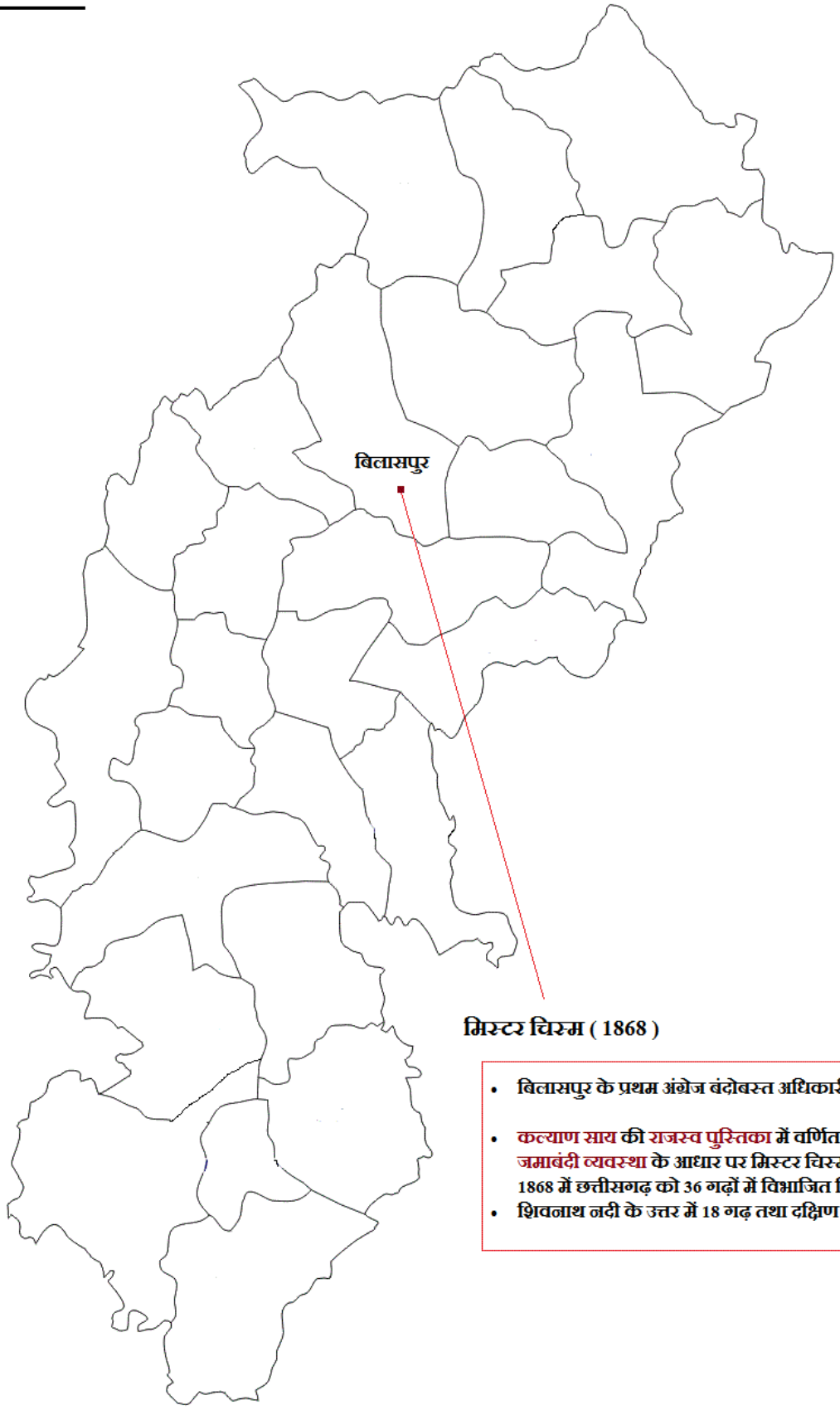

- बिलासपुर के प्रथम अंग्रेज बंदोबस्त अधिकारी
- कल्याण साय की राजस्व पुस्तिका में वर्णित जमाबंदी व्यवस्था के आधार पर मिस्टर चिस्म ने 1868 में छत्तीसगढ़ को 36 गढ़ों में विभाजित किया |
- शिवनाथ नदी के उत्तर में 18 गढ़ तथा दक्षिण में 18 गढ़ हैं |

36 गढ़

खोजकर्ता - मिस्टर चिस्म (1868)

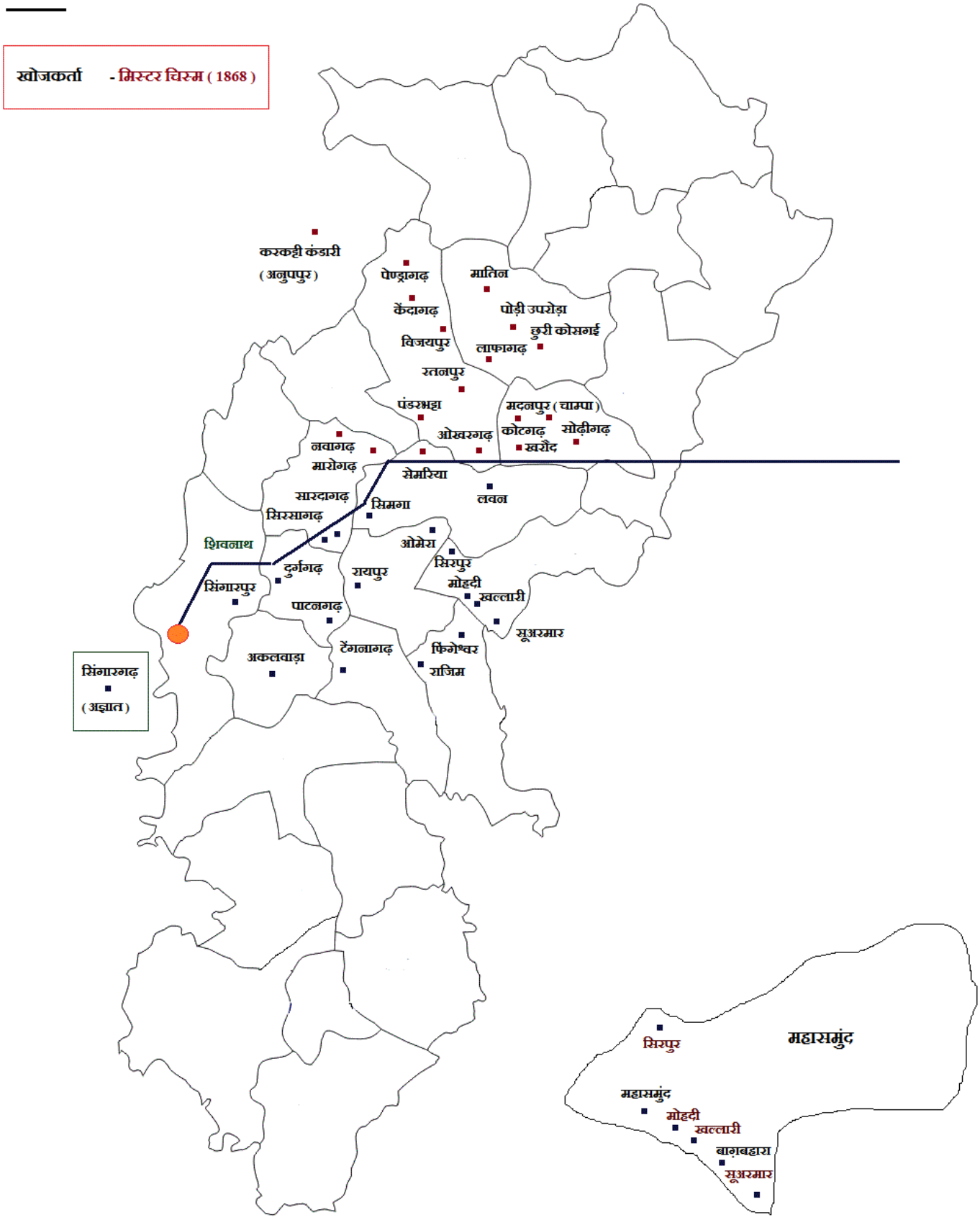

रायपुर का कल्चुरी वंश (1300 ई. – 1750 ई.)

- ब्रह्मदेव के शिलालेख के अनुसार संस्थापक - **लक्ष्मीदेव**
- **कनिंघम** तथा **रायपुर गजेटियर** के अनुसार संस्थापक - **केशवदेव**
- रायपुर में कल्चुरी शाखा के प्रथम शासक - **रामचंद्र देव**
- अंतिम शासक - **अमर सिंह**
- प्रथम राजधानी - **खल्लारी (खल्लवाटिका)** (लक्ष्मीपति)
- द्वितीय राजधानी - **रायपुर** (स्थापना – **रामचंद्रदेव** , राजधानी – **ब्रम्हदेव**)

प्रमुख शासक	शासनकाल	विशेष
लक्ष्मी देव	1300 – 1340	▪ ब्रह्मदेव के शिलालेख के अनुसार संस्थापक ▪ 14 वीं शताब्दी के रतनपुर शासक ने लक्ष्मीदेव को खल्लारी भेजा था | ▪ राजधानी - खल्लारी (खल्लवाटिका)
सिंघण देव	1340 – 1380	▪ रायपुर के 18 गढ़ों को जीता | (ब्रह्मदेव का रायपुर व खल्लारी शिलालेख)
रामचंद्र देव	1380 – 1400	▪ नगर स्थापत्य - रायपुर ▪ अपने पुत्र **ब्रह्मदेव राय** के नाम पर **रायपुर** शहर की स्थापना किया ▪ रायपुर में कल्चुरी शाखा के प्रथम राजा ▪ रतनपुर कल्चुरी वंश से पृथक स्वतंत्र शासन की शुरुवात
ब्रह्मदेव राय	1400 – 1420	▪ राजधानी - रायपुर (1409) ▪ उपाधि - वाकपति (संगीत विद्या में निपुण) , द्वितीय भारत ▪ शिलालेख - रायपुर , खल्लारी **प्रमुख कार्य** ▪ 1409 - **रायपुर** को राजधानी बनाया | - **रायपुर** पहली बार राजधानी बना | - **रायपुर के दूधाधारी मठ** का निर्माण किया | ▪ 1413 - ब्रह्मदेव ने फणी नागवंशी शासक **मोनिंगदेव** को हराया | ▪ 1415 - **खल्लारी माता मंदिर तथा नारायण मंदिर (विष्णु मंदिर)** ब्रम्हदेव के समय **देवपाल** नामक मोची ने खल्लारी में खल्लारी माता मंदिर तथा नारायण मंदिर बनवाया |
केशव देव	1420 – 1438	▪ **कनिंघम** तथा **रायपुर गजेटियर** के अनुसार संस्थापक ▪ रायपुर कल्चुरी शाखा के संस्थापक
अमर सिंह	1741 – 1753	▪ अंतिम स्वतंत्र कल्चुरी शासक **(1741 – 1750)** ▪ मराठा अधीन प्रथम शासक **(1750 – 1753)**
शिवराज सिंह	1753 – 1758	▪ मराठा अधीन अंतिम शासक **(1753 – 1758)** ▪ अंतिम शासक

रायपुर कल्चुरी के शासक

क्र.	शासक	शासनकाल	विशेष
1	लक्ष्मी देव	1300 – 1340	ब्रह्मदेव के शिलालेख के अनुसार संस्थापक
2	सिंघण देव	1340 – 1380	रायपुर के 18 गढ़ों को जीता |
3	रामचंद्र देव	1380 – 1400	रामचंद्रपुर (रायपुर) की स्थापना रायपुर में कल्चुरी शाखा के प्रथम राजा
4	ब्रह्मदेव राय	1400 – 1420	**रायपुर** को राजधानी बनाया
5	केशव देव	1420 – 1438	**कनिंघम** तथा **रायपुर गजेटियर** के अनुसार संस्थापक रायपुर कल्चुरी शाखा के संस्थापक
6	भुवनेश्वर देव	1438 – 1468	
7	मानसिंह देव	1468 – 1478	
8	संतोषसिंह देव	1478 – 1498	
9	सूरतसिंह देव	1498 – 1518	
10	सैनसिंह देव	1518 – 1528	
11	चामुण्डा सिंहदेव	1518 – 1563	
12	वंशी सिंहदेव	1563 – 1582	
13	धन सिंहदेव	1582 – 1604	
14	जैत सिंहदेव	1604 – 1615	
15	फते सिंहदेव	1615 – 1636	
16	याद सिंहदेव	1636 – 1650	
17	सोमदत्त देव	1650 – 1663	
18	बलदेव सिंहदेव	1663 – 1685	
19	उमेद सिंहदेव	1685 – 1705	
20	बनवीर सिंहदेव	1705 – 1741	
21	अमर सिंह	1741 – 1753	▪ अंतिम स्वतंत्र कल्चुरी शासक **(1741 – 1750)** ▪ मराठा अधीन प्रथम शासक **(1750 – 1753)**
22	शिवराज सिंह	1753 – 1758	▪ मराठा अधीन अंतिम शासक **(1753 – 1758)** ▪ अंतिम शासक

लक्ष्मीदेव (1300 – 1340)

- ब्रह्मदेव के शिलालेख के अनुसार संस्थापक
- 14 वीं शताब्दी के रतनपुर शासक ने लक्ष्मीदेव को खल्लारी भेजा था |
- राजधानी - खल्लारी (खल्लवाटिका)

सिंघणदेव (1340 – 1380)

- पिता - लक्ष्मीदेव
- रायपुर के 18 गढ़ों को जीता (ब्रह्मदेव का रायपुर व खल्लारी शिलालेख)

रामचंद्रदेव (1380 – 1400)

- नगर स्थापत्य - रायपुर (अपने पुत्र **ब्रह्मदेव राय** के नाम पर **रायपुर** शहर की स्थापना किया)
- रायपुर में कल्चुरी शाखा के प्रथम राजा
- रतनपुर कल्चुरी वंश से पृथक स्वतंत्र शासन की शुरुवात

ब्रह्मदेव राय (1400 – 1420)

- राजधानी - रायपुर (1409)
- उपाधि - वाकपति (संगीत विद्या में निपुण) , द्वितीय भारत
- शिलालेख - रायपुर , खल्लारी

वर्ष	विवरण
1409	▪ **रायपुर** को राजधानी बनाया | ▪ **रायपुर** पहली बार राजधानी बना | ▪ **रायपुर के दूधाधारी मठ** का निर्माण किया |
1413	ब्रह्मदेव ने फणी नागवंशी शासक **मोनिंगदेव** को हराया |
1415	**खल्लारी माता मंदिर तथा नारायण मंदिर** ब्रम्हदेव के समय **देवपाल** नामक मोची ने खल्लारी में खल्लारी माता मंदिर तथा नारायण मंदिर बनवाया |

अमर सिंह (1741 – 1750)

- **रघुजी भोंसले II** - 1750 में मराठा शासक **रघुजी भोंसले II** रायपुर कल्चुरी पर आक्रमण किया |
- **अमर सिंह** ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |
- **7000 रु. वार्षिक टकोली** - अमर सिंह को **रायपुर , राजिम , पाटन परगना** देकर **7000 रु. वार्षिक टकोली** निर्धारण किया |
- 1753 में अमर सिंह के मृत्यु के बाद शिवराज सिंह शासक बना |
- अंतिम स्वतंत्र रायपुर कल्चुरी शासक - **अमर सिंह** **(1741 – 1750)**
- अंतिम शासक - **अमर सिंह**
- मराठा अधीन प्रथम शासक - **अमर सिंह** **(1750 – 1753)**

शिवराज सिंह (1753 – 1758)

- 1758 में मराठा शासक **बिम्बजी भोंसले** ने छत्तीसगढ़ में प्रत्यक्ष शासन की शुरुवात किया |
- मराठा अधीन अंतिम शासक - **शिवराज सिंह** **(1753 – 1758)**
- प्रथम मराठा शासक - **बिम्बजी भोंसले** **(1758 – 1787)**

रायपुर का कल्चुरी वंश (1300 ई. – 1750 ई.)

लक्ष्मीदेव (1300 – 1340)

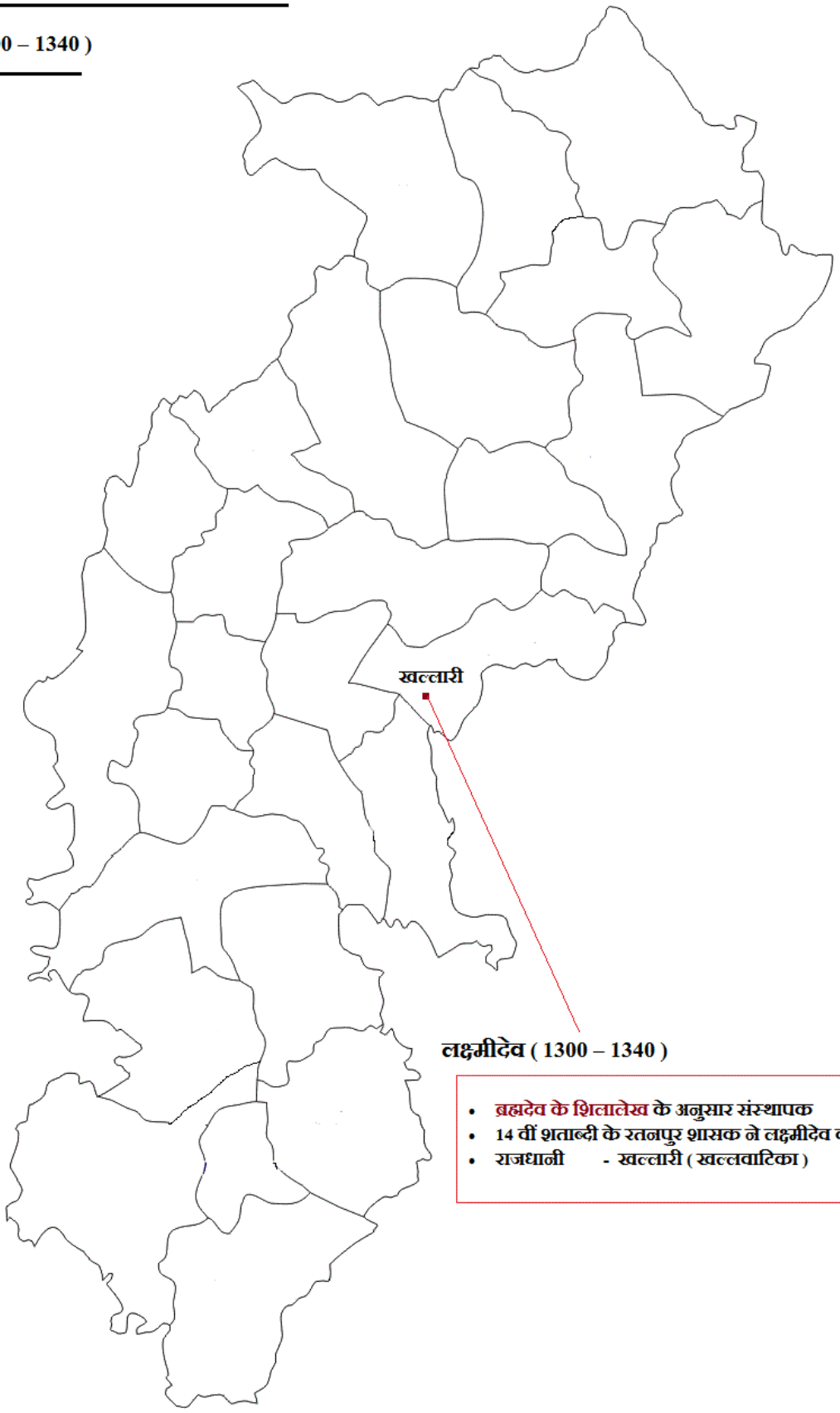

रायपुर का कल्चुरी वंश (1300 ई. – 1750 ई.)

सिंघणदेव (1340 – 1380)

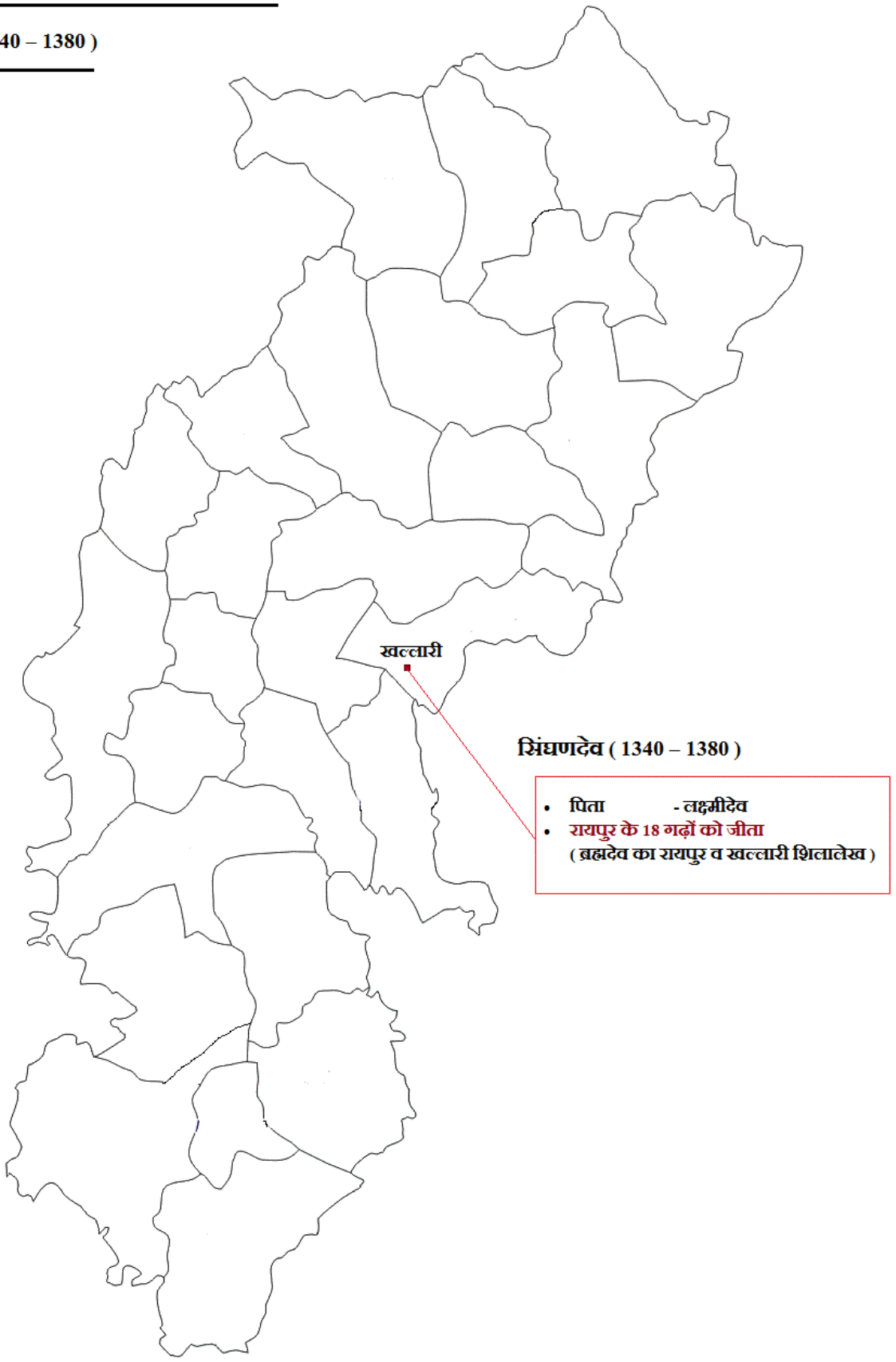

रायपुर का कल्चुरी वंश (1300 ई. – 1750 ई.)

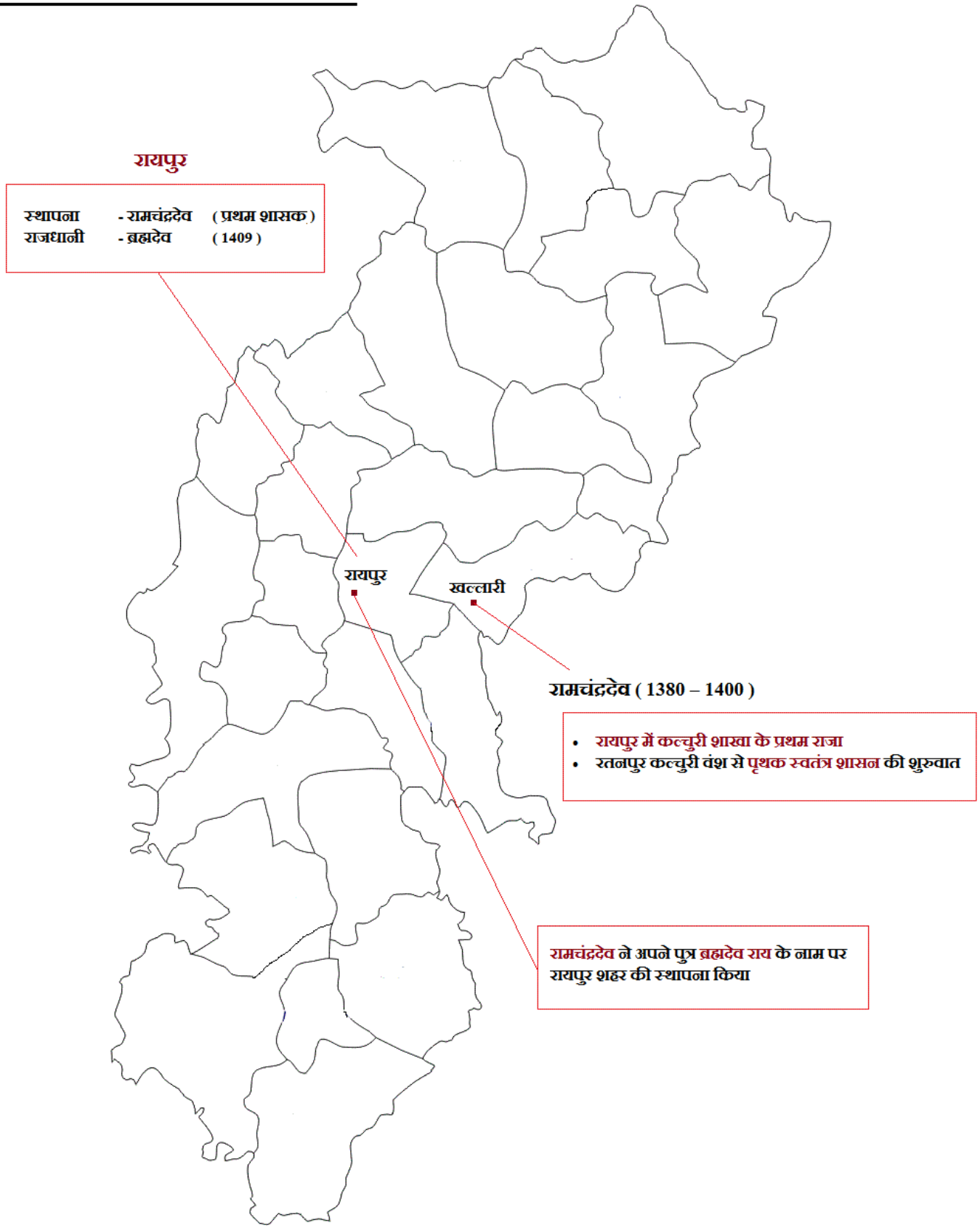

रायपुर का कल्चुरी वंश (1300 ई. – 1750 ई.)

ब्रह्मदेव राय (1400 – 1420)

ब्रह्मदेव राय Vs मोनिंगदेव
(फणी नागवंशी)

1413 में ब्रह्मदेव ने फणी नागवंशी शासक मोनिंगदेव को हराया |

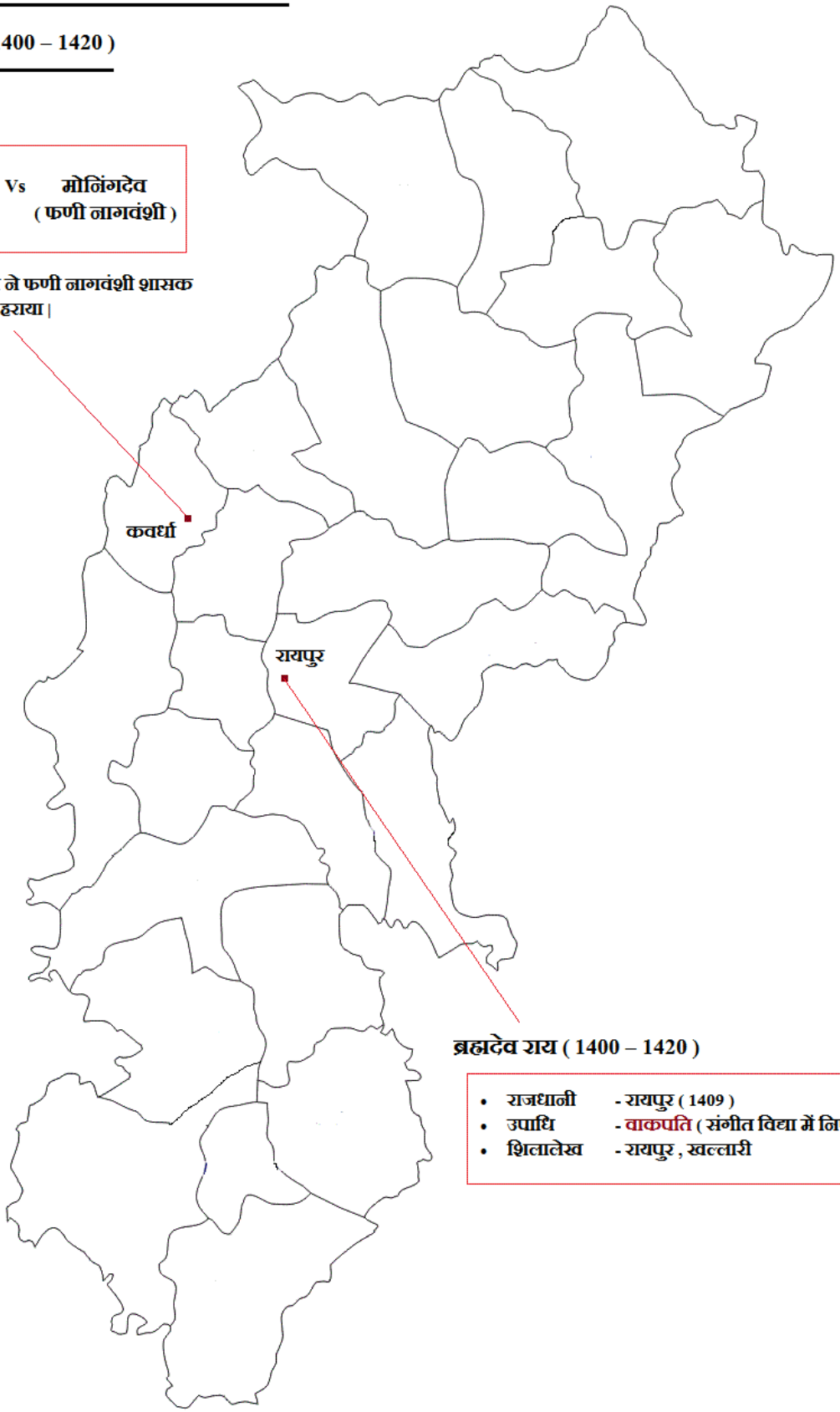

ब्रह्मदेव राय (1400 – 1420)

- राजधानी - रायपुर (1409)
- उपाधि - वाकपति (संगीत विद्या में निपुण) , द्वितीय भारत
- शिलालेख - रायपुर , खल्लारी

रायपुर का कल्चुरी वंश (1300 ई. – 1750 ई.)

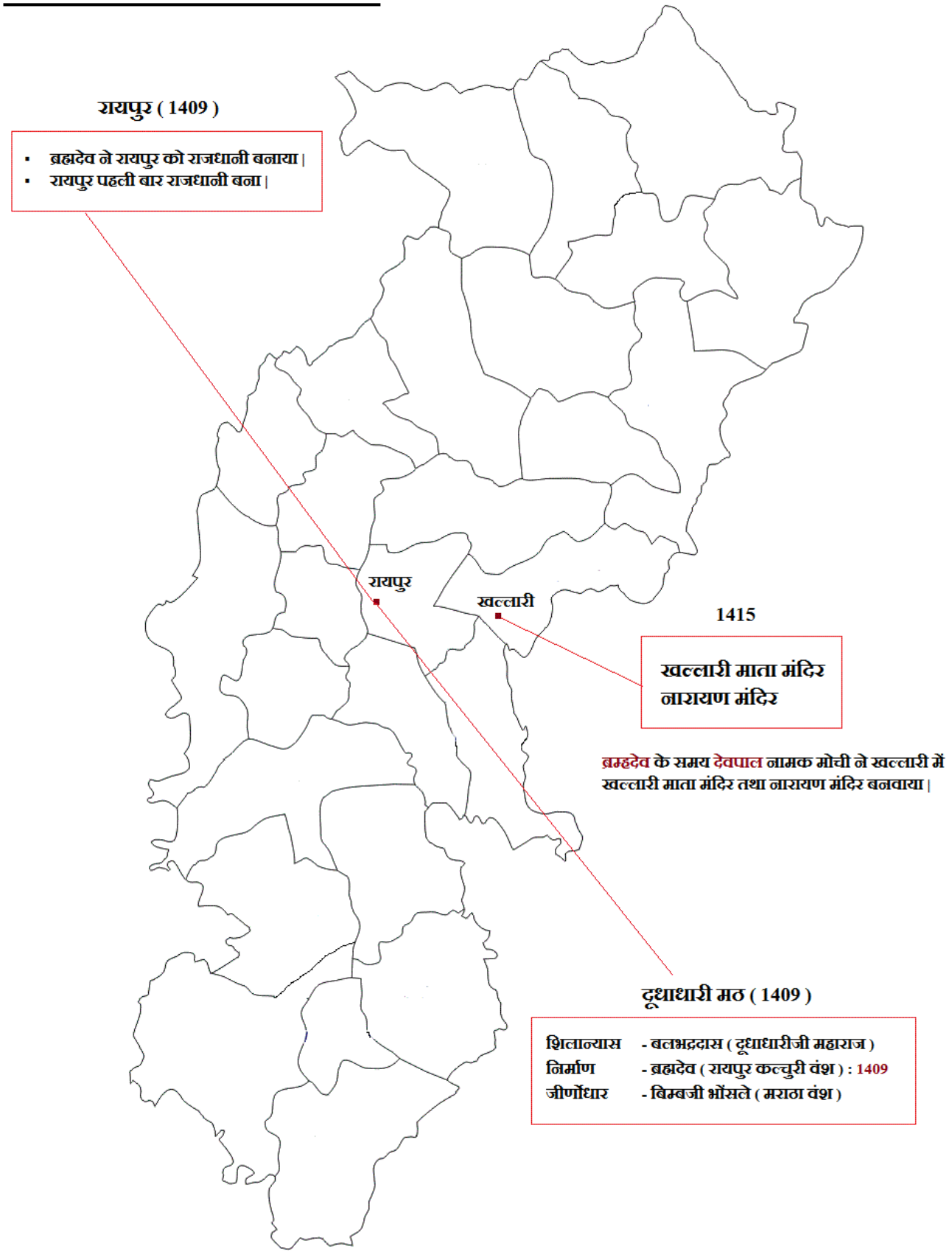

रायपुर का कल्चुरी वंश (1300 ई. – 1750 ई.)

अमर सिंह (1741 – 1750)

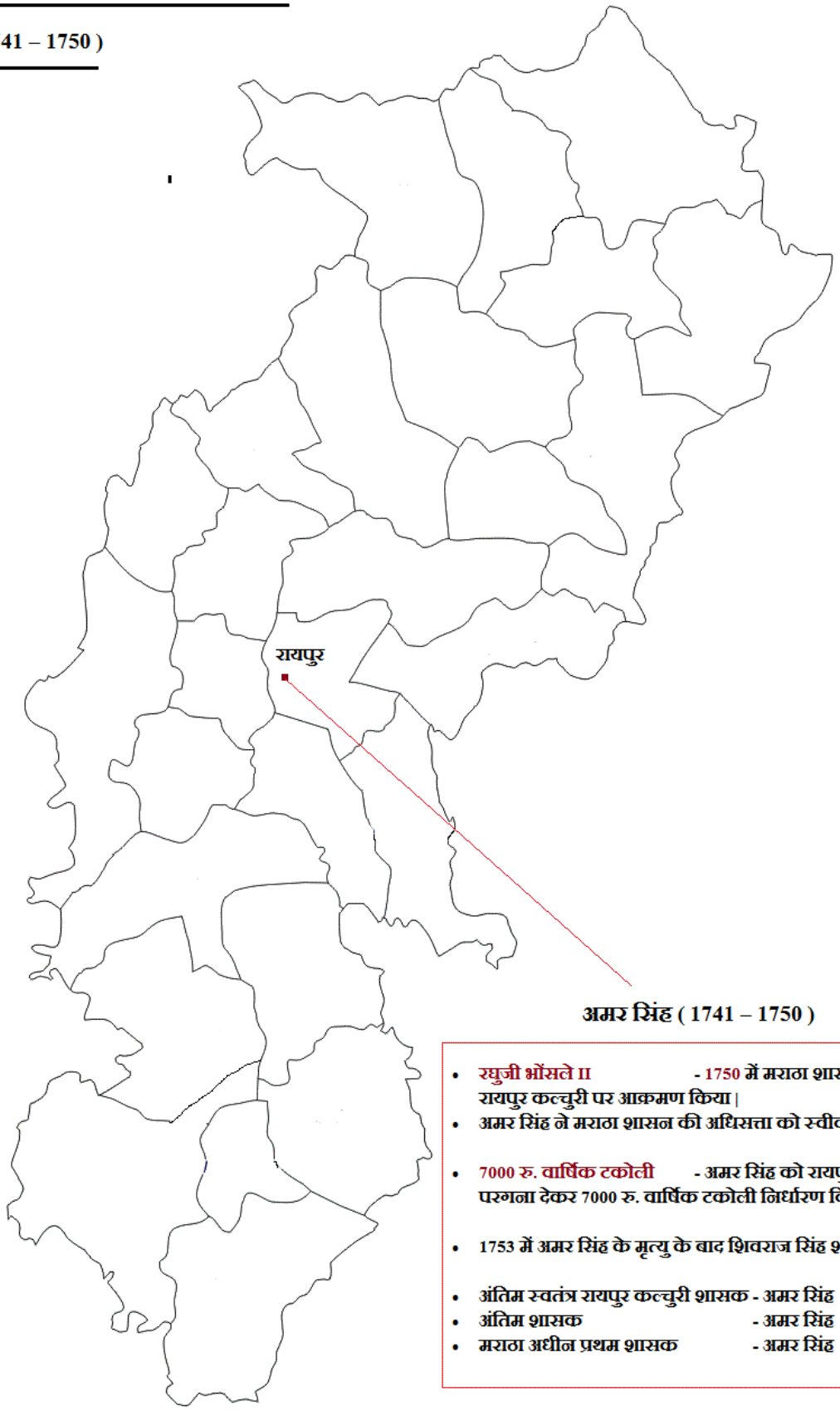

अमर सिंह (1741 – 1750)

- रघुजी भोंसले II - 1750 में मराठा शासक रघुजी भोंसले II रायपुर कल्चुरी पर आक्रमण किया |
- अमर सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |
- 7000 रु. वार्षिक टकोली - अमर सिंह को रायपुर , राजिम , पाटन परगना देकर 7000 रु. वार्षिक टकोली निर्धारण किया |
- 1753 में अमर सिंह के मृत्यु के बाद शिवराज सिंह शासक बना |
- अंतिम स्वतंत्र रायपुर कल्चुरी शासक - अमर सिंह (1741 – 1750)
- अंतिम शासक - अमर सिंह
- मराठा अधीन प्रथम शासक - अमर सिंह (1750 – 1753)

अमर सिंह (1741 – 1750)

रायपुर का कल्चुरी वंश (1300 ई. – 1750 ई.)

शिवराज सिंह (1753 – 1758)

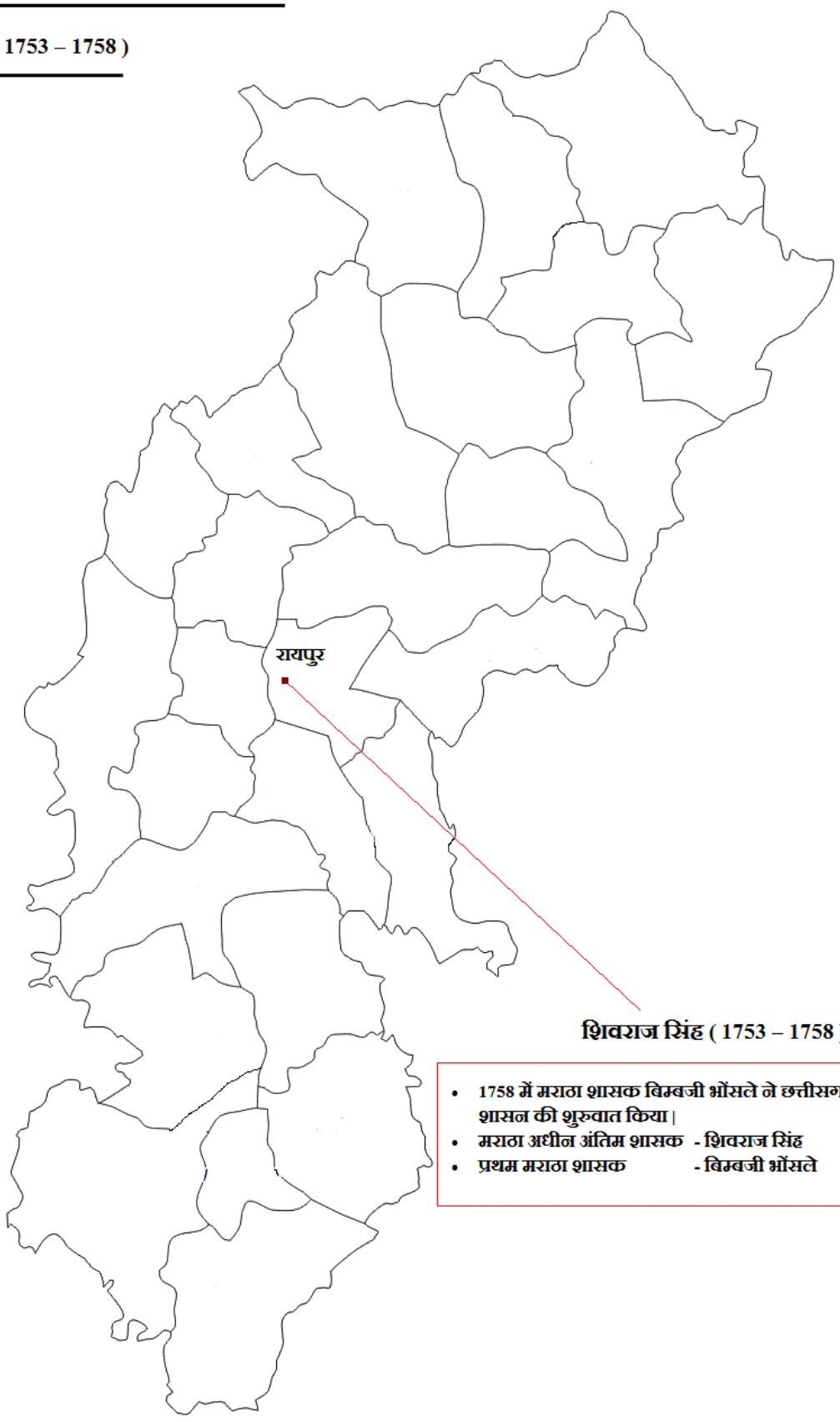

- 1758 में मराठा शासक बिम्बजी भोंसले ने छत्तीसगढ़ में प्रत्यक्ष शासन की शुरुवात किया |
- मराठा अधीन अंतिम शासक - शिवराज सिंह (1753 – 1758)
- प्रथम मराठा शासक - बिम्बजी भोंसले (1758 – 1787)

कल्चुरीकालीन महत्वपूर्ण तथ्य

प्रथम शासक एवं अंतिम शासक

क्र.	कल्चुरी वंश	प्रथम शासक	अंतिम शासक
1	रतनपुर कल्चुरी वंश	कलिंगराज	रघुनाथ सिंह
2	रायपुर कल्चुरी वंश	रामचंद्रदेव	अमर सिंह

संस्थापक

क्र.	कल्चुरी वंश	संस्थापक	राजधानी	स्त्रोत	अंतिम स्वतंत्र शासक	अंतिम शासक
1	रतनपुर कल्चुरी वंश	कलिंगराज	तुम्माण	पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र**	**रघुनाथ सिंह**	**मोहन सिंह**
2	रायपुर कल्चुरी वंश	लक्ष्मीदेव	खल्लारी	ब्रह्मदेव का शिलालेख	**अमर सिंह**	**शिवराज सिंह**
		केशवदेव	रायपुर	कनिंघम तथा रायपुर गजेटियर		
		रामचंद्रदेव (प्रथम शासक)	खल्लारी			

अंतिम शासक

क्र.	कल्चुरी वंश	शासक	शासनकाल	विशेष
1	रतनपुर कल्चुरी वंश	**रघुनाथ सिंह**	**1732 – 1741**	अंतिम स्वतंत्र कल्चुरी शासक
			1741 – 1745	मराठा अधीन प्रथम शासक
		मोहन सिंह	**1745 – 1758**	मराठा अधीन अंतिम शासक
2	रायपुर कल्चुरी वंश	**अमर सिंह**	**1741 – 1750**	अंतिम स्वतंत्र रायपुर कल्चुरी शासक
			1750 – 1753	मराठा अधीन प्रथम शासक
		शिवराज सिंह	**1753 – 1758**	मराठा अधीन अंतिम शासक

शासनकाल

क्र.	शासक	शासनकाल	विशेष
1	जाजल्लदेव II	1165 – 1168	सबसे अल्पकालीन शासनकाल (3 वर्ष)
2	बाहरेन्द्र साय	1480 – 1525	सर्वाधिक लम्बा शासनकाल (45 वर्ष)

समकालीन शासन

क्र.	समकालीन शासक	कल्चुरी शासक	शासनकाल
1	अकबर (1556 – 1605)	कल्याण साय	1544 – 1581
2		लक्ष्मण साय	1581 – 1596
3		शंकर साय	1596 – 1606
4	औरंगजेब (1658 – 1707)	तखतसिंह	1685 – 1689
5		राजसिंह	1689 – 1712
6	वल्लभाचार्य (1593)	शंकर साय	1596 – 1606

उपाधि

क्र.	शासक	उपाधि
1	शंकरगढ़ II	मुग्धतुंग
2	कलिंगराज	परममहेश्वर
3	पृथ्वीदेव I	सकलकोसलाधिपति प्रचण्डकोसलाधिपति
4	जाजल्लदेव I	गजशार्दूल (गजबेटकर) श्रीमज्जाजल्यदेव
5	रत्नदेव II	त्रिकलिंगाधिपति
6	ब्रह्मदेव राय	वाकपति (संगीत विद्या में निपुण) द्वितीय भारत

सिक्के (मुद्रा)

क्र.	शासक	सिक्के	विशेष
1	जाजल्लदेव I	सोने के सिक्के	**जाजल्लदेव I** ने पहली बार छत्तीसगढ़ में सोने के सिक्के चलाये तथा सोने के सिक्के पर **गजशार्दूल** व **श्रीमज्जाजल्यदेव** चित्रित करवाया |
2	रत्नदेव II	सोने व चांदी के सिक्के	
3	पृथ्वीदेव II	चांदी का सबसे छोटा सिक्का	
4	प्रतापमल्ल	तांबे के चक्राकार व षट्कोणाकार सिक्के	इन सिक्कों में **सिंह व कटार** की आकृति चित्रित करवाया |

सेनापति (सामंत)

क्र.	शासक	सेनापति
1	कमलराज	साहिल्ल
2	जाजल्लदेव I	जगपालदेव
3	रत्नदेव II	वल्लभराज
4	पृथ्वीदेव II	जगतपाल (जगपाल) ब्रह्मदेव
5	जाजल्लदेव II	उल्हानदेव
6	रत्नदेव III	गंगाधरराव
7	प्रतापमल्ल	जसराज यशोराज

नगर स्थापत्य

क्र.	शासक	नगर	तहसील	जिला
1	रत्नदेव I	रतनपुर	कोटा	बिलासपुर
2	जाजल्लदेव I	जाजल्लदेवपुर	जांजगीर	जांजगीर – चाम्पा
3	पृथ्वीदेव II	अकलतरा (भाई अकालदेव)	अकलतरा	जांजगीर – चाम्पा
4	तखतसिंह	तखतपुर	तखतपुर	बिलासपुर
5	राजसिंह	राजपुर (जुनाशहर)	रतनपुर (कोटा)	बिलासपुर

राजधानी

क्र.	कल्चुरी वंश	शासक	राजधानी	जिला
1	कल्चुरी वंश	कृष्णराज I	महिष्मति	उज्जैन
2	त्रिपुरी कल्चुरी वंश	वामराज देव	त्रिपुरी	जबलपुर
3	रतनपुर कल्चुरी वंश	कलिंगराज	तुम्माण	कोरबा
4		रत्नदेव I	रतनपुर	बिलासपुर
5		बाहरेन्द्र साय	छुरी कोसगई	कोरबा
6	रायपुर कल्चुरी वंश	लक्ष्मीदेव	खल्लारी	महासमुंद
7		ब्रह्मदेव	रायपुर	रायपुर

नगर स्थापत्य

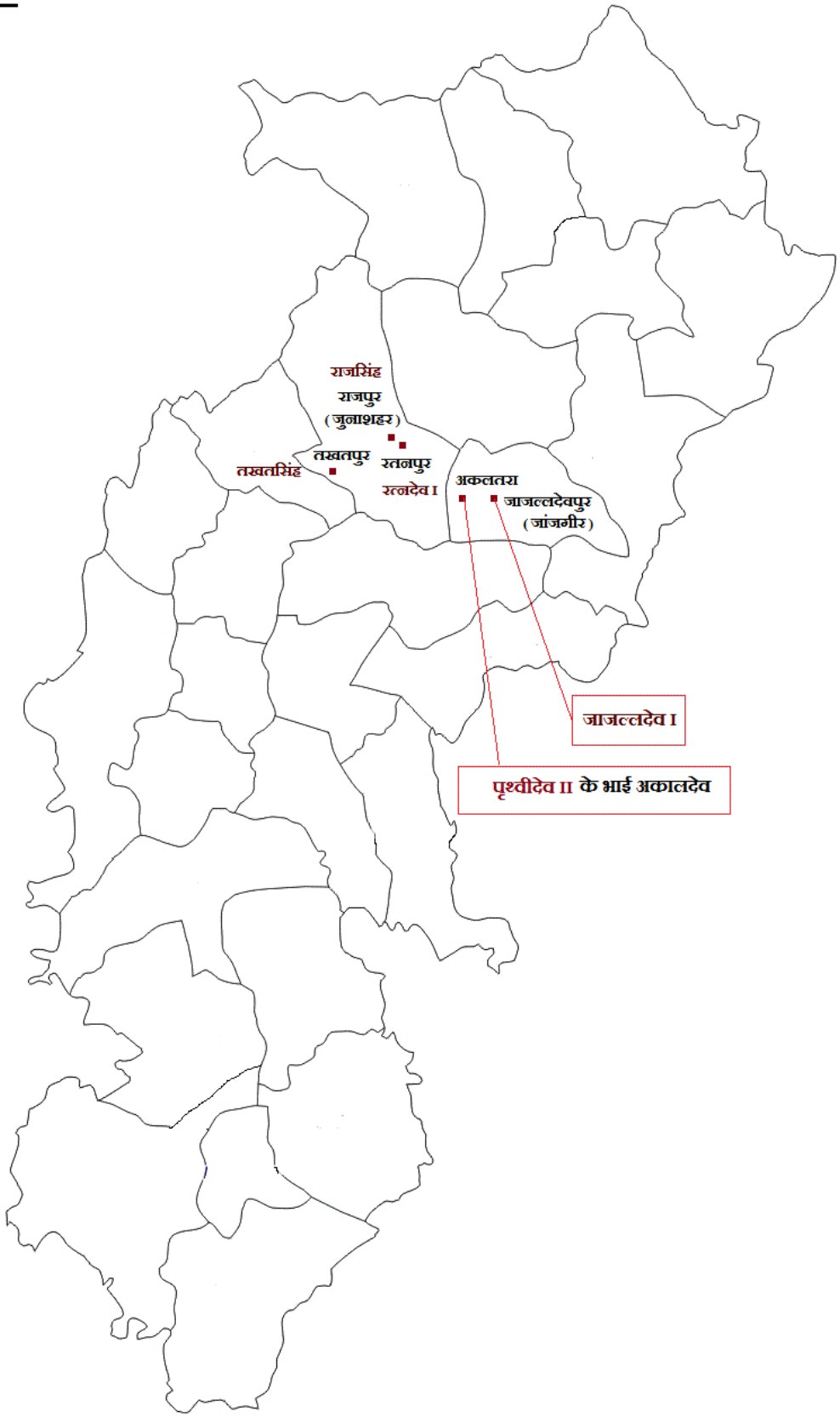
राजसिंह
राजपुर
(जुनाशहर)
तखतपुर
रतनपुर
तखतसिंह
रत्नदेव I
अकलतरा
जाजल्लदेवपुर
(जांजगीर)
जाजल्लदेव I
पृथ्वीदेव II के भाई अकालदेव

राजधानी

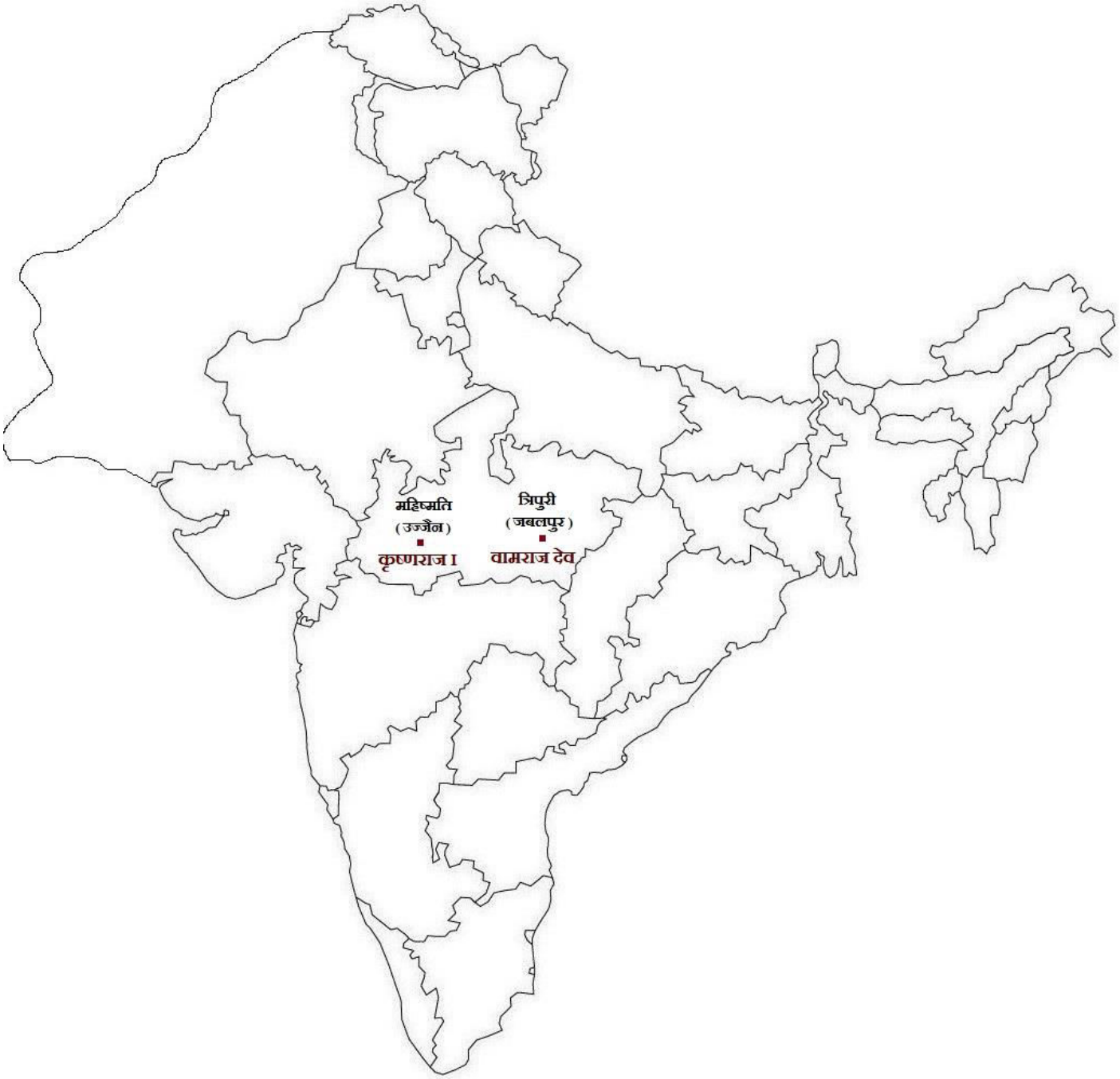

राजधानी

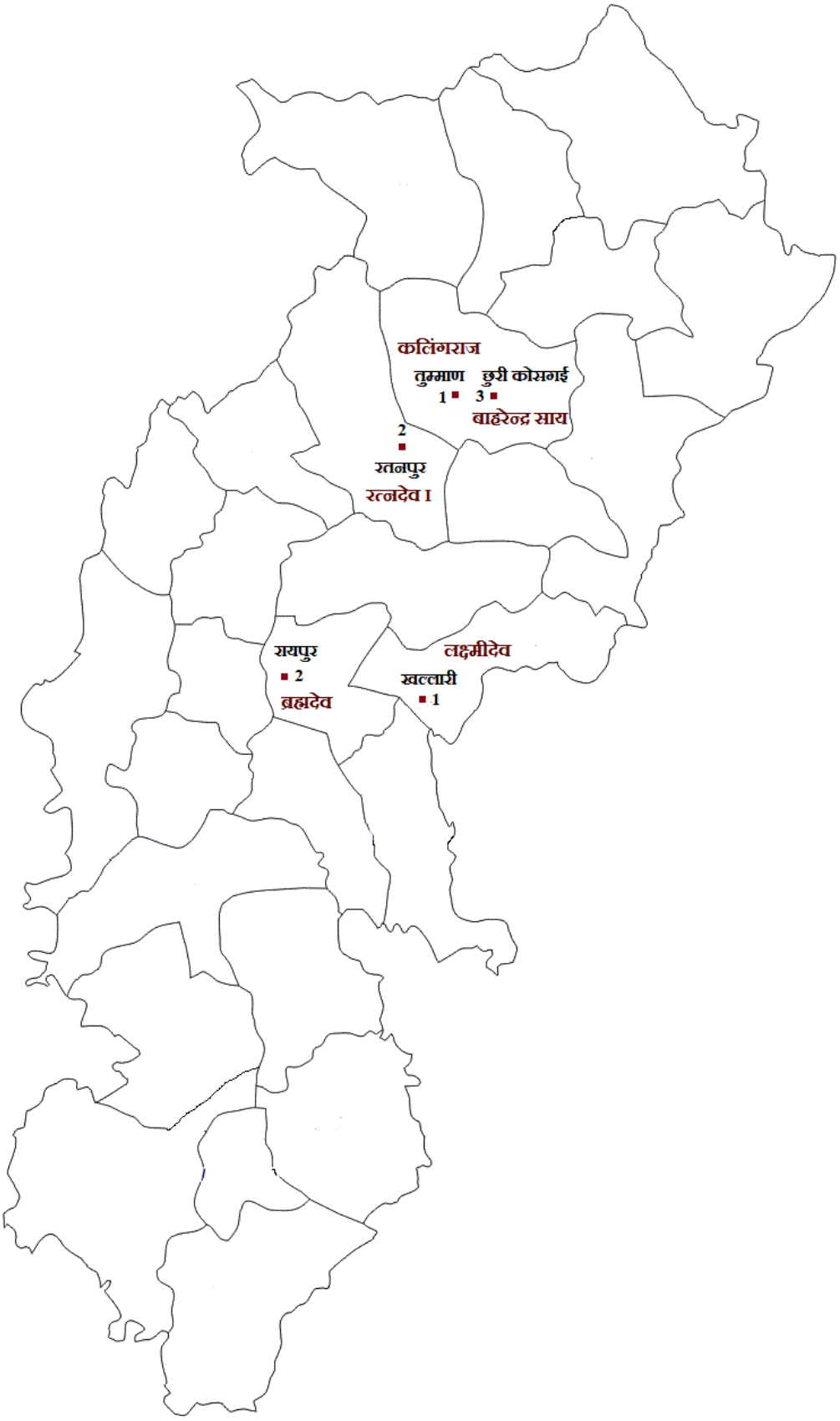
कलिंगराज
तुम्माण
1
छुरी कोसगई
3
बाहरेन्द्र साय
2
रतनपुर
रत्नदेव I
गयपुर
2
ब्रह्मदेव
लक्ष्मीदेव
खल्लारी
1

मंदिर निर्माण (स्थापत्य)

क्र.	शासक	स्थापत्य (मंदिर)	स्थान	जिला
1	कलिंगराज	महिषाशुर मर्दिनी मंदिर (महामाया मंदिर)	चैतुरगढ़	कोरबा
2	रत्नदेव I	तालाबों का जाल	रतनपुर	बिलासपुर
3		गज किला (हाथी किला)	रतनपुर	बिलासपुर
4		महामाया मंदिर	रतनपुर	बिलासपुर
5		नानादेव कुल भूषित मंदिर (नानवर्ण विचित्र रत्नखचिम मंदिर)	रतनपुर	बिलासपुर
6		बमकेश्वर महादेव मंदिर	तुम्माण	कोरबा
7		महिषाशुर मर्दिनी मंदिर	लाफागढ़	कोरबा
8		पातालेश्वर (केदारेश्वर) महादेव मंदिर	मल्हार	बिलासपुर
9	पृथ्वीदेव I	पृथ्वी देवेश्वर महादेव मंदिर	तुम्माण	कोरबा
10		रतनपुर का विशाल तालाब	रतनपुर	बिलासपुर
11		चतुष्किका (चार खम्भों वाला मण्डप) (बमकेश्वर महादेव मंदिर के भीतर)	तुम्माण	कोरबा
12	जाजल्लदेव I	नकटा मंदिर (विशाल विष्णुमंदिर)	जांजगीर	जांजगीर – चाम्पा
13		जांजगीर का विशाल तालाब	जांजगीर	जांजगीर – चाम्पा
14	रत्नदेव III	लखनीदेवी मंदिर (1165)	रतनपुर	बिलासपुर
15		एकवीरा माता मंदिर	रतनपुर	बिलासपुर
16		पूरासाति शिव मंदिर	रतनपुर	बिलासपुर
17		मठ मंदिर	रतनपुर	बिलासपुर
18	बाहरेन्द्र साय	चैतुरगढ़ का किला	लाफागढ़	कोरबा
19		कोसगई माता मंदिर	छुरी कोसगई	कोरबा
20	कल्याण साय	श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर (गज किला के भीतर)	रतनपुर	बिलासपुर
21	राजसिंह	हवामहल	रतनपुर	बिलासपुर
22		बादलमहल	रतनपुर	बिलासपुर

मंदिर निर्माण (स्थापत्य)

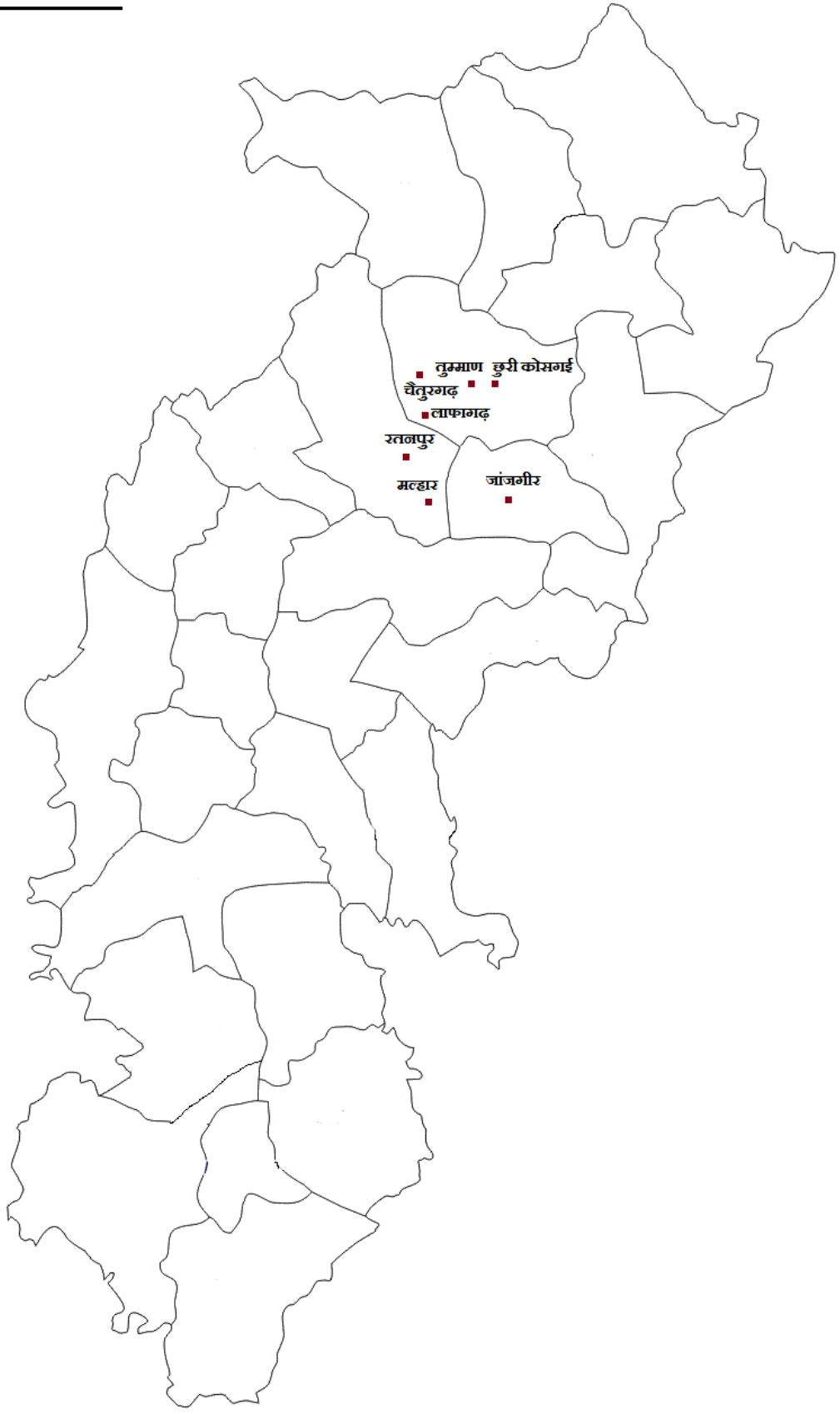

मंदिर निर्माण (स्थापत्य)

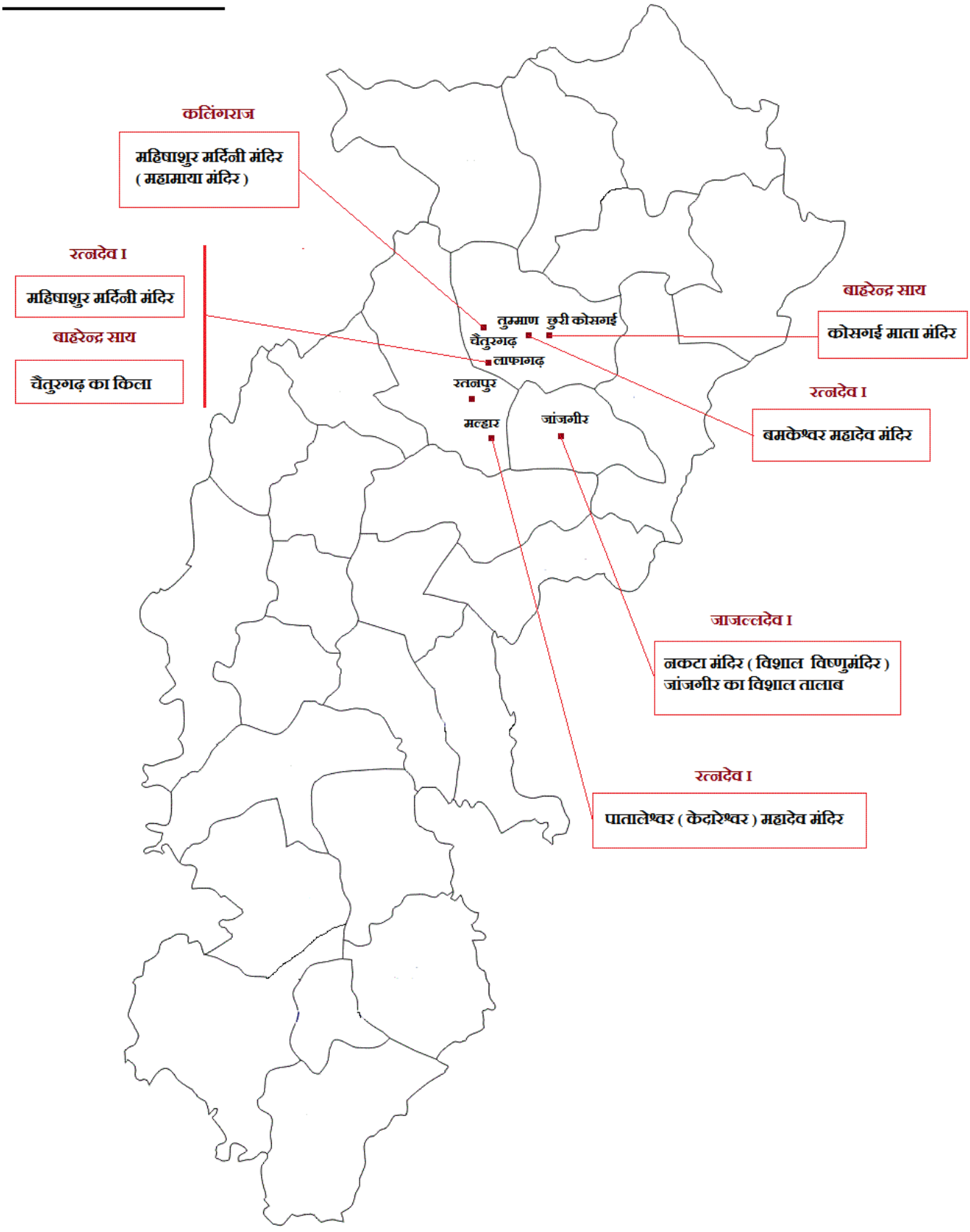

मंदिर निर्माण (स्थापत्य)

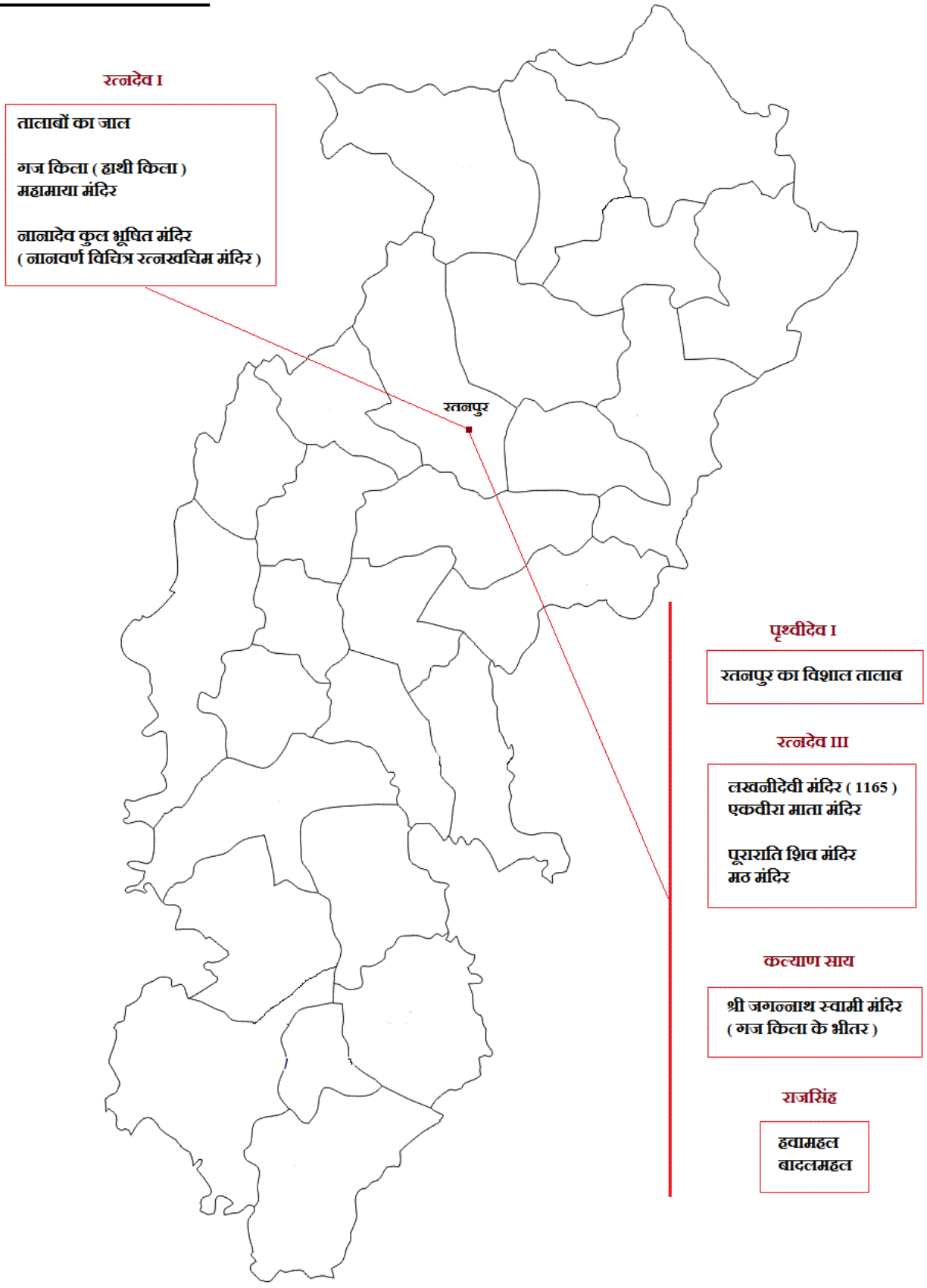

मंदिर जीर्णोद्धार

क्र.	शासक	मंदिर	स्थान	संस्थापक
1	जाजल्लदेव I	पाली का शिव मंदिर	पाली	विक्रमादित्य (बाणवंश)
2	पृथ्वीदेव II	राजीवलोचन मंदिर (जगतपाल)	राजिम	बिलासतुंग (नलनागवंश)
3	रत्नदेव III	लखनेश्वर महादेव मंदिर (गंगाधरराव)	खरौद	ईशानदेव (पाण्डु वंश)

तालाब निर्माण

क्र.	शासक	तालाब	स्थान	जिला
1	रत्नदेव I	तालाबों का जाल	रतनपुर	बिलासपुर
2	पृथ्वीदेव I	रतनपुर का विशाल तालाब	रतनपुर	बिलासपुर
3	जाजल्लदेव I	जांजगीर का विशाल तालाब	जांजगीर	जांजगीर – चाम्पा

मंदिर जीर्णोद्धार

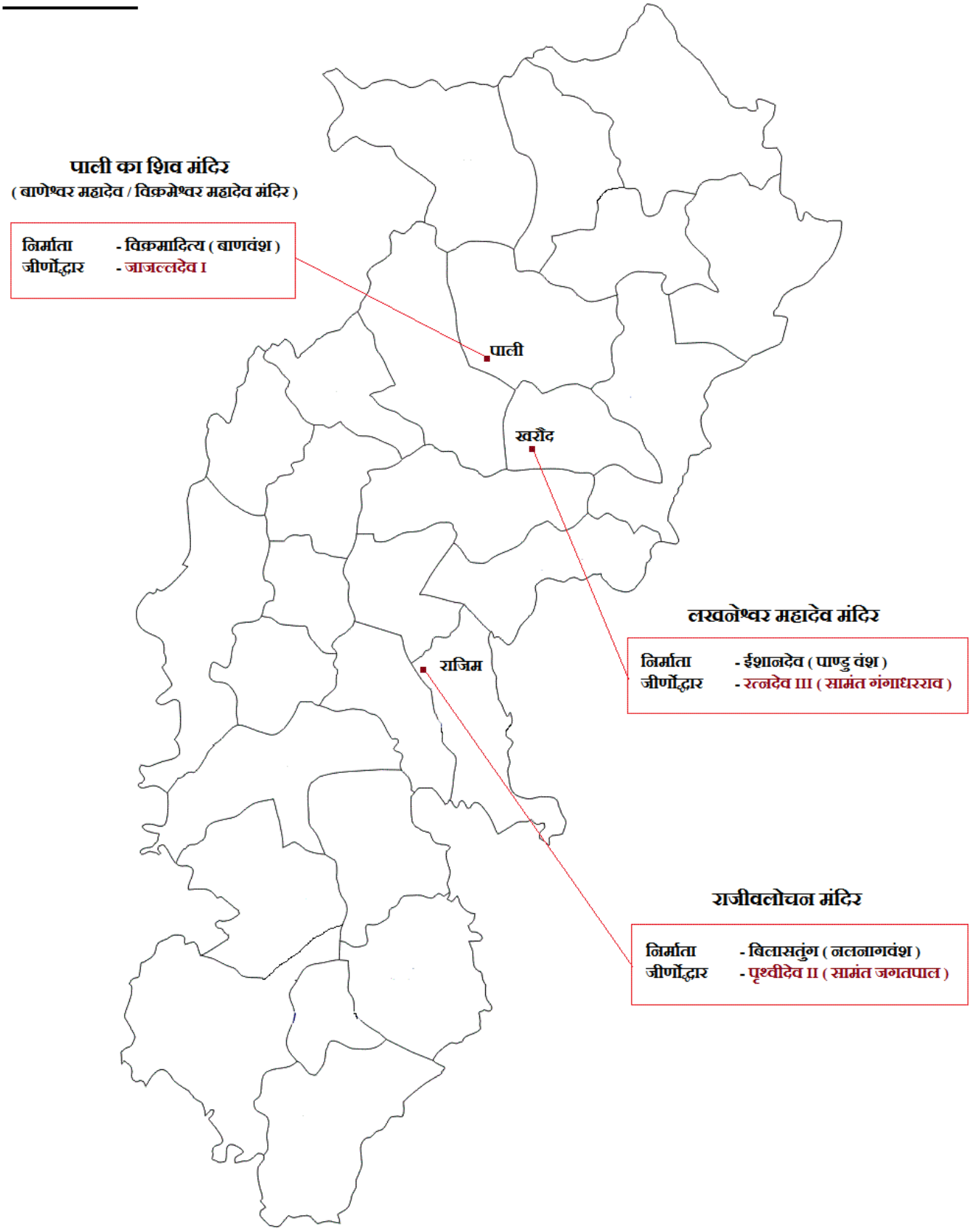
पाली का शिव मंदिर
(बाणेश्वर महादेव / विक्रमेश्वर महादेव मंदिर)
निर्माता - विक्रमादित्य (बाणवंश)
जीर्णोद्धार - जाजल्लदेव I
पाली
खरौद
लखनेश्वर महादेव मंदिर
निर्माता - ईशानदेव (पाण्डु वंश)
जीर्णोद्धार - रत्नदेव III (सामंत गंगाधरराव)
राजिम
राजीवलोचन मंदिर
निर्माता - विलासतुंग (नलनागवंश)
जीर्णोद्धार - पृथ्वीदेव II (सामंत जगतपाल)

तालाब निर्माण

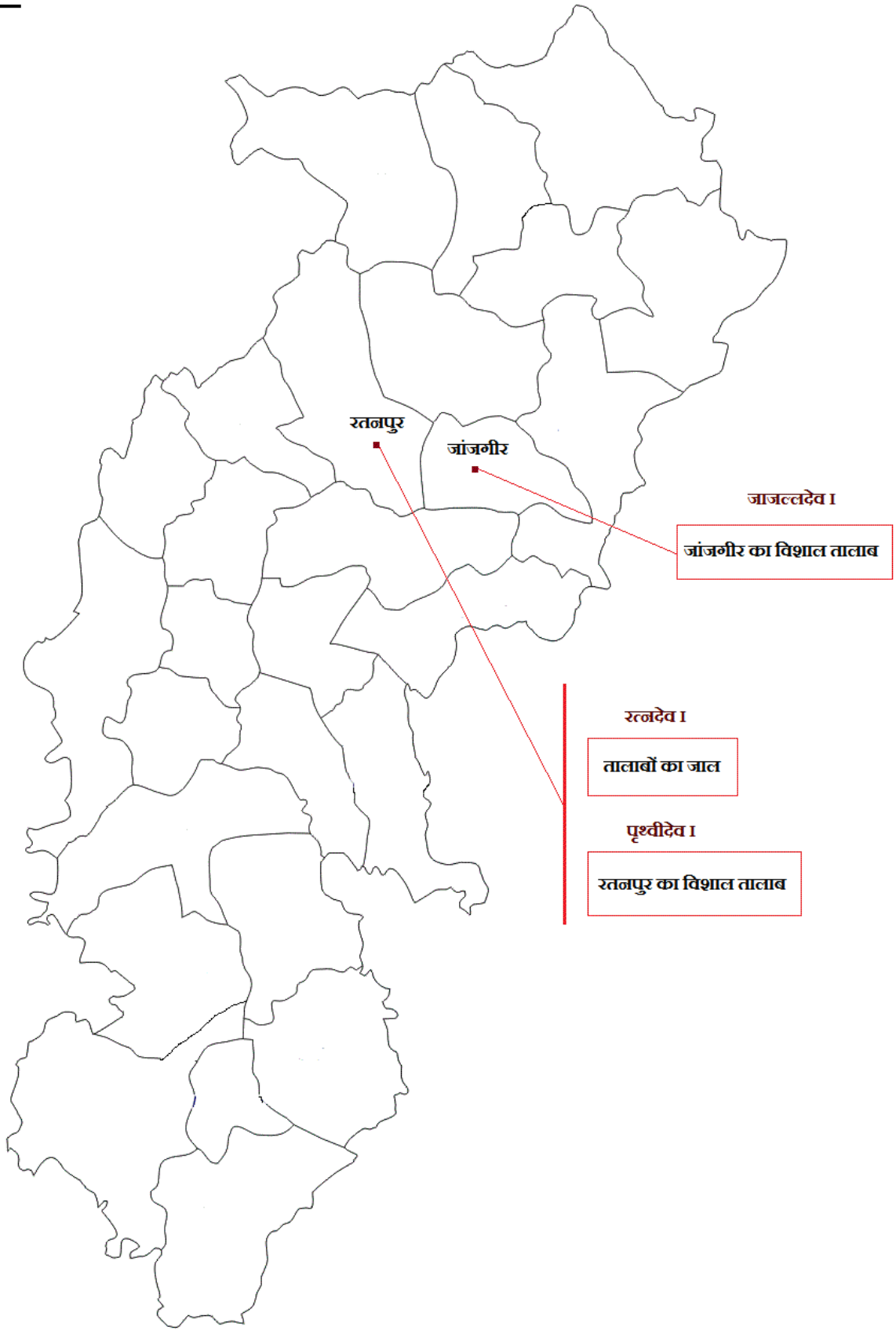
रतनपुर
जांजगीर
जाजल्लदेव I
जांजगीर का विशाल तालाब
रत्नदेव I
तालाबों का जाल
पृथ्वीदेव I
रतनपुर का विशाल तालाब

युद्ध (विजय अभियान)

क्र.	शासक	विरुद्ध शासक	राजधानी	विवरण
1	शंकरगण द्वितीय (मुग्धतुंग) (त्रिपुरी कल्चुरी)	**विक्रमादित्य** (बाणवंश)	पाली	**बिलहरी अभिलेख (जबलपुर)** ▪ कोकल्ल I के 18 पुत्रों में से सबसे बड़ा पुत्र ▪ 900 ई. में शंकरगण द्वितीय (मुग्धतुंग) ने कोसल के सोमवंशी शासक से पाली जीता था | ▪ 900 ई. में शंकरगण द्वितीय (मुग्धतुंग) ने कोसल के बाणवंश के शासक **विक्रमादित्य** को पराजित किया था |
2	कमलराज	**उत्कल अभियान**	त्रिपुरी	▪ गांगेयदेव (त्रिपुरी कल्चुरी वंश) को **उत्कल अभियान (उड़ीसा अभियान)** में सैन्य सहायता प्रदान किया | ▪ **उत्कल अभियान से वापस लौटते समय कमलराज ने** साहिल्ल नामक व्यक्ति को अपने साथ लाया, जिसने राज्य विस्तार किया |
3	जाजल्लदेव I	**गोपालदेव** (फणिनाग वंश)	कवर्धा	जाजल्लदेव के अधीन शासन किया |
		भुजबल	स्वर्णपुर	**स्वर्णपुर** के शासक **भुजबल** को पराजित किया |
		सोमेश्वर I (छिंदक नागवंश)	बारसूर	▪ छिंदक नागवंशी शासक सोमेश्वर I को पराजित किया तथा सपरिवार कैद किया | ▪ माता **गुंडमहादेवी** के अनुग्रह पर कैद से मुक्त किया |
4	रत्नदेव II	**अनंतवर्मन चोडगंग** (गंग वंश)	तोशली (कलिंग)	**शिवरीनारायण का युद्ध** रत्नदेव II ने उड़ीसा के गंग वंश के शासक अनंतवर्मन चोडगंग को पराजित किया |
		गयाकर्ण (त्रिपुरी कल्चुरी)	त्रिपुरी	त्रिपुरी अधिसत्ता को अस्वीकार कर **स्वतंत्र शासन** की शुरुवात किया |
5	पृथ्वीदेव II	**जटेश्वर** (कलिंग शासक)	तोशली (कलिंग)	पृथ्वीदेव II ने सामंत **ब्रह्मदेव** के नेतृत्व में **जटेश्वर (कलिंग शासक)** को पराजित किया |
6	जाजल्लदेव II	**जयसिंह** (त्रिपुरी कल्चुरी)	त्रिपुरी	**शिवरीनारायण का युद्ध** **जयसिंह** ने जाजल्लदेव II के साम्राज्य पर आक्रमण किया तथा जाजल्लदेव II ने जयसिंह को पराजित किया | इस आक्रमण को सामंत **उल्हानदेव** के द्वारा असफल किया गया |
7	बाहरेन्द्र साय	महमूद खिलजी	मांडू	▪ बाहरेन्द्र साय पर मांडू का महमूद खिलजी (पठान शासक) ने आक्रमण किया | ▪ बाहरेन्द्र साय ने पठानों को सोन नदी तक खदेड़ दिया | ▪ महमूद खिलजी **छत्तीसगढ़ में आक्रमण करने वाला पहला मुस्लिम** था |

8	रघुनाथ सिंह	**भास्कर पंत** (रघुजी प्रथम का सेनापति)	नागपुर	▪ **भास्कर पंत** - 1741 में मराठा शासक रघुजी प्रथम का सेनापति **भास्कर पंत** उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया | ▪ **कल्याण गिरि गुंसाई** - **भास्कर पंत** ने मराठा प्रतिनिधि के रूप में रतनपुर में **कल्याण गिरि गुंसाई** की नियुक्ति की | ▪ **मीरहबीब** - छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु **मीरहबीब** ने मराठों को आमंत्रण भेजा | ▪ रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया | ▪ अंतिम स्वतंत्र कल्चुरी शासक - **रघुनाथ सिंह (1732 – 1741)** ▪ मराठा अधीन प्रथम शासक - **रघुनाथ सिंह (1741 – 1745)**
9	ब्रह्मदेव राय	मोनिंगदेव (फणी नागवंश)	कवर्धा	**1413 में** ब्रह्मदेव ने फणी नागवंशी शासक मोनिंगदेव को हराया	
10	अमर सिंह	रघुजी भोंसले II	नागपुर	▪ **रघुजी भोंसले II** - 1750 में मराठा शासक **रघुजी भोंसले II** रायपुर कल्चुरी पर आक्रमण किया | ▪ **अमर सिंह** ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया | ▪ अंतिम स्वतंत्र कल्चुरी शासक - **अमर सिंह (1741 – 1750)** ▪ अंतिम रायपुर शासक - **अमर सिंह** ▪ मराठा अधीन प्रथम शासक - **अमर सिंह (1750 – 1753)**

प्रशासनिक व्यवस्था (प्रणाली)

क्र.	शासक	प्रणाली
1	बाहरेन्द्र साय	कोषागार व्यवस्था
2	कल्याण साय	जमाबंदी व्यवस्था राजस्व पुस्तिका
3	लक्ष्मण साय	बहीखाता व्यवस्था बजट प्रणाली (लेखा – जोखा)

कल्याण साय का जमाबन्धी व्यवस्थता

- **अकबर** के **मनसबदार व्यवस्थता** (प्रशासन को सुव्यवस्थित करने के लिए) के तर्ज पर **कल्याण साय** ने **जमाबन्धी व्यवस्थता** (छत्तीसगढ़ में प्रशासन को सुव्यवस्थित करने के लिए) चलाया |
- राज्य को 3 प्रशासनिक भागो में बांटा गया :

	गाँव	→	बरहा	→ गढ़
मुखिया :	गोटिया		दाऊ	दीवान

प्रशासनिक इकाई	मुखिया	पैमाना
राज्य (मण्डल)	शासक	
गढ़	दीवान	36 गढ़ = राज्य (मण्डल)
बरहा	दाऊ	7 बरहा = 1 गढ़ (84 गाँव = 1 गढ़)
गाँव (प्राथमिक प्रणाली)	गोटिया	12 गाँव = 1 बरहा

युद्ध (विजय अभियान)

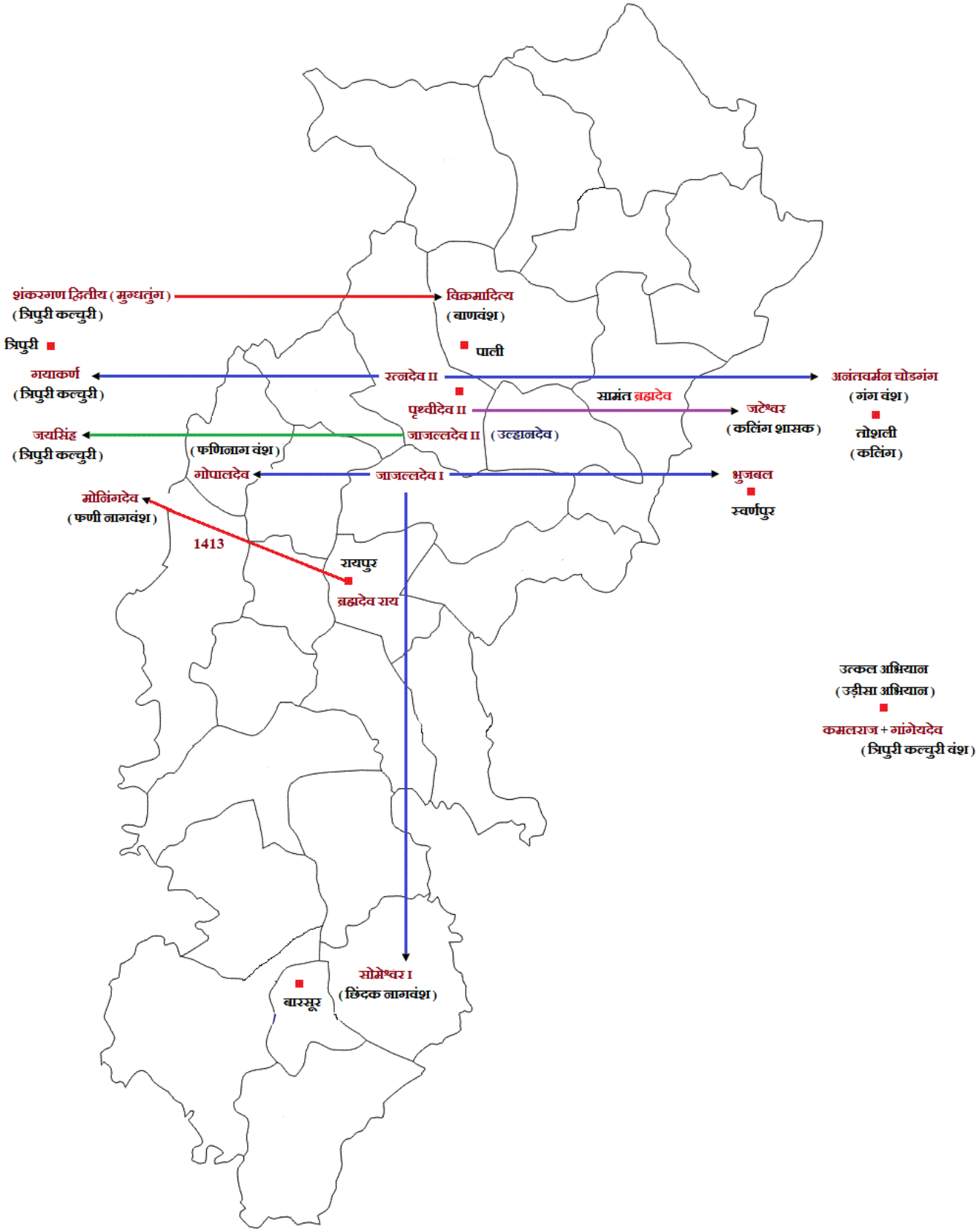
शंकरगण द्वितीय (मुग्धतुंग)
(त्रिपुरी कल्चुरी)
विक्रमादित्य
(बाणवंश)
त्रिपुरी
पाली
गयाकर्ण
(त्रिपुरी कल्चुरी)
रत्नदेव II
अनंतवर्मन चोडगंग
(गंग वंश)
सामंत ब्रह्मदेव
पृथ्वीदेव II
जटेश्वर
(कलिंग शासक)
तोशली
(कलिंग)
जयसिंह
(त्रिपुरी कल्चुरी)
जाजल्लदेव II (उल्हानदेव)
(फणिनाग वंश)
गोपालदेव
जाजल्लदेव I
भुजबल
स्वर्णपुर
मोनिंगदेव
(फणी नागवंश)
1413
रायपुर
ब्रह्मदेव राय
उत्कल अभियान
(उड़ीसा अभियान)
कमलराज + गांगेयदेव
(त्रिपुरी कल्चुरी वंश)
सोमेश्वर I
(छिंदक नागवंश)
बारसूर

बाहरेन्द्र साय के विजय अभियान

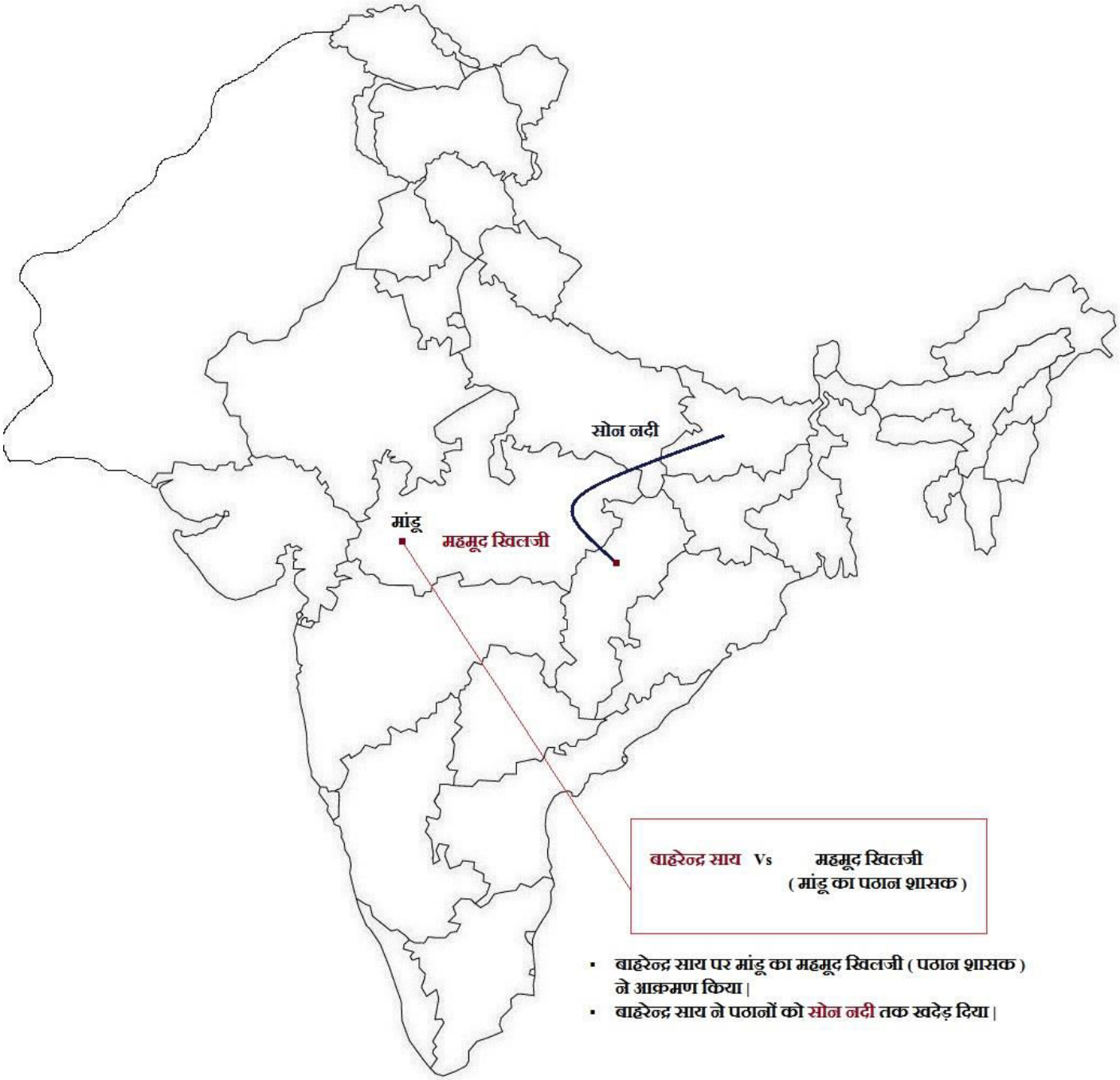

- बाहरेन्द्र साय पर मांडू का महमूद खिलजी (पठान शासक) ने आक्रमण किया |
- बाहरेन्द्र साय ने पठानों को सोन नदी तक खदेड़ दिया |

युद्ध (विजय अभियान)

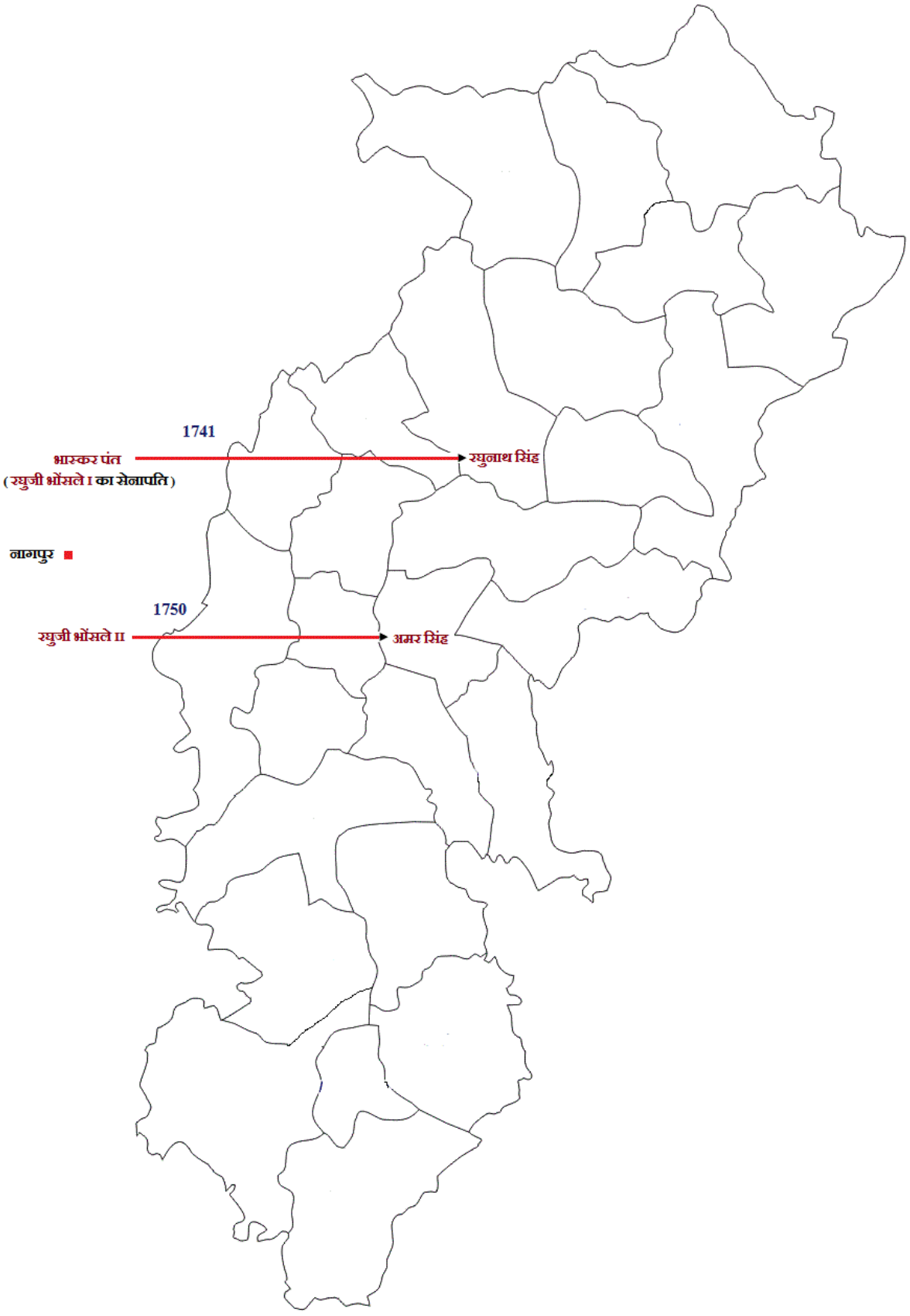

रघुनाथ सिंह (1732 – 1741)

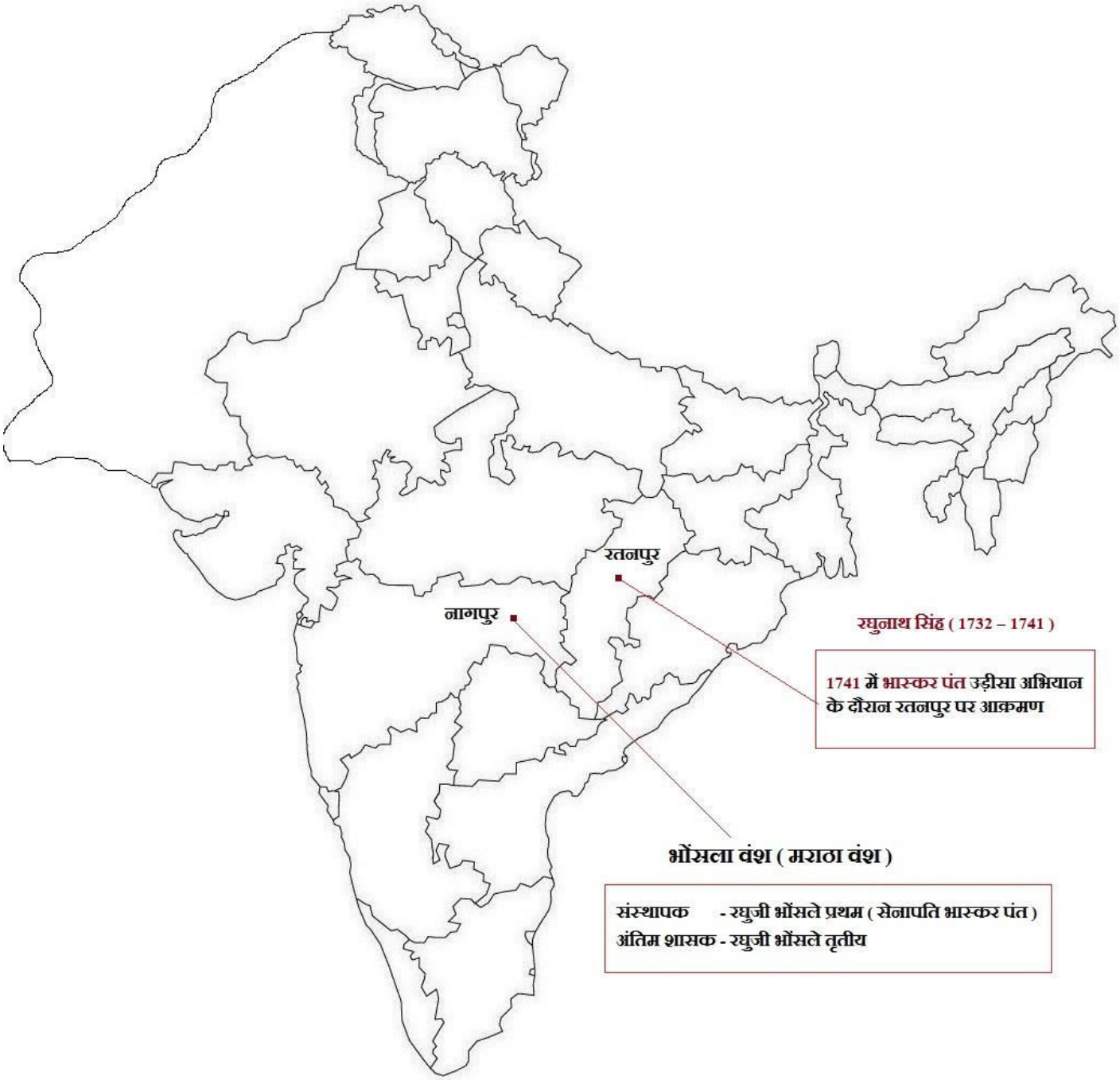

अमर सिंह (1741 – 1750)

कल्चुरी वंश के प्रमुख शिलालेख

क्र.	शासक	शिलालेख / ताम्रपत्र	स्थान	जिला
1	पृथ्वीदेव I	आमोदा ताम्रपत्र	चाम्पा (हसदेव नदी)	जांजगीर – चाम्पा
		रायपुर ताम्रपत्र	रायपुर	रायपुर
2	जाजल्लदेव I	रतनपुर शिलालेख	रतनपुर	बिलासपुर
3	रत्नदेव II	अकलतरा ताम्रपत्र	अकलतरा	जांजगीर – चाम्पा
		खरौद ताम्रपत्र	खरौद	जांजगीर – चाम्पा
		पारागांव ताम्रपत्र	पारागांव	रायपुर
		शिवरीनारायण ताम्रपत्र	शिवरीनारायण	जांजगीर – चाम्पा
		सरखोर ताम्रपत्र	सरखोर	बलौदा – बाज़ार
4	पृथ्वीदेव II	कोटागढ़	कोटागढ़	बिलासपुर
		अकलतरा	अकलतरा	जांजगीर – चाम्पा
		राजिम	राजिम	गरियाबंद
		बिलाईगढ़	बिलाईगढ़	बलौदा – बाज़ार
		कोनी	कोनी	बिलासपुर
		आमोदा	चाम्पा (हसदेव नदी)	जांजगीर – चाम्पा
		रतनपुर	रतनपुर	बिलासपुर
		पारागांव	पारागांव	रायपुर
		घोटिया	घोटिया	राजनांदगांव
5	जाजल्लदेव II	आमोदा शिलालेख	चाम्पा (हसदेव नदी)	जांजगीर – चाम्पा
		मल्हार शिलालेख	मल्हार	बिलासपुर
		शिवरीनारायण शिलालेख	शिवरीनारायण	जांजगीर – चाम्पा
6	रत्नदेव III	खरौद शिलालेख	खरौद	जांजगीर – चाम्पा
7	बाहरेन्द्र साय	कोसगई शिलालेख	छुरी कोसगई	कोरबा
8	ब्रह्मदेव	रायपुर शिलालेख	रायपुर	रायपुर
		खल्लारी शिलालेख	खल्लारी	महासमुंद

कल्चुरी वंश के प्रमुख शिलालेख / ताम्रपत्र

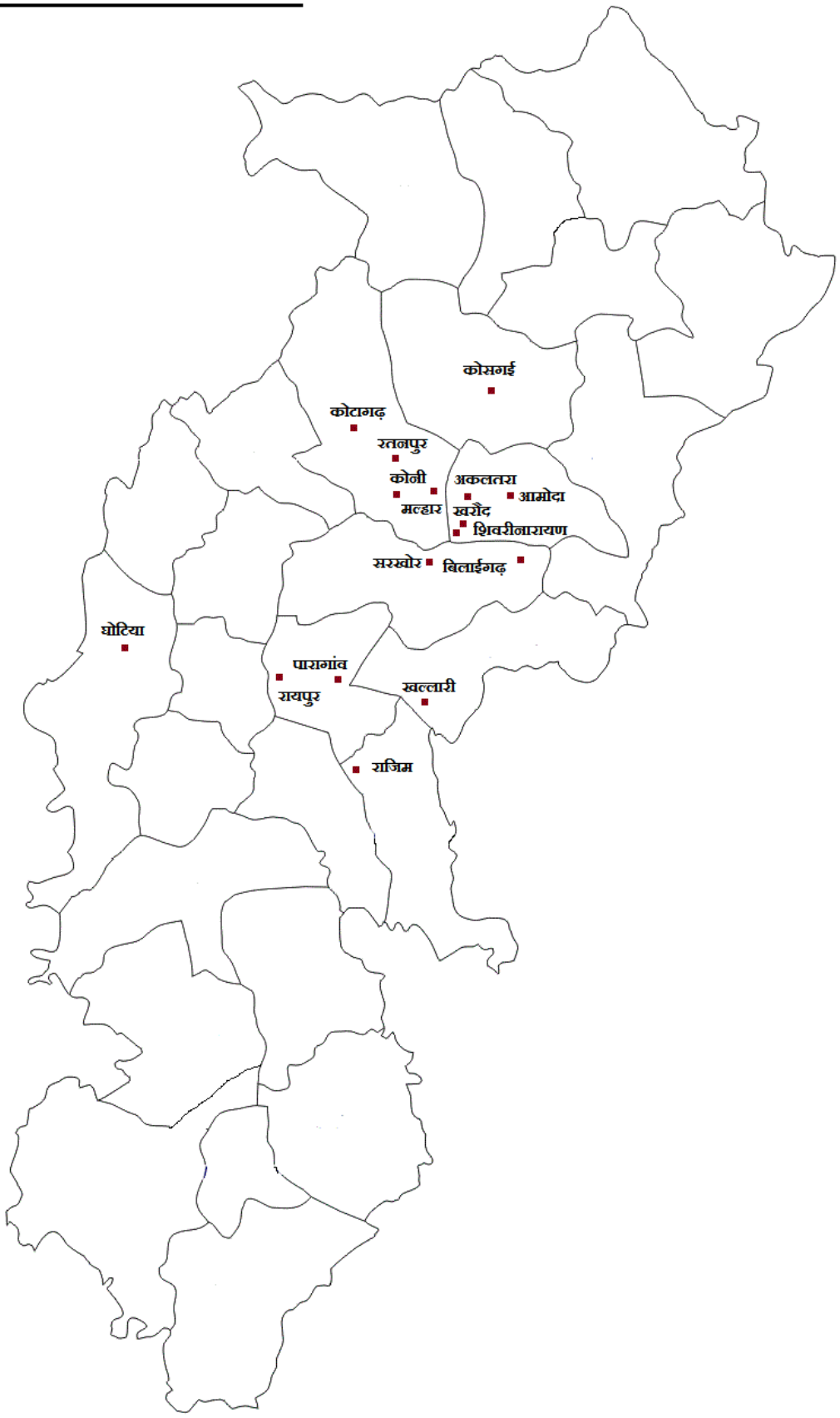

कल्चुरी वंश के प्रमुख शिलालेख / ताम्रपत्र

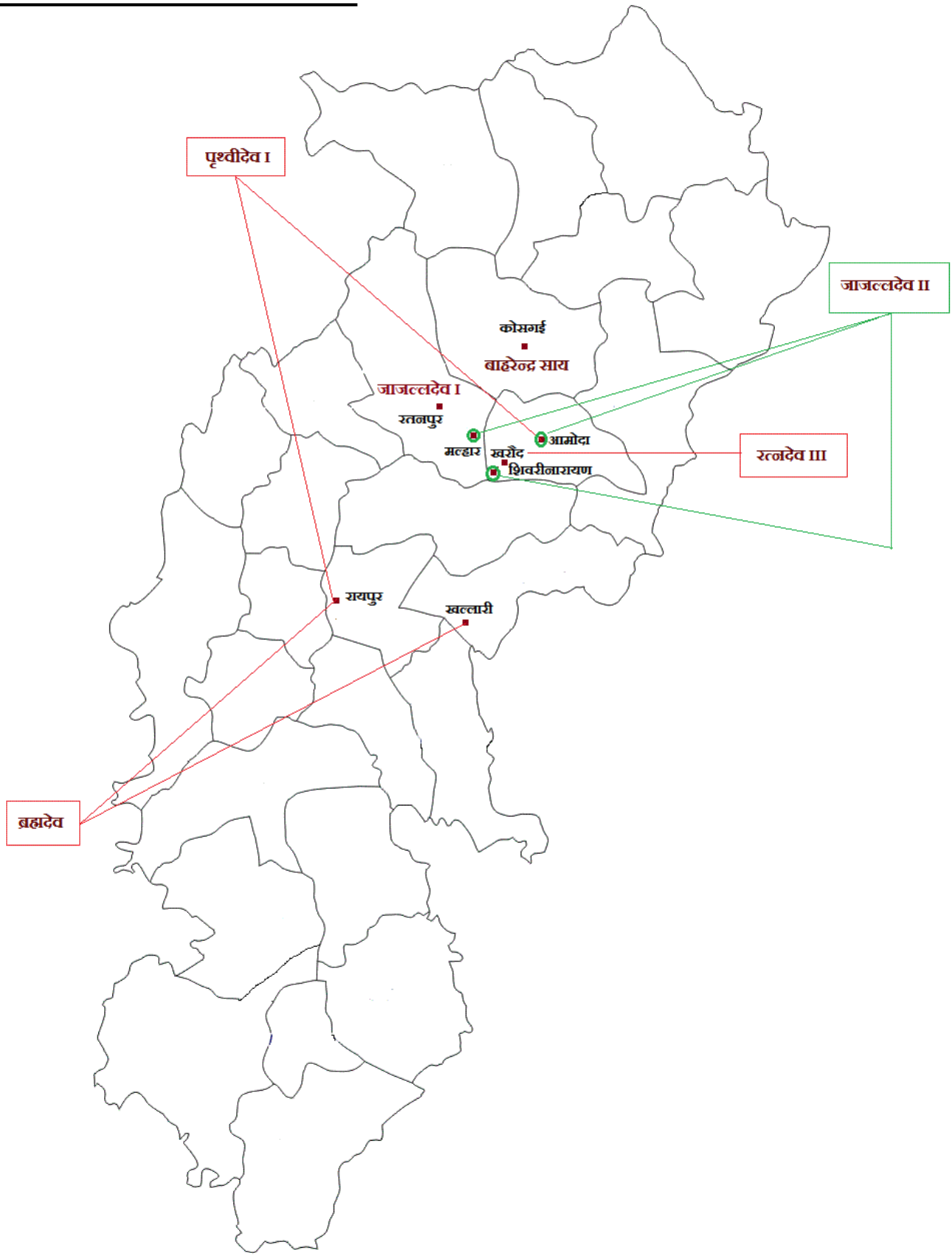

रत्नदेव II के प्रमुख ताम्रपत्र

पृथ्वीदेव II के प्रमुख शिलालेख

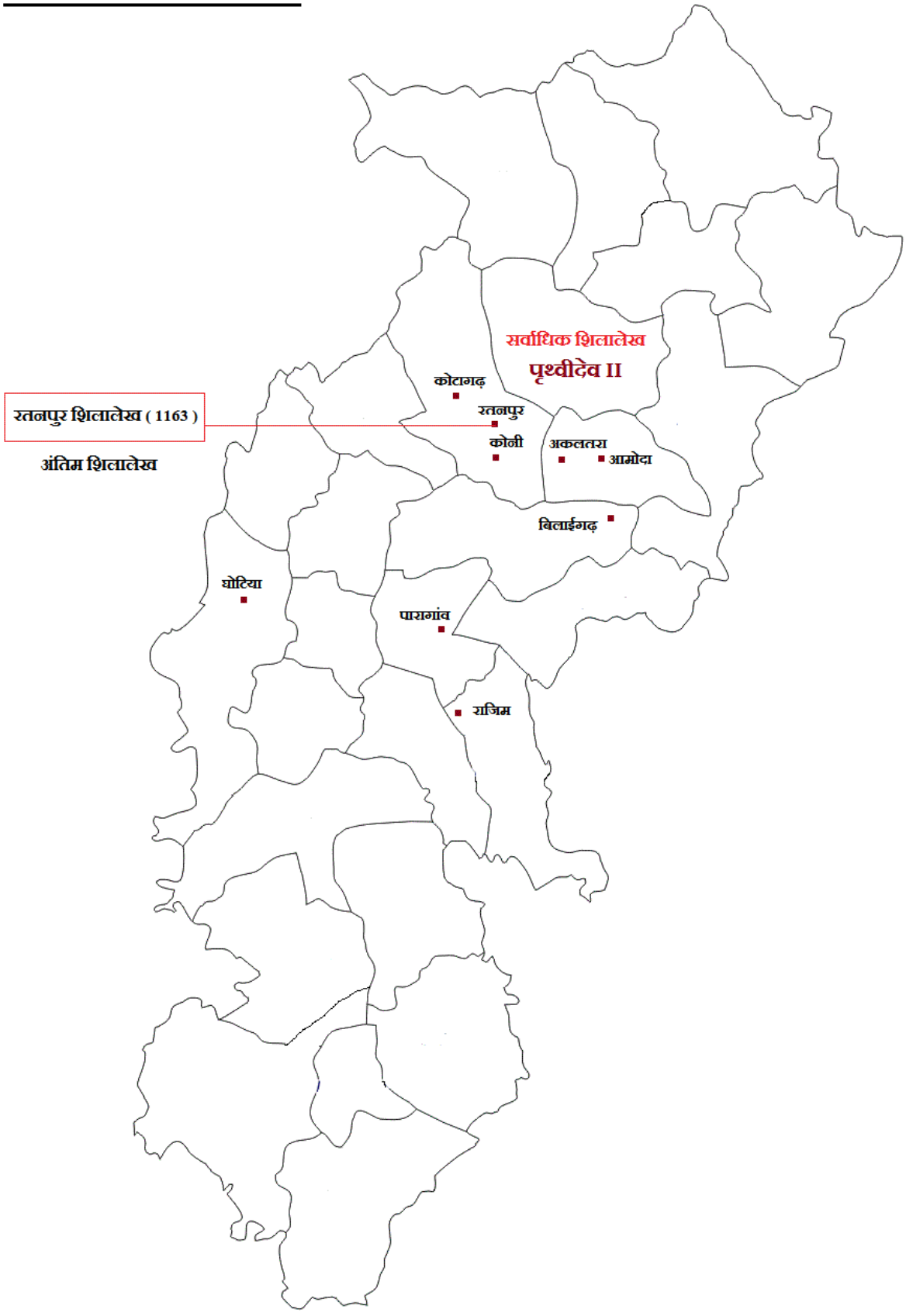

कल्चुरीकालीन प्रशानिक व्यवस्था

कल्चुरीकालीन प्रशानिक व्यवस्था

मिस्टर चिस्म (1868)

- बिलासपुर के **प्रथम अंग्रेज बंदोबस्त अधिकारी**
- कल्याण साय की **राजस्व पुस्तिका** में वर्णित **जमाबंदी व्यवस्था** के आधार पर **मिस्टर चिस्म** ने 1868 कल्चुरी शासन व्यवस्था पर प्रकाश डाला तथा छत्तीसगढ़ को **36 गढ़ों** में विभाजित किया |
- प्रशासन की सबसे बड़ी इकाई - मण्डल
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई - ग्राम

कल्याण साय का जमाबन्धी व्यवस्थता

- **अकबर** के **मनसबदार व्यवस्थता** (प्रशासन को सुव्यवस्थित करने के लिए) के तर्ज पर **कल्याण साय** ने **जमाबन्धी व्यवस्थता** (छत्तीसगढ़ में प्रशासन को सुव्यवस्थित करने के लिए) चलाया |
- राज्य को 3 प्रशासनिक भागो में बांटा गया :

	गाँव	→	बरहा	→ गढ़
मुखिया :	गोटिया		दाऊ	दीवान

प्रशासनिक इकाई	मुखिया	विशेष
मण्डल	महामण्डलेश्वर	36 गढ़ = मण्डल (राष्ट्र) प्रशासन की सबसे बड़ी इकाई महामण्डलेश्वर – एक लाख गाँव का स्वामी
गढ़	दीवान / गढ़पति	7 बरहा = 1 गढ़ (84 गाँव = 1 गढ़)
बरहा	दाऊ	12 गाँव = 1 बरहा
गाँव (प्राथमिक प्रणाली)	गोटिया	प्रशासन की सबसे छोटी इकाई

- **गोटियां** का पद मराठा शासन तक बना रहा |

स्थानीय स्वशासन (पंचकुल)

- स्थानीय स्वशासन के लिए **पंचकुल** की व्यवस्था की गयी |
- पंचकुल में सदस्यों की संख्या - 5
- पंचकुल के सदस्य - महत्तर
- पंचकुल का अध्यक्ष - महत्तम

कल्चुरीकालीन अधिकारीगण

मंत्रिमंडल

क्र.	मंत्रिमंडल	कार्य
1	महामात्य (महामंत्री)	प्रधानमंत्री राजा का प्रशासनिक सलाहकार
2	महासंधि विग्रहक	विदेश मंत्री
3	महाक्षपटलिक	राजस्वमण्डल मंत्री वित्त मंत्री
4	महाप्रभातृ	प्रमुख लगान अधिकारी राजस्व प्रबंधक जमाबंधी विभाग का प्रमुख
5	महापुरोहित	राजगुरु धार्मिक विभाग का प्रमुख
6	महाप्रतिहार	राजा के अंगरक्षक दल का प्रमुख संचार विभाग का प्रमुख

अधिकारी

क्र.	विभाग	अधिकारी	कार्य
1	**सचिवालय**	अमात्य (महाध्यक्ष)	सचिवालय प्रमुख
2		संधिविग्रहाधिकरण	विदेश विभाग का अधिकारी
3	**राजस्व विभाग**	शौल्किक	कर संग्रहण अधिकारी
4	**न्याय व्यवस्था**	दाण्डिक	सर्वोच्च न्यायधीश
5	**रक्षा विभाग**	साधनिक (महासेनापति)	सेना प्रमुख
6		महापीलुपति	हस्तिसेना प्रमुख
7		महाश्वसाधनिक	अश्वसेना प्रमुख
8		महाकोट्टपाल	दुर्ग (किले) का रक्षक प्रमुख
9		भाट	सैनिक
10	**पुलिस प्रबंधन**	महादण्डपाशिक	सर्वोच्च पुलिस अधिकारी
11		दुष्टसाधक / चोरद्धारणिक / चाट	पुलिस
12	**यातायात प्रबंधन**	गमागमिक	यातायात अधिकारी
13	**स्थानीय प्रशासन**	पुरप्रधान	नगर प्रमुख
14		ग्राम कुट / ग्राम भोगिक	ग्राम प्रमुख
15	**धर्म विभाग**	महापुरोहित	धार्मिक विभाग का प्रमुख
16		धर्मलेखी	दान पत्रों का लेखा – जोखा

राजधानी

क्र.	कल्चुरी वंश	शासक	राजधानी	जिला
1	रतनपुर के **कल्चुरी वंश**	कलिंगराज	तुम्माण	कोरबा
2		रत्नदेव I	रतनपुर	बिलासपुर
3		बाहरेन्द्र साय	छुरी कोसगई	कोरबा
4	रायपुर के **कल्चुरी वंश**	लक्ष्मीदेव	खल्लारी	महासमुंद
5		ब्रह्मदेव	रायपुर	रायपुर

सामाजिक जीवन

सामाजिक व्यवस्था

- परिवार - पितृ सत्तात्मक
- शासन व्यवस्थता - राजतंत्र

समृद्ध सामाजिक स्थिति

- सामाजिक दृष्टि से समृद्ध थे |
- उच्च कोटि का जीवन
- सामाजिक जीवन सरल व शांत
- समानता , स्वतंत्रता एवं बंधुता की भावना

वर्ण व्यवस्था

- **वर्ण व्यवस्था** का प्रचलन
- ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य का उल्लेख मिलता है , परंतु शुद्र का नहीं |

स्त्रियों की दशा

- स्त्रियों की स्थिति सम्मानजनक (**गुण्डमहादेवी शिलालेख**)
- रतनपुर स्थित **सती चौरा** इस बात का द्योतक है कि कल्चुरी वंश में सती प्रथा प्रचलित थी |
- बहु-पत्नी तथा सती – प्रथा का प्रचलन |

जनजातियाँ

- 43 प्रकार की जनजातियाँ पायी जाती थी |
- **गोंड** सबसे बड़ी जनजाति थी |

आर्थिक जीवन (अर्थव्यवस्था)

आर्थिक समृद्धि

- कल्चुरीकालीन अर्थव्यवस्था समृद्ध थी |
- ये कृषि , पशुपालन तथा व्यापार में उन्नत थे |

क्र.	अर्थव्यवस्था	विवरण
1	कृषि	▪ प्रमुख फसल - कपास , गेहूं , चावल , जौ ▪ भूमिकर - राजस्व आय का प्रमुख स्त्रोत ▪ युगा - सब्जी बेचने वालों को दिया जाने वाला परमिट
2	पशुपालन	▪ प्रमुख पशु - बैल , गाय , बकरी , भैंस , भेड़ , गधे , ऊँठ आदि का पालन ▪ उदाहरण - मंदिर की दीवारों में पशुओं का चित्रण
3	व्यापार	▪ उधोग - हस्तशिल्प उधोग , बुनकर उधोग , बर्तन निर्माण उधोग

राजस्व संग्रहण प्रणाली

क्र.	शासक	प्रणाली
1	बाहरेन्द्र साय	कोषागार व्यवस्था
2	कल्याण साय	जमाबंदी व्यवस्था राजस्व पुस्तिका
3	लक्ष्मण साय	बहीखाता व्यवस्था बजट प्रणाली (लेखा – जोखा)

राजस्व विभाग

क्र.	राजस्व अधिकारी	कार्य
1	महाक्षपटलिक	राजस्वमण्डल मंत्री वित्त मंत्री
2	महाप्रभातृ	प्रमुख लगान अधिकारी राजस्व प्रबंधक जमाबंधी विभाग का प्रमुख
3	शोल्किक	कर संग्रहण अधिकारी

मापन पद्धति

पद्धति	इकाई	मापन		
राज्य प्रशासन	गाँव : बरहा : गढ़ : मण्डल (राष्ट्र)	12 : 7 : 36 : 1	12 गाँव 7 बरहा 36 गढ़	= 1 बरहा = 1 गढ़ = 1 मण्डल (राष्ट्र)
मुद्रा मापन	कोड़ी : गण्डा : कोरी : दोगानी	4 : 5 : 16 : 1	4 कोड़ी 5 गण्डा 16 कोरी	= 1 गण्डा = 1 कोरी = 1 दोगानी
द्रव मापन	सेरी : पंसेरी : मन	5 : 8 : 1	5 सेरी 8 पंसेरी	= 1 पंसेरी = 1 मन
अनाज मापन	पोगाई : अधेलिया : कुरु : काठा : खाड़ी (खंडी) : गाढ़ा	2 : 2 : 2.5 : 20 : 20 : 20 : 1	1 पोगाई 1 अधेलिया 1 कुरु 1 काठा 1 खाड़ी 1 गाढ़ा	= 250 gm = 500 gm = 1 kg = 2.5 kg = 20 काठा = 50kg = 20 खाड़ी = 1000 kg

धार्मिक जीवन

धार्मिक सहिष्णुता

- धार्मिक स्थिति - धर्म – निरपेक्ष
- धार्मिक सहिष्णुता - शैव , वैष्णव , बौद्ध , जैन धर्मों को संरक्षण
- धर्म - **शैव धर्म**
- उपासक - **शक्ति / शाक्त**
- मंदिर - **शिव या माता**
- मंदिर द्वार पर स्थित प्रतिमा - **गजलक्ष्मी / शिवलिंग**
- मंदिर द्वार पर उत्कीर्ण - **ॐ नमः शिवाय**
- ताम्रपत्र का आरंभ - **ॐ नमः शिवाय**
- आराध्य देवता - **बमकेश्वर महादेव**
- आराध्य देवी - **महिषासुर मर्दिनी**
- कुलदेवी - **गजलक्ष्मी**

वल्लभाचार्य का जन्म

- 1593 ई. - कल्चुरी काल में वल्लभाचार्य का जन्म
- जन्म स्थान - चम्पारण (रायपुर)
- पत्नी - महालक्ष्मी
- रचना - भक्तिचिंतामणि
- **विशेष**
  - शुद्धद्वैतवाद के जनक
  - पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक
  - अष्टछाप के कवि
  - कल्चुरी शासक 'शंकर साय' के समकालीन

दूधाधारी मठ (रायपुर)

- **रामानंद** ने वैष्णव भक्ति को दक्षिण से उत्तर में लाया |
- **ब्रह्मदेव** ने महंत बलभद्रदास के नेतृत्व में रायपुर में दूधाधारी मठ का निर्माण करवाया |
- नामकरण - **दूधाधारीजी महाराज** के नाम पर

क्र.	दूधाधारी मठ	शासक	वंश
1	शिलान्यास	बलभद्रदास दूधाधारीजी महाराज (रामानंद)	वैष्णव धर्मगुरु
2	निर्माण	ब्रह्मदेव	रायपुर कल्चुरी वंश
3	जीर्णोधार	बिम्बजी भोंसले	मराठा वंश

मंदिर निर्माण (स्थापत्य)

क्र.	शासक	स्थापत्य (मंदिर)	स्थान	जिला
1	कलिंगराज	महिषाशुर मर्दिनी मंदिर (महामाया मंदिर)	चैतुरगढ़	कोरबा
2	रत्नदेव I	तालाबों का जाल	रतनपुर	बिलासपुर
3		गज किला (हाथी किला)	रतनपुर	बिलासपुर
4		महामाया मंदिर	रतनपुर	बिलासपुर
5		नानादेव कुल भूषित मंदिर (नानवर्ण विचित्र रत्नखचिम मंदिर)	रतनपुर	बिलासपुर
6		बमकेश्वर महादेव मंदिर	तुम्माण	कोरबा
7		महिषाशुर मर्दिनी मंदिर	लाफागढ़	कोरबा
8		पातालेश्वर (केदारेश्वर) महादेव मंदिर	मल्हार	बिलासपुर
9	पृथ्वीदेव I	पृथ्वी देवेश्वर महादेव मंदिर	तुम्माण	कोरबा
10		रतनपुर का विशाल तालाब	रतनपुर	बिलासपुर
11		चतुंष्किका (चार खम्भों वाला मण्डप) (बमकेश्वर महादेव मंदिर के भीतर)	तुम्माण	कोरबा
12	जाजल्लदेव I	नकटा मंदिर (विशाल विष्णुमंदिर)	जांजगीर	जांजगीर – चाम्पा
13		जांजगीर का विशाल तालाब	जांजगीर	जांजगीर – चाम्पा
14	रत्नदेव III	लखनीदेवी मंदिर (1165)	रतनपुर	बिलासपुर
15		एकवीरा माता मंदिर	रतनपुर	बिलासपुर
16		पूरारति शिव मंदिर	रतनपुर	बिलासपुर
17		मठ मंदिर	रतनपुर	बिलासपुर
18	बाहरेन्द्र साय	चैतुरगढ़ का किला	लाफागढ़	कोरबा
19		कोसगई माता मंदिर	छुरी कोसगई	कोरबा
20	कल्याण साय	श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर (गज किला के भीतर)	रतनपुर	बिलासपुर
21	राजसिंह	हवामहल	रतनपुर	बिलासपुर
22		बादलमहल	रतनपुर	बिलासपुर

मंदिर जीर्णोद्धार

क्र.	शासक	मंदिर	स्थान	संस्थापक
1	जाजल्लदेव I	पाली का शिव मंदिर	पाली	विक्रमादित्य (बाणवंश)
2	पृथ्वीदेव II	राजीवलोचन मंदिर (जगतपाल)	राजिम	बिलासतुंग (नलनागवंश)
3	रत्नदेव III	लखनेश्वर महादेव मंदिर (गंगाधरराव)	खरौद	ईशानदेव (पाण्डु वंश)

साहित्य एवं भाषा

साहित्य एवं भाषा

- कल्चुरी वंश के शासक साहित्य के प्रेमी थे |
- कल्चुरी वंश को साहित्य एवं स्थापत्य का स्वर्ण युग कहा जाता है |
- राजकीय भाषा - संस्कृत
- ताम्रपत्र का आरंभ - ॐ नम: शिवाय
- जाजल्लदेव के राजगुरु - रुद्रशिव
- राजसिंह देव के दरबारी कवि - गोपाल मिश्र

कल्चुरीकालीन प्रमुख साहित्यकार

क्र.	साहित्यकार	साहित्य	
1	रुद्रशिव	जाजल्लदेव के राजगुरु रुद्रशिव ने बौद्ध ग्रंथो का अध्ययन किया	
2	बाबू रेवाराम	तवारीख – ए – हैहयवंशी रामायण दीपिका रामाश्वमेघ रतनपुर का इतिहास रत्नपरीक्षा विक्रम विलास गंगा लहरी ब्राह्मण स्त्रोत	गीतामाधव माता के भजन कृष्णलीला के भजन लोकवाक्य लोक – लावण्य वृत्तांत दोहावली नर्मदाकंटन दोहावली
3	शिवदत्त शास्त्री गौरहा	इतिहास समुच्चय रतनपुर आख्यान	
4	गोपाल चन्द्र मिश्र (राजसिंह देव)	खूब तमाशा (1689) जैमिनी अश्वमेघ	सुदामाचरित चिंतामणि (कृष्ण प्रबंध काव्य) रामप्रताप (राम प्रबंध काव्य)
5	नारायण कवि	रामाभ्युदय	
6	वल्लभाचार्य	भक्तिचिंतामणि	

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

---------- रतनपुर के कल्चुरी वंश ----------

स्थापना

1. निम्नलिखित में से किस वर्ष कल्चुरियों ने इस राज्य में अपनी सत्ता स्थापित की ?
   (A) 955 ई. (B) 1000 ई.
   (C) 1010 ई. (D) 1015 ई.
   (E) इनमें से कोई नहीं

   [CGVyapam MFA 2017]

   उत्तर (B)

   पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध का वर्णन किया गया है | **आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार** 1000 ई. में कलिंगराज **सोमवंशी शासकों** को पराजित किया गया | **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर **तुम्माण** को राजधानी के रूप में स्थापित कर **कल्चुरी राजवंश की लहुरी शाखा** का प्रारंभ किया | छत्तीसगढ़ में **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक **कलिंग राज** है |

2. इस राज्य में कल्चुरी वंश के शासन का संस्थापक कौन था ?
   (A) कलिंगराज (B) कमलराज
   (C) कोकल्लदेव (D) परसोजी
   (E) इनमें से कोई नहीं

   [CGVyapam RI 2017]
   [CGPSC Asst. Dir. Handloom 2011]

   उत्तर (A)

   पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध का वर्णन किया गया है | **आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार** 1000 ई. में कलिंगराज **सोमवंशी शासकों** को पराजित किया गया | **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर **तुम्माण** को राजधानी के रूप में स्थापित कर **कल्चुरी राजवंश** की **लहुरी शाखा** का प्रारंभ किया | छत्तीसगढ़ में **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक **कलिंग राज** है |

3. इस राज्य में कल्चुरी वंश के शासन का वास्तविक संस्थापक कौन था ?
   (A) कलिंगराज (B) कमलराज
   (C) रत्नदेव प्रथम (D) जाज्वल्लदेव प्रथम
   (E) इनमें से कोई नहीं

   [CGPSC Asst. Pro. Engg. 2016]

   उत्तर (A)

   पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध का वर्णन किया गया है | **आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार** 1000 ई. में कलिंगराज **सोमवंशी शासकों** को पराजित किया गया | **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर **तुम्माण** को राजधानी के रूप में स्थापित कर **कल्चुरी राजवंश** की **लहुरी शाखा** का प्रारंभ किया | छत्तीसगढ़ में **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक **कलिंग राज** है |

4. कल्चुरी राजवंश के संस्थापक कलिंगराज थे ; इस बात की जानकारी किस अभिलेख से प्राप्त हुई है ?
   (A) रतनपुर शिलालेख से (B) आमोदा शिलालेख से
   (C) रतनपुर ताम्रपत्र से (D) आमोदा ताम्रपत्र से
   (E) इनमें से कोई नहीं

   उत्तर (D)

   पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध का वर्णन किया गया है | **आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार** 1000 ई. में कलिंगराज **सोमवंशी शासकों** को पराजित किया गया | **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर **तुम्माण** को राजधानी के रूप में स्थापित कर **कल्चुरी राजवंश की लहुरी शाखा** का प्रारंभ किया | छत्तीसगढ़ में **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक **कलिंग राज** है |

5. कल्चुरी राजवंश के संस्थापक कलिंगराज थे ; इस बात की जानकारी किस अभिलेख से प्राप्त हुई है ?
(A) पारागांव ताम्रपत्र (B) आमोदा ताम्रपत्र
(C) शिवरीनारायण ताम्रपत्र (D) सरखोर ताम्रपत्र
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (B)

पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध का वर्णन किया गया है | **आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार** 1000 ई. में कलिंगराज **सोमवंशी शासकों** को पराजित किया गया | **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर **तुम्माण** को राजधानी के रूप में स्थापित कर **कल्चुरी राजवंश की लहुरी शाखा** का प्रारंभ किया | छत्तीसगढ़ में **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक **कलिंग राज** है |

6. आमोदा ताम्रपत्र किस कल्चुरी राजवंशी संस्थापक से संबंधित है ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) जाज्ल्लदेव प्रथम (D) कल्याण साय
(E) राजसिंह

उत्तर (B)

पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध का वर्णन किया गया है | **आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार** 1000 ई. में कलिंगराज **सोमवंशी शासकों** को पराजित किया गया | **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर **तुम्माण** को राजधानी के रूप में स्थापित कर **कल्चुरी राजवंश की लहुरी शाखा** का प्रारंभ किया | छत्तीसगढ़ में **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक **कलिंग राज** है |

7. कल्चुरी राजवंश के अंतिम शासक कौन थे ?
(A) रघुनाथ सिंह (B) मोहन सिंह
(C) राजसिंह (D) सिरदार सिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (B)

संस्थापक - **कलिंगराज (1000 – 1020)** | वास्तविक संस्थापक - **कलिंगराज (1000 – 1020)** | अंतिम स्वतंत्र शासक - **रघुनाथ सिंह (1732 – 1741)** | मराठा अधीन प्रथम शासक - **रघुनाथ सिंह (1741 – 1745)** | मराठा अधीन अंतिम शासक - **मोहन सिंह (1745 – 1758)** | अंतिम शासक - **मोहन सिंह**

8. कल्चुरी राजवंश की निम्नलिखित में से किस शाखा ने छत्तीसगढ़ में राजनीतिक सत्ता स्थापित की ?
(A) लहुरी (B) बेहुरी
(C) त्रिपुरी (D) कलिंग
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC PRE 2014]

उत्तर (A)

पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध का वर्णन किया गया है | **आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार** 1000 ई. में कलिंगराज **सोमवंशी शासकों** को पराजित किया गया | **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर **तुम्माण** को राजधानी के रूप में स्थापित कर **कल्चुरी राजवंश** की **लहुरी शाखा** का प्रारंभ किया | छत्तीसगढ़ में **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक **कलिंग राज** है |

9. कल्चुरी शासन की समाप्ति के बाद इस राज्य में प्रथम मराठा शासक निम्न में से कौन था ?
(A) भास्कर पंत (B) रघुजी भोसला
(C) बिम्बाजी भोसला (D) केशव दिनकर
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam PATWARI 2017]

उत्तर (A)

रघुनाथ सिंह
- अंतिम स्वतंत्र कल्चुरी शासक **(1732 – 1741)**
- मराठा अधीन प्रथम शासक **(1741 – 1745)**
- अंतिम शासक

मोहन सिंह
- मराठा अधीन अंतिम शासक **(1745 – 1758)**

बिम्बजी भोंसले
- प्रथम मराठा शासक **(1758 – 1787)**

शासनकाल

1. कलिंगराज का शासनकाल कब तक था ?
   (A) 1005 (B) 1010
   (C) 1015 (D) 1020
   (E) 1025

   उत्तर (A)

पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** के अनुसार कलिंगराज ने 1000 ई. से 1020 ई. तक शासन किया | परममहेश्वर की उपाधि से सुज्जित कलिंगराज ने तुम्माण को अपनी राजधानी बनाया | कलिंगराज के प्रमुख स्थापत्य **महिषाशुर मर्दिनी मंदिर / महामाया मंदिर (चैतुरगढ़)** है |

2. रत्नदेव प्रथम ने छत्तीसगढ़ में कब से कब तक शासन किया ?
   (A) 1045 – 1065 (B) 1040 – 1065
   (C) 1045 – 1060 (D) 1040 – 1060
   (E) इनमें से कोई नहीं

   उत्तर (A)

रत्नदेव I / रत्नराज का शासनकाल 1045 – 1065 रहा | इनकी पत्नी नोनल्ला कोमोमण्डल के शासक वजूवर्मा की पुत्री थी | इन्होने रत्नराज प्रथम की उपाधि धारण किया था | 1050 में रत्नदेव I ने रतनपुर शहर बसाया तथा रतनपुर को अपनी राजधानी बनाया | रत्नदेव प्रथम के शासनकाल में रतनपुर के वैभव को देखकर "कुबेरपुर" तथा "चतुर्युगी पूरी" की संज्ञा प्रदान की गयी |

3. किस कित्चुरी वंश के शासक का शासनकाल सबसे अल्पकालीन रहा ?
   (A) बाहरेन्द्र साय (B) कल्याण साय
   (C) जाजल्लदेव प्रथम (D) जाजल्लदेव द्वितीय
   (E) इनमें से कोई नहीं

   उत्तर (D)

जाजल्लदेव II ने 1165 – 1168 तक शासन किया अर्थात् जाजल्लदेव II सबसे अल्पकालीन शासनकाल (3 वर्ष) वाले शासक थे |

बाहरेन्द्र साय ने 1480 – 1525 तक शासन किया अर्थात् बाहरेन्द्र साय सर्वाधिक लम्बा शासनकाल (45 वर्ष) वाले शासक थे |

4. किस कित्चुरी वंश के शासक का शासनकाल सर्वाधिक रहा है ?
   (A) बाहरेन्द्र साय (B) कल्याण साय
   (C) जाजल्लदेव प्रथम (D) जाजल्लदेव द्वितीय
   (E) इनमें से कोई नहीं

   उत्तर (A)

जाजल्लदेव II ने 1165 – 1168 तक शासन किया अर्थात् जाजल्लदेव II सबसे अल्पकालीन शासनकाल (3 वर्ष) वाले शासक थे |

बाहरेन्द्र साय ने 1480 – 1525 तक शासन किया अर्थात् बाहरेन्द्र साय सर्वाधिक लम्बा शासनकाल (45 वर्ष) वाले शासक थे |

5. निम्नलिखित कल्चुरी शासकों ने रतनपुर से राज्य किया :
   1. जाजल्लदेव I
   2. पृथ्वीदेव II
   3. प्रतापमल्ल
   4. रत्नदेव II

   (A) 3 , 2 , 4 , 1 (B) 4 , 1 , 3 , 2
   (C) 2 , 3 , 1 , 4 (D) 1 , 4 , 2 , 3
   (E) 2 , 4 , 1 , 3

   उत्तर (D)

कल्चुरी व उनके शासनकाल

जाजल्लदेव I	1095 – 1120
रत्नदेव II	1120 – 1135
पृथ्वीदेव II	1135 – 1165
प्रतापमल्ल	1198 – 1222

6. निम्नलिखित में से किस राजवंश ने इस राज्य में सबसे लम्बी अवधि तक शासन किया ?
(A) शरभपुरीय (B) नल
(C) पांडु (D) कल्चुरी
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam NNRI 2018]

उत्तर (D)

कल्चुरी वंश (1000 – 1741) : छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला वंश (741 वर्ष)

राजधानी

7. इस राज्य में कल्चुरी वंश की आरंभिक राजधानी थी :
(A) तुम्माण (B) रतनपुर
(C) खल्लारी (D) मणिपुर
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam ADEO 2012]
[CGVyapam PDEO 2016]

उत्तर (A)

पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध का वर्णन किया गया है | **आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार** 1000 ई. में कलिंगराज **सोमवंशी शासकों** को पराजित किया गया | **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर **तुम्माण** को राजधानी के रूप में स्थापित कर **कल्चुरी राजवंश** की **लहुरी शाखा** का प्रारंभ किया | छत्तीसगढ़ में **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक **कलिंग राज** है |

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **छुरी – कोसगई** में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी |

8. इस राज्य में कल्चुरी वंश की प्रथम राजधानी थी :
(A) तुम्माण (B) रतनपुर
(C) खल्लारी (D) मणिपुर
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam ADEO 2016]

उत्तर (A)

पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध का वर्णन किया गया है | **आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार** 1000 ई. में कलिंगराज **सोमवंशी शासकों** को पराजित किया गया | **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर **तुम्माण** को राजधानी के रूप में स्थापित कर **कल्चुरी राजवंश** की **लहुरी शाखा** का प्रारंभ किया | छत्तीसगढ़ में **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक **कलिंग राज** है |

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **छुरी – कोसगई** में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी |

9. किस किल्चुरी वंश के शासक ने तुम्माण को राजधानी के रूप में स्थापित किया ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) रत्नदेव द्वितीय
(C) रत्नदेव तृतीय (D) कलिंगराज
(E) कमलराज

उत्तर (D)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **छुरी – कोसगई** में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी |

10. इस राज्य में कल्चुरियों की प्रथम राजधानी निम्नलिखित में से कौन सी थी ?
(A) तुम्माण (B) पाली
(C) रतनपुर (D) सिरपुर
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **छुरी – कोसगई** में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी |

11. इस राज्य में कल्चुरी वंश की द्वितीय राजधानी थी :
(A) तुम्माण (B) रतनपुर
(C) खल्लारी (D) कोसगई
(E) रायपुर

उत्तर (B)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **छुरी – कोसगई** में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी |

12. किस कित्चुरी वंश के शासक ने रतनपुर को राजधानी के रूप में स्थापित किया ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) रत्नदेव द्वितीय
(C) रत्नदेव तृतीय (D) पृथ्वीदेव प्रथम
(E) पृथ्वीदेव द्वितीय

[CGPSC MAINS 2011]

उत्तर (A)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **छुरी – कोसगई** में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी |

13. इस राज्य में कल्चुरी वंश की तृतीय राजधानी थी :
(A) तुम्माण (B) रतनपुर
(C) खल्लारी (D) कोसगई
(E) रायपुर

उत्तर (D)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **छुरी – कोसगई** में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी |

14. किस कित्चुरी वंश के शासक ने छुरी – कोसगई को राजधानी के रूप में स्थापित किया ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) रत्नदेव द्वितीय
(C) रत्नदेव तृतीय (D) कल्याण साय
(E) बाहरेन्द्र साय

उत्तर (E)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **छुरी – कोसगई** में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी |

15. इस राज्य में कल्चुरी वंश की स्थायी राजधानी थी :
(A) तुम्माण (B) रतनपुर
(C) खल्लारी (D) कोसगई
(E) रायपुर

उत्तर (B)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी

छुरी – कोसगई में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी |

16. निम्नलिखित में से कौनसा स्थान कल्चुरियों की राजधानी नहीं थी ?
(A) त्रिपुरी (B) तुम्माण
(C) जाजल्लपुर (D) रतनपुर
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC ABEO 2013]

उत्तर (C)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **छुरी – कोसगई** में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी | उपरोक्त जानकारी के अनुसार जाजल्लपुर कल्चुरियों की राजधानी नहीं थी |

17. किस कल्चुरी शासक ने रतनपुर को अपनी राजधानी बनाया ?
(A) कलिंगराज (B) कमलराज
(C) रत्नराज (D) पृथ्वीदेव
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC MAINS 2011]

उत्तर (C)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **छुरी – कोसगई** में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी |

18. किस शासक के शासनकाल से कल्चुरी वंश की स्थायी राजधानी रतनपुर बनी ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) जाज्वल्लदेव प्रथम (D) कल्याण साय
(E) राजसिंह

उत्तर (B)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया | **बाहरेन्द्र साय** ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **छुरी – कोसगई** में स्थापित किया | **राजसिंह** के शासनकाल से **रतनपुर** कल्चुरी राजवंश स्थायी राजधानी बनी |

19. तुम्माण से शासन करने वाले अंतिम शासक कौन थे ?
(A) पृथ्वीदेव (B) कमलराज
(C) रत्नराज (D) कलिंगराज
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC Engg 2015]
[CGVyapam MAHALEKHAKAR 2017]

उत्तर (B)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया अर्थात् **कमलराज** तुम्माण से शासन करने वाले अंतिम शासक थे |

20. तुम्माण राजधानी से निम्नलिखित कल्चुरी शासकों ने छत्तीसगढ़ पर शासन किया ?
1. कलिंगराज 2. कमलराज
3. रत्नराज 4. प्रतापमल्ल
सही उत्तर चुनिये :
(A) 1 , 2 (B) 2 , 3
(C) 1 , 3 (D) 2 , 4
(E) 3 , 4

[CGPSC SES 2017]

उत्तर (A)

कलिंग राज ने कल्चुरी राजवंश की प्रथम राजधानी **तुम्माण** में स्थापित किया | **रत्नदेव प्रथम** ने कल्चुरी राजवंश की दूसरी राजधानी **रतनपुर** में स्थापित किया अर्थात् **कमलराज** तुम्माण से शासन करने वाले अंतिम शासक थे |

रतनपुर

21. रतनपुर को महाभारत काल में किस नाम से जाना जाता था ?
(A) मणिपुर (B) माणिकपुर
(C) हीरापुर (D) रतनपुर
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

युग तथा रतनपुर के अन्य नाम

क्र.	युग	रतनपुर
1	सतयुग (महाभारत)	मणिपुर
2	त्रेतायुग	माणिकपुर
3	द्वापरयुग	हीरापुर
4	कलयुग	रतनपुर
5	कल्चुरीकाल	रत्नपुर कुबेरपुर चतुर्युगी पूरी

---

22. किस युग में रतनपुर को हीरापुर के नाम से जाना जाता था ?
(A) सतयुग (B) त्रेतायुग
(C) द्वापरयुग (D) कलयुग
(E) कल्चुरीकाल

उत्तर (C)

नगर स्थापत्य

23. कल्चुरी वंशीय शासक रत्नदेव ने रतनपुर शहर कब बसाया था ?
(A) 1020 (B) 1030
(C) 1040 (D) 1050
(E) 1060

[CGPSC MAINS 2011]

उत्तर (B)

रत्नदेव I ने 1050 में रतनपुर नामक शहर बसाया | जाजल्लदेव I ने जाजल्लदेवपुर (जांजगीर) शहर बसाया | जाजल्लदेव II के छोटे भाई अकालदेव ने अकलतरा शहर बसाया | तखतसिंह ने तखतपुर शहर बसाया | राजसिंह ने रतनपुर के समीप राजपुर (जुनाशहर) ने शहर बसाया |

24. जांजगीर शहर के जन्मदाता किसे कहा जाता है ?
(A) जाजल्लदेव (B) सोमेश्वर देव
(C) जयसिंह देव (D) रामदेव
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC AP 2017]

उत्तर (A)

रत्नदेव I ने 1050 में रतनपुर नामक शहर बसाया | जाजल्लदेव I ने जाजल्लदेवपुर (जांजगीर) शहर बसाया | जाजल्लदेव II के छोटे भाई अकालदेव ने अकलतरा शहर बसाया | तखतसिंह ने तखतपुर शहर बसाया | राजसिंह ने रतनपुर के समीप राजपुर (जुनाशहर) ने शहर बसाया |

25. जाज्लपुर (जांजगीर शहर) के संस्थापक थे :
(A) जाजल्लदेव प्रथम (B) जाजल्लदेव द्वितीय
(C) रत्नदेव प्रथम (D) पृथ्वीदेव प्रथम
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC AD Agri/Fish 2013]

उत्तर (A)

रत्नदेव I ने 1050 में रतनपुर नामक शहर बसाया | जाजल्लदेव I ने जाजल्लदेवपुर (जांजगीर) शहर बसाया | जाजल्लदेव II के छोटे भाई अकालदेव ने अकलतरा शहर बसाया | तखतसिंह ने तखतपुर शहर बसाया | राजसिंह ने रतनपुर के समीप राजपुर (जुनाशहर) ने शहर बसाया |

26. तखतपुर शहर की स्थापना किसने किया ?
(A) तखत राज (B) तखत देव
(C) तखत सिंह (D) तखत मल्ल
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

रत्नदेव I ने 1050 में रतनपुर नामक शहर बसाया | जाजल्लदेव I ने जाजल्लदेवपुर (जांजगीर) शहर बसाया | जाजल्लदेव II के छोटे भाई अकालदेव ने अकलतरा शहर बसाया | तखतसिंह ने तखतपुर शहर बसाया | राजसिंह ने रतनपुर के समीप राजपुर (जुनाशहर) ने शहर बसाया |

स्थापत्य कला

27. रतनपुर स्थित महामाया मंदिर के संस्थापक है :
(A) रत्नदेव प्रथम (B) रत्नदेव द्वितीय
(C) रत्नदेव तृतीय (D) पृथ्वीदेव प्रथम
(E) पृथ्वीदेव द्वितीय

[CGPSC LIBRARIAN 2014]

उत्तर (A)

रत्नदेव I द्वारा स्थापित प्रमुख स्थापत्य : गज किला (रतनपुर) , महामाया मंदिर (रतनपुर) , नानादेव कुल भूषित मंदिर (रतनपुर) , बमकेश्वर महादेव मंदिर (तुम्माण) , महिषाशुर मर्दिनी मंदिर (लाफागढ़)

28. महामाया मंदिर किसके शासनकाल के दौरान बनाया गया था ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) बिम्बाजी भोंसलें
(C) राजा कामसेन (D) वल्लभाचार्य
(E) राजा हर्षगुप्त

[CGPSC RDA 2014]

उत्तर (A)

रत्नदेव I द्वारा स्थापित प्रमुख स्थापत्य : गज किला (रतनपुर) , महामाया मंदिर (रतनपुर) , नानादेव कुल भूषित मंदिर (रतनपुर) , बमकेश्वर महादेव मंदिर (तुम्माण) , महिषाशुर मर्दिनी मंदिर (लाफागढ़)

29. जांजगीर स्थित विशाल विष्णु मंदिर के निर्माता है :
(A) रत्नदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) जाजल्लदेव प्रथम (D) जाजल्लदेव द्वितीय
(E) बाहरेन्द्र साय

[CGPSC AD Agri/Fish 2013]

उत्तर (C)

जाजल्लदेव I ने जांजगीर में नकटा मंदिर (विशाल विष्णुमंदिर) तथा जांजगीर का विशाल तालाब का निर्माण करवाया |

जाजल्लदेव I ने विक्रमादित्य (बाणवंश) द्वारा निर्मित पाली का शिव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |

30. जांजगीर स्थित नकटा मंदिर के निर्माता है :
(A) रत्नदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) जाजल्लदेव प्रथम (D) जाजल्लदेव द्वितीय
(E) बाहरेन्द्र साय

उत्तर (C)

जाजल्लदेव I ने जांजगीर में नकटा मंदिर (विशाल विष्णुमंदिर) तथा जांजगीर का विशाल तालाब का निर्माण करवाया |

जाजल्लदेव I ने विक्रमादित्य (बाणवंश) द्वारा निर्मित पाली का शिव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |

31. निम्नलिखित में से किस कल्चुरी शासक ने बादल महल बनवाया था ?
(A) कल्याण साय (B) रत्नदेव द्वितीय
(C) राजसिंह (D) बादलसिंह देव
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam RI 2015]
[CGVyapam E. Chemist 2016]

उत्तर (C)

राजसिंह ने रतनपुर में हवामहल तथा बादलमहल का निर्माण करवाया |

32. निम्नलिखित में से किस कल्चुरी शासक ने हवामहल बनवाया था ?
(A) कल्याण साय (B) रत्नदेव द्वितीय
(C) राजसिंह (D) बादलसिंह देव
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

राजसिंह ने रतनपुर में हवामहल तथा बादलमहल का निर्माण करवाया |

33. हवामहल स्थित है :
(A) मल्हार (B) तुम्माण
(C) सिरपुर (D) लाफागढ़
(E) रतनपुर

उत्तर (E)

राजसिंह ने रतनपुर में हवामहल तथा बादलमहल का निर्माण करवाया |

34. बादल महल स्थित है :
(A) मल्हार (B) तुम्माण
(C) सिरपुर (D) लाफागढ़
(E) रतनपुर

उत्तर (E)

राजसिंह ने रतनपुर में हवामहल तथा बादलमहल का निर्माण करवाया |

35. इस राज्य के कहाँ पर स्थित किले को **गज किला** कहा जाता है ?
(A) जशपुर (B) सरगुजा
(C) बस्तर (D) रतनपुर
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam PATWARI 2017]

उत्तर (D)

कलचुरी राजवंश के शासक रत्नदेव प्रथम ने रतनपुर को अपनी राजधानी बनाया तथा रतनपुर में गज किला की स्थापना किया | कल्याण साय ने रतनपुर स्थित गज किला के भीतर श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर की स्थापना किया |

36. रतनपुर स्थित **गज किला** के संस्थापक थे :
(A) रत्नदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) जाजल्लदेव प्रथम (D) कल्याण साय
(E) बाहरेन्द्र साय

उत्तर (A)

कलचुरी राजवंश के शासक रत्नदेव प्रथम ने रतनपुर को अपनी राजधानी बनाया तथा रतनपुर में गज किला की स्थापना किया | कल्याण साय ने रतनपुर स्थित गज किला के भीतर श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर की स्थापना किया |

37. **श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर** कहाँ स्थित है ?
(A) खरौद (B) तुम्माण
(C) मल्हार (D) रतनपुर
(E) कोसगई

उत्तर (D)

कलचुरी राजवंश के शासक रत्नदेव प्रथम ने रतनपुर को अपनी राजधानी बनाया तथा रतनपुर में गज किला की स्थापना किया | कल्याण साय ने रतनपुर स्थित गज किला के भीतर श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर की स्थापना किया |

38. रतनपुर स्थित **श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर** के संस्थापक थे ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) जाजल्लदेव प्रथम (D) कल्याण साय
(E) बाहरेन्द्र साय

उत्तर (D)

कलचुरी राजवंश के शासक रत्नदेव प्रथम ने रतनपुर को अपनी राजधानी बनाया तथा रतनपुर में गज किला की स्थापना किया | कल्याण साय ने रतनपुर स्थित गज किला के भीतर श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर की स्थापना किया |

39. कल्चुरी काल में इस राज्य में सती प्रथा प्रचलित थी , जिसके प्रमाण रतनपुर में इनके रूप में प्राप्त होते है :
(A) सती चौरे (B) सती समाधियाँ
(C) सती महल (D) सती मंदिर
(E) बाहरेन्द्र साय

[CGPSC FOOD SECURITY 2015]

उत्तर (A)

रतनपुर स्थित सती चौरा इस बात का द्योतक है कि कल्चुरी वंश में सती प्रथा प्रचलित थी |

मंदिर जीर्णोद्धार

40. बाणवंशीय शासक विक्रमादित्य द्वारा निर्मित पाली के शिव मंदिर (कोरबा) का जीर्णोद्धार किस कल्चुरी वंश के शासक ने किया ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) जाजल्लदेव प्रथम (D) कल्याण साय
(E) बाहरेन्द्र साय

[CGPSC AD Agri/Fish 2013]

उत्तर (C)

जाजल्लदेव I ने विक्रमादित्य (बाणवंश) द्वारा निर्मित पाली का शिव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |
पृथ्वीदेव II के सेनापति जगतपाल ने बिलासतुंग (नलनागवंश) द्वारा निर्मित राजिम के राजीवलोचन मंदिर का जीर्णोद्धार किया |
रत्नदेव III के सेनापति गंगाधरराव ने ईशानदेव (पाण्डु वंश) द्वारा निर्मित खरौद के लखनेश्वर महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |

41. पाली के शिव मंदिर का मरम्मत करने वाला कल्चुरी शासक था :
(A) जाजल्लदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव द्वितीय
(C) रत्नदेव प्रथम (D) जाजल्लदेव द्वितीय
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam FI 2013]

उत्तर (A)

जाजल्लदेव I ने विक्रमादित्य (बाणवंश) द्वारा निर्मित पाली का शिव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |
पृथ्वीदेव II के सेनापति जगतपाल ने बिलासतुंग (नलनागवंश) द्वारा निर्मित राजिम के राजीवलोचन मंदिर का जीर्णोद्धार किया |
रत्नदेव III के सेनापति गंगाधरराव ने ईशानदेव (पाण्डु वंश) द्वारा निर्मित खरौद के लखनेश्वर महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |

42. राजीवलोचन मंदिर का जीर्णोद्धार किस कल्चुरी वंश के शासक ने किया ?
(A) जाजल्लदेव I (B) पृथ्वीदेव I
(C) रत्नदेव III (D) जाजल्लदेव II
(E) पृथ्वीदेव II

[CGPSC CMO 2013]

उत्तर (E)

जाजल्लदेव I ने विक्रमादित्य (बाणवंश) द्वारा निर्मित पाली का शिव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |
पृथ्वीदेव II के सेनापति जगतपाल ने बिलासतुंग (नलनागवंश) द्वारा निर्मित राजिम के राजीवलोचन मंदिर का जीर्णोद्धार किया |
रत्नदेव III के सेनापति गंगाधरराव ने ईशानदेव (पाण्डु वंश) द्वारा निर्मित खरौद के लखनेश्वर महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |

43. रतनपुर के किस कल्चुरी राजा के सेनापति जगपालदेव ने राजिम के राजीवलोचन मंदिर का पुनरुद्धार किया था ?
(A) पृथ्वीदेव II (B) रत्नदेव III
(C) जाजल्लदेव II (D) रत्नदेव III
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC CMO 2010]

उत्तर (A)

जाजल्लदेव I ने विक्रमादित्य (बाणवंश) द्वारा निर्मित पाली का शिव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |
पृथ्वीदेव II के सेनापति जगतपाल ने बिलासतुंग (नलनागवंश) द्वारा निर्मित राजिम के राजीवलोचन मंदिर का जीर्णोद्धार किया |
रत्नदेव III के सेनापति गंगाधरराव ने ईशानदेव (पाण्डु वंश) द्वारा निर्मित खरौद के लखनेश्वर महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |

44. लखनेश्वर महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार किस कल्चुरी वंश के शासक ने किया ?
(A) जाजल्लदेव I (B) पृथ्वीदेव I
(C) रत्नदेव III (D) जाजल्लदेव II
(E) पृथ्वीदेव II

उत्तर (C)

जाजल्लदेव I ने विक्रमादित्य (बाणवंश) द्वारा निर्मित पाली का शिव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |

पृथ्वीदेव II के सेनापति जगतपाल ने बिलासतुंग (नलनागवंश) द्वारा निर्मित राजिम के राजीवलोचन मंदिर का जीर्णोद्धार किया |

रत्नदेव III के सेनापति गंगाधरराव ने ईशानदेव (पाण्डु वंश) द्वारा निर्मित खरौद के लखनेश्वर महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार किया |

तालाब का निर्माण

45. किस कल्चुरीकालीन शासक ने रतनपुर के विशाल तालाब का निर्माण करवाया था ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) जाजल्लदेव प्रथम (D) कल्याण साय
(E) बाहरेन्द्र साय

[CGPSC PRE 2015]

उत्तर (B)

रत्नदेव I ने रतनपुर में तालाबों का जाल बिछाया |

पृथ्वीदेव I ने रतनपुर का विशाल तालाब का निर्माण करवाया | जाजल्लदेव I ने जांजगीर का विशाल तालाब का निर्माण करवाया |

46. किस कल्चुरीकालीन शासक ने जांजगीर के विशाल तालाब का निर्माण करवाया था ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) जाजल्लदेव प्रथम (D) कल्याण साय
(E) बाहरेन्द्र साय

उत्तर (C)

रत्नदेव I ने रतनपुर में तालाबों का जाल बिछाया |

पृथ्वीदेव I ने रतनपुर का विशाल तालाब का निर्माण करवाया |

जाजल्लदेव I ने जांजगीर का विशाल तालाब का निर्माण करवाया |

युद्ध (आक्रमण)

47. एक कल्चुरी नरेश ने कोसल के सोमवंशी शासक से पाली जीता था ; वह कल्चुरी शासक कौन था ?
(A) शंकरगण द्वितीय मुग्धतुंग (B) कोकल्ल प्रथम
(C) बालहर्ष (D) युवराज प्रथम
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam FI 2011]
[CGVyapam FI 2013]

उत्तर (A)

त्रिपुरी कल्चुरी शासक शंकरगण द्वितीय (मुग्धतुंग) ने कोसल के सोमवंशी शासक से पाली जीता था |

48. इस राज्य के कल्चुरी वंश के निम्नलिखित में से किस शासक ने बस्तर के शासक सोमेश्वर को पराजित किया एवं अपने राज्य का विस्तार किया ?
(A) जाजल्लदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) जाजल्लदेव द्वितीय (D) पृथ्वीदेव द्वितीय
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam ECH 2017]

उत्तर (A)

जाजल्लदेव प्रथम ने बस्तर के छिंदक नागवंशी शासक सोमेश्वर देव प्रथम को पराजित किया सपरिवार कैद किया | माता **गुंडमहादेवी** के अनुग्रह पर कैद से मुक्त किया |

49. जाजल्लदेव प्रथम ने किस छिंदक नागवंशी शासक को पराजित किया ?
(A) सोमेश्वर प्रथम (B) सोमेश्वर द्वितीय
(C) नृपतिभूषण (D) हरीशचंद्र देव
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

जाजल्लदेव प्रथम ने बस्तर के छिंदक नागवंशी शासक सोमेश्वर देव प्रथम को पराजित किया सपरिवार कैद किया | माता **गुंडमहादेवी** के अनुग्रह पर कैद से मुक्त किया |

50. गंग वंश के शासक अनंतवर्मन चोडगंग को किस कल्चुरी वंश के शासक ने पराजित किया ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) रत्नदेव द्वितीय
(C) रत्नदेव तृतीय (D) जाजल्लदेव प्रथम
(E) जाजल्लदेव द्वितीय

उत्तर (B)

शिवरीनारायण का युद्ध

रत्नदेव II ने उड़ीसा के गंग वंश के शासक अनंतवर्मन चोडगंग को पराजित किया |

51. सूची – 1 (प्राचीन छत्तीसगढ़ के कल्चुरी शासक) को सूची – 2 से सुम्मेलित कीजिए :

A. कलिंगराज	1. मुग़ल दरबार में उपस्थित हुए	
B. जाजल्लदेव प्रथम	2. मराठा सेना के समक्ष आत्मसमर्पण
C. कल्याण साय	3. तुम्माण को राजधानी बनाया
D. रघुनाथ सिंह	4. बस्तर के सोमेश्वर देव को पराजित किया	

	A	B	C	D
(A)	2	1	4	3
(B)	1	4	3	2
(C)	3	2	1	4
(D)	3	4	1	2
(E)	4	2	3	1

[CGPSC ADI 2017]

उत्तर (D)

A. कलिंगराज ने तुम्माण को राजधानी बनाया | पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** में कलिंगराज के **सोमवंशी शासकों** से युद्ध का वर्णन किया गया है | **आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार** 1000 ई. में कलिंगराज **सोमवंशी शासकों** को पराजित किया गया | **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर **तुम्माण** को राजधानी के रूप में स्थापित कर **कल्चुरी राजवंश की लहुरी शाखा** का प्रारंभ किया | छत्तीसगढ़ में **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक **कलिंग राज** है |

B. जाजल्लदेव प्रथम ने बस्तर के छिंदक नागवंशी शासक सोमेश्वर देव को पराजित किया सपरिवार कैद किया | माता **गुंडमहादेवी** के अनुग्रह पर कैद से मुक्त किया |

C. कल्याण साय मुग़ल दरबार में उपस्थित हुए | **बाबू रेवाराम की पाण्डुलिपि के अनुसार** कल्याण साय तथा मंडला के शासक के विवाद होने के कारण तत्कालीन मुग़ल सम्राट अकबर ने कल्याण साय को दिल्ली बुलवाया | कल्याण साय 8 वर्षो तक **अकबर के दरबार** में दिल्ली में नजरबंद रहे |

D. रघुनाथ सिंह ने मराठा सेना के समक्ष आत्मसमर्पण किया | 1741 में मराठा शासक बिम्बजी भोंसले का सेनापति **भास्कर पंत** उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया | छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु **मीरहबीब** ने मराठों को आमंत्रण भेजा | रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |

52. सूची – 1 को सूची – 2 से सुम्मेलित कीजिए :

सूची – 1 (कल्चुरी शासक)	**सूची – 2 (उपलब्धियां)**
A. पृथ्वीदेव प्रथम	1. सेनापति जगतपाल द्वारा राजीवलोचन मंदिर का जीर्णोद्धार
B. जाजल्लदेव प्रथम	2. छिड़क नागवंशी शासक सोमेश्वर की पराजय
C. जाजल्लदेव द्वितीय	3. सकलकोसलाधिपति की उपाधि ग्रहण की
D. पृथ्वीदेव द्वितीय	4. त्रिपुरी के कल्चुरी राजा जयसिंह की पराजय

(A) A – 3 , B – 1 , C – 2 , D – 4
(B) A – 3 , B – 4 , C – 2 , D – 1
(C) A – 3 , B – 2 , C – 4 , D – 1
(D) A – 3 , B – 4 , C – 1 , D – 2
(E) A – 3 , B – 2 , C – 1 , D – 4

उत्तर (C)

A. पृथ्वीदेव प्रथम ने सकलकोसलाधिपति की उपाधि ग्रहण की | आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार कलिंगराज के सोमवंशी शासकों से युद्ध में विजय का वर्णन किया | पृथ्वीदेव प्रथम ने सकलकोसलाधिपति व प्रचण्डकोसलाधिपति उपाधि धारण किया | 21000 ग्रामों का स्वामी कहलाए | तुम्माण में पृथ्वी देवेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण |

B. जाजल्लदेव प्रथम ने बस्तर के छिंदक नागवंशी शासक सोमेश्वर देव को पराजित किया सपरिवार कैद किया | माता गुंडमहादेवी के अनुग्रह पर कैद से मुक्त किया |

C. जाजल्लदेव द्वितीय ने त्रिपुरी के कल्चुरी राजा जयसिंह को हराया | त्रिपुरी कल्चुरी शासक जयसिंह ने जाजल्लदेव II के साम्राज्य पर आक्रमण किया तथा जाजल्लदेव II ने जयसिंह को पराजित किया | इस आक्रमण को सामंत उल्हानदेव के द्वारा असफल किया गया |

D. पृथ्वीदेव द्वितीय के सेनापति जगतपाल द्वारा राजीवलोचन मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया |

53. 1741 में इस राज्य पर मराठा आक्रमण के समय रतनपुर राज्य का कल्चुरी शासक निम्नलिखित में से कौन था ?
(A) रघुनाथ सिंह (B) राज सिंह
(C) अमर सिंह (D) बलदेव सिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam LOI 2015]

उत्तर (A)

1741 में इस राज्य पर मराठा आक्रमण के समय रतनपुर राज्य का कल्चुरी शासक रघुनाथ सिंह था | रघुनाथ सिंह ने मराठा सेना के समक्ष आत्मसमर्पण किया |

1741 में मराठा शासक **रघुजी प्रथम** का सेनापति **भास्कर पंत** उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया | **भास्कर पंत** ने मराठा प्रतिनिधि के रूप में रतनपुर में **कल्याण गिरि गुंसाई** की नियुक्ति की | छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु **मीरहबीब** ने मराठों को आमंत्रण भेजा | रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |

54. रतनपुर पर आक्रमण करने वाले मराठा सेनापति का नाम क्या था ?
(A) भास्कर पंत (B) रघुजी
(C) महिपत राव (D) बिम्बजी भोंसले
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam Asst. Manager 2015]

उत्तर (A)

1741 में मराठा शासक **रघुजी प्रथम** का सेनापति **भास्कर पंत** उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया | **भास्कर पंत** ने मराठा प्रतिनिधि के रूप में रतनपुर में **कल्याण गिरि गुंसाई** की नियुक्ति की | छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु **मीरहबीब** ने मराठों को आमंत्रण भेजा | रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |

55. छत्तीसगढ़ के रतनपुर राज्य पर आक्रमण करने वाला मराठा सेनापति निम्नलिखित में से कौन था ?
(A) रघुजी प्रथम (B) भास्कर पंत
(C) विठ्ठल पंत (D) दिनकर पंत
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC AD AGRI AVS FISH 2013]

उत्तर (A)

1741 में मराठा शासक **रघुजी प्रथम** का सेनापति **भास्कर पंत** उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया | **भास्कर पंत** ने मराठा प्रतिनिधि के रूप में रतनपुर में **कल्याण गिरि गुंसाई** की नियुक्ति की | छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु **मीरहबीब** ने मराठों को आमंत्रण भेजा | रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |

56. 1741 में इस राज्य पर मराठा भास्कर पंत के नेतृत्व में आक्रमण के समय रतनपुर राज्य का कल्चुरी शासक निम्नलिखित में से कौन था ?
(A) रघुनाथ सिंह (B) मोहन सिंह
(C) अमर सिंह (D) शिवराज सिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC ACF 2016]
[CGPSC ADIHS 2017]

उत्तर (A)

1741 में इस राज्य पर मराठा आक्रमण के समय रतनपुर राज्य का कल्चुरी शासक रघुनाथ सिंह था | रघुनाथ सिंह ने मराठा सेना के समक्ष आत्मसमर्पण किया |

1741 में मराठा शासक **रघुजी प्रथम** का सेनापति **भास्कर पंत** उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया | **भास्कर पंत** ने मराठा प्रतिनिधि के रूप में रतनपुर में **कल्याण गिरि गुंसाई** की नियुक्ति की | छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु **मीरहबीब** ने मराठों को आमंत्रण भेजा | रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |

57. रतनपुर राज्य में भोंसले आक्रमण कब हुआ ?
(A) 1741 (B) 1745
(C) 1758 (D) 1787
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC ADIHS 2008]

उत्तर (A)

1741 में इस राज्य पर मराठा आक्रमण के समय रतनपुर राज्य का कल्चुरी शासक रघुनाथ सिंह था | रघुनाथ सिंह ने मराठा सेना के समक्ष आत्मसमर्पण किया |

1741 में मराठा शासक **रघुजी प्रथम** का सेनापति **भास्कर पंत** उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया | **भास्कर पंत** ने मराठा प्रतिनिधि के रूप में रतनपुर में **कल्याण गिरि गुंसाई** की नियुक्ति की | छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु **मीरहबीब** ने मराठों को आमंत्रण भेजा | रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |

58. छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु किसने मराठों को आमंत्रण भेजा था ?
(A) मीरजाफ़र (B) मीरहबीब
(C) मीरलाहौरी (D) मीरकसाब
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (B)

1741 में मराठा शासक **रघुजी प्रथम** का सेनापति **भास्कर पंत** उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया | **भास्कर पंत** ने मराठा प्रतिनिधि के रूप में रतनपुर में **कल्याण गिरि गुंसाई** की नियुक्ति की | छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु **मीरहबीब** ने मराठों को आमंत्रण भेजा | रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |

59. भास्कर पंत ने मराठा प्रतिनिधि के रूप में रतनपुर में किसकी नियुक्ति की ?
(A) कल्याण गिरि गुंसाई (B) मीरहबीब
(C) मीरलाहौरी (D) मीरकसाब
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

1741 में मराठा शासक **रघुजी प्रथम** का सेनापति **भास्कर पंत** उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया | **भास्कर पंत** ने मराठा प्रतिनिधि के रूप में रतनपुर में **कल्याण गिरि गुंसाई** की नियुक्ति की | छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु **मीरहबीब** ने मराठों को आमंत्रण भेजा | रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |

60. हैहय कल्चुरी वंश को पराजित करने वाले मराठा कौन थे ?
(A) सिंधिया (B) भोंसले
(C) होयसल (D) होल्कर
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC MAINS 2011]

उत्तर (A)

1741 में मराठा शासक **रघुजी प्रथम** का सेनापति **भास्कर पंत** उड़ीसा अभियान के दौरान रतनपुर पर आक्रमण किया | **भास्कर पंत** ने मराठा प्रतिनिधि के

रूप में रतनपुर में **कल्याण गिरि गुंसाई** की नियुक्ति की | छत्तीसगढ़ में कलचुरियों पर मराठा आक्रमण हेतु **मीरहबीब** ने मराठों को आमंत्रण भेजा | रघुनाथ सिंह ने मराठा शासन की अधिसत्ता को स्वीकार किया |

61. इस राज्य में रतनपुर के कल्चुरी वंश के निम्नलिखित में से किस शासक ने त्रिपुरी के शासक जयसिंह को पराजित किया , जिसने उसके राज्य पर आक्रमण किया ?
(A) रत्नदेव द्वितीय (B) जाज्वल्लदेव द्वितीय
(C) पृथ्वीदेव द्वितीय (D) रत्नदेव तृतीय
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam LOI 2018]

उत्तर (B)

शिवरीनारायण का युद्ध

जयसिंह ने जाजल्लदेव II के साम्राज्य पर आक्रमण किया तथा जाजल्लदेव II ने जयसिंह को पराजित किया |

इस आक्रमण को सामंत **उल्हानदेव** के द्वारा असफल किया गया |

कल्चुरीकालीन प्रशासन

62. स्थायी प्रशासन हेतु 'पंचकुल' संस्था किन शासकों ने बनाई ?
(A) कल्चुरी (B) मराठा
(C) काकतीय (D) नागवंशी
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC SES 2017]

उत्तर (A)

कल्चुरी शासकों ने स्थायी प्रशासन हेतु 'पंचकुल' संस्था की स्थापना किया |

63. किस कल्चुरीकालीन शासक ने कोषागार व्यवस्था की शुरुवात की ?
(A) बाहरेन्द्र साय (B) कल्याण साय
(C) लक्ष्मण साय (D) राजसिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

शासक	प्रणाली
1) बाहरेन्द्र साय	- कोषागार व्यवस्था
2) कल्याण साय	- जमाबंदी व्यवस्था
	- राजस्व पुस्तिका
3) लक्ष्मण साय	- बहीखाता व्यवस्था
	- बजट प्रणाली (लेखा – जोखा)

64. राजस्व की जमाबंदी प्रणाली शुरू किसने किया था ?
(A) बाहरेन्द्र साय (B) कल्याण साय
(C) लक्ष्मण साय (D) राजसिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (B)

शासक	प्रणाली
1) बाहरेन्द्र साय	- कोषागार व्यवस्था
2) कल्याण साय	- जमाबंदी व्यवस्था
	- राजस्व पुस्तिका
3) लक्ष्मण साय	- बहीखाता व्यवस्था
	- बजट प्रणाली (लेखा – जोखा)

65. किस कल्चुरीकालीन शासक ने राजस्व पुस्तिका की शुरुवात की ?
(A) बाहरेन्द्र साय (B) कल्याण साय
(C) लक्ष्मण साय (D) राजसिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (B)

शासक	प्रणाली
1) बाहरेन्द्र साय	- कोषागार व्यवस्था
2) कल्याण साय	- जमाबंदी व्यवस्था
	- राजस्व पुस्तिका
3) लक्ष्मण साय	- बहीखाता व्यवस्था

66. किस कल्चुरीकालीन शासक ने बजट प्रणाली की शुरुवात की ?

(A) बाहरेन्द्र साय (B) कल्याण साय
(C) लक्ष्मण साय (D) राजसिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (C)

शासक	प्रणाली
1) बाहरेन्द्र साय	- कोषागार व्यवस्था
2) कल्याण साय	- जमाबंदी व्यवस्था
	- राजस्व पुस्तिका
3) लक्ष्मण साय	- बहीखाता व्यवस्था
	- बजट प्रणाली (लेखा – जोखा)

67. किस ब्रिटिश अधिकारी ने राजस्व पुस्तिका में वर्णित जमाबंदी प्रणाली के आधार पर छत्तीसगढ़ राज्य को 36 गढ़ों में विभाजित किया ?

(A) चार्ल्स सी. इलियट (B) एडमंड
(C) कनिंघम (D) चिस्म
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (D)

मिस्टर चिस्म (1868)

- बिलासपुर के **प्रथम अंग्रेज बंदोबस्त अधिकारी**
- कल्याण साय की राजस्व पुस्तिका में वर्णित **जमाबंदी व्यवस्था** के आधार पर **मिस्टर चिस्म** ने 1868 में छत्तीसगढ़ को **36 गढ़ों** में विभाजित किया |

68. निम्नलिखित में से कौन सा / से कथन सही है ?

1. छत्तीसगढ़ में कल्चुरी प्रशासन राजतंत्रात्मक था |
2. प्रशासन में राजा को अमात्यों की सहायता प्राप्त थी |
3. गाँव के प्रशासन का प्रमुख प्रधान होता था |

(A) केवल 1 सही है | (B) 1 व 2 सही हैं |
(C) 2 व 3 सही हैं | (D) 1 व 3 सही हैं |
(E) 1 , 2 व 3 सही हैं |

[CGPSC ADPPO 2017]

उत्तर (E)

1. छत्तीसगढ़ में कल्चुरी प्रशासन राजतंत्रात्मक था |
2. प्रशासन में राजा को अमात्यों की सहायता प्राप्त थी |

69. निम्नलिखित में से कौन सा / से कथन सही है ?

1. छत्तीसगढ़ में कल्चुरी प्रशासन राजतंत्रात्मक था |
2. राजा की सहायता के लिए अमात्य (मंत्री) होते थे |
3. सम्पूर्ण कल्चुरी राज्य गढ़ों में विभाजित था |

(A) केवल 1 सही है | (B) 1 व 2 सही हैं |
(C) 2 व 3 सही हैं | (D) 1 व 3 सही हैं |
(E) 1 , 2 व 3 सही हैं |

[CGPSC ACF 2016]

उत्तर (E)

1. छत्तीसगढ़ में कल्चुरी प्रशासन राजतंत्रात्मक था |
2. राजा की सहायता के लिए अमात्य (मंत्री) होते थे |
3. सम्पूर्ण कल्चुरी राज्य गढ़ों में विभाजित था |

70. निम्नलिखित में से कौन सा / से कथन सही है ?

1. कल्चुरी प्रशासन में राजा के अधिकार सीमित थे |
2. प्रशासन के विभागों का दायित्व अमात्यमण्डल के सदस्यों पर होता था |
3. राज्य गढ़ों में चौरासी ग्राम होते थे |

(A) केवल 1 सही है | (B) 1 व 2 सही हैं |
(C) 2 व 3 सही हैं | (D) 1 व 3 सही हैं |
(E) 1 , 2 व 3 सही हैं |

[CGPSC ADPPO 2017]

उत्तर (B)

2. प्रशासन के विभागों का दायित्व अमात्यमण्डल के सदस्यों पर होता था |
3. राज्य गढ़ों में चौरासी ग्राम होते थे |

71. निम्नलिखित में से कौन कल्चुरी शासन व्यवस्था का अधिकारी था ?

(A) दीवान (B) दाऊ
(C) गोटियां (D) उपरोक्त सभी
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC MAINS 2011]

उत्तर (D)

कल्याण साय का जमाबन्धी व्यवस्था

- **अकबर** के **मनसबदार व्यवस्थता** (प्रशासन को सुव्यवस्थित करने के लिए) के तर्ज पर **कल्याण साय** ने **जमाबन्धी व्यवस्थता** (छत्तीसगढ़ में प्रशासन को सुव्यवस्थित करने के लिए) चलाया |
- राज्य को 3 प्रशासनिक भागो में बांटा गया :

प्रशासनिक इकाई	**मुखिया**
मण्डल	महामण्डलेश्वर
गढ़	दीवान
बरहा	दाऊ
गाँव	गोटिया

72. छत्तीसगढ़ के कल्चुरी राज्य का प्रमुख लगान अधिकारी का पदनाम क्या था ?
(A) महाबलाधिकृत (B) महाप्रभातृ
(C) अक्षपटलिक (D) राजस्व सचिव
(E) 1 , 2 व 3 सही हैं |

[CGPSC PRE 2017]

उत्तर (B)

<u>मंत्रिमंडल</u>

महामात्य	- प्रधानमंत्री
	- राजा का प्रशासनिक सलाहकार
महासंधि विग्रहक	- विदेश मंत्री
महाक्षपटलिक	- राजस्वमण्डल मंत्री (वित्त मंत्री)
महाप्रभातृ	- प्रमुख लगान अधिकारी
	- राजस्व प्रबंधक
	- जमाबंधी विभाग का प्रमुख
महापुरोहित	- धार्मिक विभाग का प्रमुख
महाप्रतिहार	- राजा का अंग रक्षक
	- संचार विभाग का प्रमुख

<u>अधिकारी</u>

अमात्य	- सचिवालय प्रमुख
संधिविग्रहाधिकरण	- विदेश विभाग का अधिकारी
शौल्किक	- कर संग्रहण अधिकारी
दाण्डिक	- सर्वोच्च न्यायधीश
साधनिक	- सेना प्रमुख
महापीलुपति	- हस्तिसेना प्रमुख
महाश्वसाधनिक	- अश्वसेना प्रमुख
महाकोट्टपाल	- दुर्ग (किले) का रक्षक प्रमुख
भाट	- सैनिक
दण्डपाशिक	- सर्वोच्च पुलिस अधिकारी
दुष्टसाधक / चोरद्धारणिक / चाट	- पुलिस
गमागमिक	- यातायात अधिकारी
पुरप्रधान	- नगर प्रमुख
ग्राम कुट / ग्राम भोगिक	- ग्राम प्रमुख
धर्मलेखी	- दान पत्रों का लेखा – जोखा

36 गढ़

73. निम्नलिखित में से कौन सा गढ़ कल्चुरी शासनकाल में रतनपुर राज्य की इकाई नहीं था ?
(A) लाफागढ़ (B) सोनाखान
(C) उपरोड़ा (D) राजनांदगांव
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC SES 2017]

उत्तर (D)

शिवनाथ नदी के उत्तर में स्थित 36 गढ़ में राजनांदगांव शामिल नहीं था |

अभिलेख

74. किस कल्चुरीकालीन शासक का सबसे अधिक अभिलेख प्राप्त हुआ है ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) जाजल्लदेव प्रथम (D) रत्नदेव द्वितीय
(E) पृथ्वीदेव द्वितीय

उत्तर (E)

पृथ्वीदेव II (1135 – 1165) के सर्वाधिक शिलालेख प्राप्त हुए हैं | पृथ्वीदेव II के प्रमुख शिलालेख हैं : कोटागढ़ , अकलतरा , राजिम , बिलाईगढ़ , कोनी , आमोदा , रतनपुर , पारागांव , घोटिया | अंतिम शिलालेख रतनपुर शिलालेख (1163) है |

उपाधि

75. इस राज्य में रतनपुर के कल्चुरी वंश के निम्नलिखित में से किस शासक ने सकलकोसलाधिपति की उपाधि धारण किया था ?
(A) रत्नदेव प्रथम (B) पृथ्वीदेव प्रथम
(C) रत्नदेव द्वितीय (D) पृथ्वीदेव द्वितीय
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam AMIN 2017]
[CGPSC SSE 2017]

उत्तर (B)

पृथ्वीदेव प्रथम ने सकलकोसलाधिपति की उपाधि ग्रहण की | आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार कलिंगराज के सोमवंशी शासकों से युद्ध में विजय का वर्णन किया | पृथ्वीदेव प्रथम ने सकलकोसलाधिपति व प्रचण्डकोसलाधिपति उपाधि धारण किया | 21000 ग्रामों का स्वामी कहलाए | तुम्माण में पृथ्वी देवेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण |

76. कल्चुरी वंश के किस शासक ने 'सकलकोसलाधिपति' की उपाधि धारण किया था ?
(A) पृथ्वीदेव I (B) पृथ्वीदेव II
(C) रत्नदेव I (D) रत्नदेव II
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam 2014]
[CGPSC SES 2016]

उत्तर (A)

त्रिपुरी के कल्चुरी शासक शंकरगढ़ II ने 'मुग्धतुंग' की उपाधि धारण किया था |

रतनपुर के कल्चुरी शासकों द्वारा निम्नलिखित उपाधियों का धारण किया गया :

(1) कलिंगराज – परममहेश्वर

(2) पृथ्वीदेव I – सकलकोसलाधिपति , प्रचण्डकोसलाधिपति

(3) जाजल्लदेव I - गजशार्दूल (गजबेटकर) श्रीमज्जाजल्यदेव

(4) रत्नदेव II – त्रिकलिंगाधिपति

77. गजशार्दुल की उपाधि धारण करने वाले शासक थे :
(A) जाजल्लदेव I (B) जाजल्लदेव II
(C) रत्नदेव II (D) पृथ्वीदेव II
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam 2014]
[CGPSC SES 2016]

उत्तर (A)

जाजल्लदेव I ने सोने के सिक्के चलाये तथा सोने के सिक्के पर **गजशार्दूल** व **श्रीमज्जाजल्यदेव** चित्रित करवाया |

समकालीन शासक

78. किस मुग़ल सम्राट ने कल्याण साय को 8 वर्षो के लिए नजरबंद करवा दिया था ?
(A) अकबर (B) जहाँगीर
(C) शाहजहाँ (D) औरंगजेब
(E) इनमें से कोई नहीं
[CGPSC ADIHS 2017]

उत्तर (B)

बाबू रेवाराम की पाण्डुलिपि

- कल्याण साय तथा मंडला के शासक के विवाद होने के कारण तत्कालीन मुग़ल सम्राट अकबर ने कल्याण साय को दिल्ली बुलवाया |
- मुग़ल सम्राट **अकबर** ने कल्याण साय को 8 वर्षो के लिए नजरबंद करवा दिया |

तुजुक-ए-जहाँगीर व गोपल्ला गीत

- मुग़ल सम्राट **जहाँगीर** ने कल्याण साय को 8 वर्षो के लिए नजरबंद करवा दिया |

67. रतनपुर के किस शासक को मुग़ल सम्राट जहाँगीर की हाजिरी में आठ वर्षों तक रहना पड़ा था ?
(A) राजा कल्याण साय (B) राजा लक्ष्मण साय
(C) राजा बाहरेन्द्र साय (D) राजा सुरेन्द्र साय
(E) इनमें से कोई नहीं
[CGPSC MAINS 2011]

उत्तर (A)

तुजुक-ए-जहाँगीर व गोपल्ला गीत

मुग़ल सम्राट **जहाँगीर** ने कल्याण साय को 8 वर्षो के लिए नजरबंद करवा दिया |

68. कल्चुरी वंशीय शासक कल्याण साय किस सम्राट के समकालीन थे ?
(A) अकबर (B) जाहांगीर
(C) शाहजहाँ (D) औरंगजेब
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (B)

तुजुक-ए-जहाँगीर व गोपल्ला गीत

मुग़ल सम्राट **जहाँगीर** ने कल्याण साय को 8 वर्षो के लिए नजरबंद करवा दिया अर्थात् कल्चुरी वंशीय शासक कल्याण साय जाहांगीर के समकालीन थे |

69. कल्याण साय मुग़ल दरबार में कितने वर्षों तक नजरबंद रहा ?
(A) 5 (B) 6
(C) 7 (D) 8
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (D)

तुजुक-ए-जहाँगीर व गोपल्ला गीत

मुग़ल सम्राट **जहाँगीर** ने कल्याण साय को 8 वर्षो के लिए नजरबंद करवा दिया |

70. कथन : कल्चुरी वंश का राजा कल्याण साय रतनपुर राज्य का शासक था |
कारण : मुग़ल सम्राट जहाँगीर की आत्मकथा में उसका उल्लेख है |
(A) कथन व कारण दोनों सही है तथा कारण कथन को स्पष्ट करता है |
(B) कथन व कारण दोनों सही है परन्तु कारण कथन को स्पष्ट नहीं करता है |
(C) कथन सही है कारण गलत है |
(D) कथन गलत है कारण सही है |
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

तुजुक-ए-जहाँगीर व गोपल्ला गीत

मुग़ल सम्राट **जहाँगीर** ने कल्याण साय को 8 वर्षो के लिए नजरबंद करवा दिया |

71. गोपल्ला गीत छत्तीसगढ़ के किस वंश के इतिहास से संबंधित है ?
(A) कल्चुरी वंश (B) सोम वंश
(C) भोंसला वंश (D) नालनाग वंश
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (A)

गोपल्ला गीत के अनुसार

मुग़ल सम्राट **जहाँगीर** ने कल्याण साय को 8 वर्षो के लिए नजरबंद करवा दिया अर्थात् कल्चुरी वंशीय शासक कल्याण साय जाहांगीर के समकालीन थे |

सिक्का (मुद्रा)

72. कौन से कल्चुरी राजा ने छत्तीसगढ़ में सोने के सिक्के चलाए थे ?
(A) पृथ्वीदेव द्वितीय (B) जाजल्लदेव प्रथम
(C) जाजल्लदेव द्वितीय (D) प्रतापमल्ल
(E) पृथ्वीदेव प्रथम

[CGPSC HORTI CLT 2017]

उत्तर (B)

जाजल्लदेव I ने पहली बार छत्तीसगढ़ में सोने के सिक्के चलाये तथा सोने के सिक्के पर **गजशार्दूल** व **श्रीमज्जाजल्यदेव** चित्रित करवाया |

रत्नदेव II ने सोने व चांदी के सिक्के चलाये |

पृथ्वीदेव II ने चांदी का सबसे छोटा सिक्के चलाये |

प्रतापमल्ल ने तांबे के चक्राकार व षट्कोणाकार सिक्के चलाये |

73. कौन से कल्चुरी राजा ने पहली बार छत्तीसगढ़ में सोने के सिक्के चलाए थे ?
(A) पृथ्वीदेव द्वितीय (B) जाजल्लदेव प्रथम
(C) जाजल्लदेव द्वितीय (D) प्रतापमल्ल
(E) इनमें से कोई नही

[CGPSC REGISTRAR 2017]

उत्तर (B)

जाजल्लदेव I ने पहली बार छत्तीसगढ़ में सोने के सिक्के चलाये तथा सोने के सिक्के पर **गजशार्दूल** व **श्रीमज्जाजल्यदेव** चित्रित करवाया |

रत्नदेव II ने सोने व चांदी के सिक्के चलाये |

पृथ्वीदेव II ने चांदी का सबसे छोटा सिक्के चलाये |

प्रतापमल्ल ने तांबे के चक्राकार व षट्कोणाकार सिक्के चलाये |

धार्मिक जीवन

74. कल्चुरी वंश की कुलदेवी कौन थी ?
(A) महालक्ष्मी (B) गजलक्ष्मी
(C) राज्य लक्ष्मी (D) श्रीलक्ष्मी
(E) अश्वलक्ष्मी

[CGPSC ADIHS 2008]

उत्तर (B)

कल्चुरीकालीन धार्मिक जीवन

- धर्म - **शैव धर्म**
- उपासक - **शक्ति / शाक्त**
- मंदिर - **शिव या माता**
- मंदिर द्वार प्रतिमा - **गजलक्ष्मी / शिवलिंग**
- मंदिर द्वार उत्कीर्ण - **ॐ नमः शिवाय**
- ताम्रपत्र का आरंभ - **ॐ नमः शिवाय**
- आराध्य देवता - **बमकेश्वर महादेव**
- आराध्य देवी - **महिषासुर मर्दिनी**
- कुलदेवी - **गजलक्ष्मी**

साहित्य

75. गोपाल चन्द्र मिश्र किस कल्चुरी शासक के दरबारी कवि थे ?
(A) पृथ्वीदेव द्वितीय (B) जाजल्लदेव प्रथम
(C) तखत सिंह (D) राजसिंह
(E) पृथ्वीदेव प्रथम

उत्तर (D)

जाजल्लदेव I ने सोने के सिक्के चलाये तथा सोने के सिक्के पर **गजशार्दूल** व **श्रीमज्जाजल्यदेव** चित्रित करवाया |

रत्नदेव II ने सोने व चांदी के सिक्के चलाये |

पृथ्वीदेव II ने चांदी का सबसे छोटा सिक्के चलाये |

प्रतापमल्ल ने तांबे के चक्राकार व षट्कोणाकार सिक्के चलाये |

76. 'खूब तमाशा' नामक काव्य ग्रंथ की रचना किस कवि ने की थी ?
(A) भूषण (B) राजशेखर
(C) गोपाल मिश्र (D) गोपाल दास नीरज
(E) इनमें से कोई नहीं
[CGPSC MAINS 2012]

उत्तर (B)

राजसिंह देव के दरबारी कवि गोपाल मिश्र की रचनाएँ :
खूब तमाशा (1689)
जैमिनी
अश्वमेघ
सुदामाचरित
चिंतामणि (कृष्ण प्रबंध काव्य)
रामप्रताप (राम प्रबंध काव्य)

77. इस राज्य के कल्चुरी शासक राजसिंह के दरबारी कवि गोपाल मिश्र ने निम्नलिखित में से किस ग्रंथ की रचना की ?
(A) तारीख – ए – हैहयवंशी (B) खूब तमाशा
(C) रतनपुर – महात्म्य (D) रत्नपरीक्षा
(E) इनमें से कोई नहीं
[CGVyapam FOOD INSPECTOR 2017]

उत्तर (B)

राजसिंह देव के दरबारी कवि गोपाल मिश्र की रचनाएँ :
खूब तमाशा (1689)
जैमिनी
अश्वमेघ
सुदामाचरित
चिंतामणि (कृष्ण प्रबंध काव्य)
रामप्रताप (राम प्रबंध काव्य)

78. खूब तमाशा के रचना की तिथि वर्ष है :
(A) 1686 (B) 1687
(C) 1688 (D) 1689
(E) 1690

उत्तर (D)

राजसिंह देव के दरबारी कवि गोपाल मिश्र ने 1689 में खूब तमाशा की रचना किया |

79. रामाश्वमेघ के रचनाकार है :
(A) शिवदत्त शास्त्री गौरहा (B) बाबू रेवाराम
(C) नारायण कवि (D) गोपाल मिश्र
(E) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (B)

बाबू रेवाराम की रचनाएँ :
तवारीख – ए – हैहयवंशी
रामायण दीपिका
रामाश्वमेघ
रतनपुर का इतिहास
रत्नपरीक्षा
विक्रम विलास
गंगा लहरी
ब्राह्मण स्त्रोत
गीतामाधव
माता के भजन
कृष्णलीला के भजन
लोकवाक्य
लोक – लावण्य वृत्तांत
दोहावली
नर्मदाकंटन
दोहावली

---------- ALL THE BEST ----------

---------- रायपुर के कल्चुरी वंश ----------

1. रायपुर में रतनपुर कल्चुरी शाखा के प्रथम राजा कौन था ?
(A) ब्रह्मदेव (B) रामचंद्रदेव
(C) मोहन सिंह (D) अजीत सिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC PRE 2015]

उत्तर (B)

रायपुर कल्चुरी वंश के प्रथम शासक रामचंद्रदेव थे जबकि अंतिम शासक अमर सिंह थे |

रामचंद्रदेव

- नगर स्थापत्य – रायपुर
- अपने पुत्र **ब्रह्मदेव राय** के नाम पर **रायपुर** शहर की स्थापना किया |
- रायपुर में कल्चुरी शाखा के प्रथम राजा
- रतनपुर कल्चुरी वंश से पृथक स्वतंत्र शासन की शुरुवात

अमर सिंह

- अंतिम स्वतंत्र रायपुर कल्चुरी शासक **(1741 – 1750)**
- अंतिम शासक
- मराठा अधीन प्रथम शासक **(1750 – 1753)**

2. रायपुर में कल्चुरी शाखा के प्रथम राजा कौन थे ?
(A) ब्रह्मदेव (B) रामचंद्रदेव
(C) मोहन सिंह (D) रघुनाथ सिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC AMO 2017]

उत्तर (B)

रामचंद्रदेव

- नगर स्थापत्य – रायपुर
- अपने पुत्र **ब्रह्मदेव राय** के नाम पर **रायपुर** शहर की स्थापना किया |
- रायपुर में कल्चुरी शाखा के प्रथम राजा
- रतनपुर कल्चुरी वंश से पृथक स्वतंत्र शासन की शुरुवात

3. रायपुर की स्थापना किस कल्चुरी राजा द्वारा की गयी थी ?
(A) लक्ष्मकर्ण (B) सोधादेव
(C) रामचंद्रदेव (D) अशोक
(E) बिज्जल

[CGPSC LIBRARIAN 2014]

उत्तर (C)

रामचंद्रदेव

- नगर स्थापत्य – रायपुर
- अपने पुत्र **ब्रह्मदेव राय** के नाम पर **रायपुर** शहर की स्थापना किया |
- रायपुर में कल्चुरी शाखा के प्रथम राजा
- रतनपुर कल्चुरी वंश से पृथक स्वतंत्र शासन की शुरुवात

4. रायपुर शहर का नाम किसके नाम पर रखा गया ?
(A) ब्रह्मदेव राय (B) हरीराव नायक
(C) रामचंद्रदेव (D) वीर नारायण सिंह
(E) अमर सिंह

[CGPSC RDA 2014]

उत्तर (A)

रामचंद्रदेव

- नगर स्थापत्य – रायपुर
- अपने पुत्र **ब्रह्मदेव राय** के नाम पर **रायपुर** शहर की स्थापना किया |
- रायपुर में कल्चुरी शाखा के प्रथम राजा
- रतनपुर कल्चुरी वंश से पृथक स्वतंत्र शासन की शुरुवात

5. कल्चुरी वंश की रायपुर शाखा का अंतिम शासक निम्नलिखित में से कौन था ?
(A) अमर सिंह (B) उमेंद सिंह
(C) सूरत सिंह (D) कुशल सिंह
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC Asst. Director Sericulture 2017]

उत्तर (A)

रायपुर कल्चुरी वंश के प्रथम शासक रामचंद्रदेव थे जबकि अंतिम शासक अमर सिंह थे |

रामचंद्रदेव

- नगर स्थापत्य – रायपुर
- अपने पुत्र **ब्रह्मदेव राय** के नाम पर **रायपुर** शहर की स्थापना किया |
- रायपुर में कल्चुरी शाखा के प्रथम राजा
- रतनपुर कल्चुरी वंश से पृथक स्वतंत्र शासन की शुरुवात

अमर सिंह

- अंतिम स्वतंत्र रायपुर कल्चुरी शासक **(1741 – 1750)**
- अंतिम शासक
- मराठा अधीन प्रथम शासक **(1750 – 1753)**

6. निम्नलिखित शासक रायपुर कल्चुरी शाखा से संबंधित थे :

1. चामुण्डराय देव
2. मोहनसिंह देव
3. उमेदसिंह देव
4. अमरसिंह देव

(A) 1 , 2 , 3
(B) 2 , 3 , 4
(C) 1 , 2 , 4
(D) 1 , 3 , 4
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGPSC ACF 2016]

उत्तर (D)

चामुण्डराय देव , उमेदसिंह देव तथा अमरसिंह देव रायपुर कल्चुरी शाखा से संबंधित शासक थे |

मोहनसिंह देव रतनपुर कल्चुरी शाखा से संबंधित शासक थे |

7. कवर्धा के फणिनाग वंश के अंतिम शासक को किसने पराजित किया था ?

(A) रामचंद्रदेव
(B) कल्हणदेव
(C) ब्रह्मदेव
(D) उमेदसिंह देव
(E) इनमें से कोई नहीं

[CGVyapam MFA 2017]

उत्तर (C)

1413 में ब्रह्मदेव ने फणी नागवंशी शासक **मोनिंगदेव** को हराया |

---------- ALL THE BEST ----------

मुख्य परीक्षा आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

Question 1. कल्चुरी वंश के शासक कलिंगराज की भूमिका पर प्रकाश डालिए | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)

परममहेश्वर उपाधि से सुसज्जित कलिंगराज छत्तीसगढ़ में **कल्चुरी राजवंश** के **लहुरी शाखा** के वास्तविक संस्थापक थे | पृथ्वीदेव I के **आमोदा ताम्रपत्र** के अनुसार कलिंगराज ने 1000 ई. में **सोमवंशी शासकों** को पराजित कर दक्षिण कोसल में **कल्चुरी राजवंश** की नींव रखी | इनकी राजधानी तुम्माण थी | इनके प्रमुख स्थापत्य महिषाशुर मर्दिनी मंदिर (चैतुरगढ़) है | **अलबरूनी** द्वारा रचित **तहकीक – ए – हिन्द** में इनका वर्णन मिलता है |

Question 2. कल्चुरी वंश के शासक कमलराज की भूमिका पर प्रकाश डालिए | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)

कमलराज कल्चुरी वंश का सर्वाधिक महत्वाकांक्षी शासक था | गांगेयदेव (त्रिपुरी कल्चुरी वंश) को **उत्कल अभियान (उड़ीसा अभियान)** में सैन्य सहायता प्रदान किया | **उत्कल अभियान से वापस लौटते समय कमलराज ने** साहिल्ल नामक व्यक्ति को अपने साथ लाया, जिसने राज्य विस्तार किया |

Question 3. कल्चुरी वंश के शासक रत्नदेव प्रथम की उपलब्धि बताइए |
(अंक : 2 , शब्द सीमा : 30) **[CGPSC MAINS 2015]**

रत्नराज प्रथम की उपाधि से सुसज्जित रत्नदेव प्रथम ने 1050 में रतनपुर की स्थापना कर उसे अपनी राजधानी बनाया | इनके प्रमुख स्थापत्य रतनपुर में गज किला , महामाया मंदिर , नानादेव कुल भूषित मंदिर , बमकेश्वर महादेव मंदिर (तुम्माण) , महिषाशुर मर्दिनी मंदिर (लाफागढ़) है | रत्नदेव प्रथम के शासनकाल में रतनपुर के वैभव को देखकर **"कुबेरपुर"** तथा **"चतुर्युगी पूरी"** की संज्ञा प्रदान की गयी |

Question 4. कल्चुरी शासक जाजल्यदेव प्रथम की उपलब्धियों को रेखांकित कीजिये |
(अंक : 4 , शब्द सीमा : 60) **[CGPSC MAINS 2016]**

कल्चुरी वंश का सबसे प्रतापी शासक जाजल्यदेव प्रथम कल्चुरी शासक के प्रथम शासक थे जिन्होंने स्वर्ण सिक्का चलाया तथा उनमें गजशार्दूल व श्रीमज्जाजल्यदेव चित्रित करवाया | जाजल्लदेवपुर (जांजगीर) की स्थापना करके वहां नकटा मंदिर (विशाल विष्णुमंदिर) व जांजगीर का विशाल तालाब का निर्माण करवाया | रतनपुर शिलालेख के अनुसार फणिनाग वंशी शासक गोपालदेव व स्वर्णपुर के शासक भुजबल को पराजित किया | छिंदक नागवंशी शासक सोमेश्वर I को पराजित किया तथा सपरिवार कैद किया | माता गुंडमहादेवी के अनुग्रह पर कैद से मुक्त किया | इन्होनें पाली का शिव मंदिर जीर्णोद्धार किया |

Question 5. कल्चुरीकालीन शासन व्यवस्था को रेखांकित कीजिये | (अंक : 20 , शब्द सीमा : 250)

छत्तीसगढ़ के प्राचीन इतिहास में हैहय कल्चुरी राजवंश का स्थान महत्वपूर्ण है | पृथ्वीदेव I के आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार छत्तीसगढ़ में लहुरी शाखा के वास्तविक संस्थापक कलिंग राज है | सोमवंशी शासकों को पराजित कर तुम्माण को राजधानी के रूप में स्थापित कर कल्चुरी राजवंश की लहुरी शाखा का प्रारंभ किया |

कलचुरीकालीन शासन में राजतंत्रीय शासन व्यवस्था प्रचलित थी | कल्चुरीकालीन शासक धर्मपालक , लोकहितकारी व प्रजातत्सल थे | कल्चुरीकालीन मंत्रिमंडल में महामात्य , महासंधि , विग्रहक , महाक्षपटलिक , महाप्रभातृ , महापुरोहित व महाप्रतिहार शासन व्यवस्था का प्रमुख आधार स्तंभ था | प्रशासन को सुदृढ़ व सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी क्रमश: अमात्य (महाध्यक्ष) , शौल्किक , दाण्डिक , साधनिक , महादण्डपाशिक प्रशासन व्यवस्था का प्रमुख आधार स्तंभ था |

अकबर के मनसबदार व्यवस्थता के तर्ज पर कल्याण साय ने जमाबन्धी व्यवस्थता चलाया | इसके तहत सम्पूर्ण राज्य को मण्डल , गढ़ , बरहा व गाँव में विभाजित किया जिनकें प्रमुख अधिकारी क्रमश: महामण्डलेश्वर , दीवान , दाऊ व गोटिया थे | प्रशासन की सबसे बड़ी इकाई मण्डल तथा प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी | 12 गाँव = 1 बरहा , 7 बरहा = 1 गढ़ , 36 गढ़ = मण्डल , मण्डल – एक लाख गाँव का समूह होता था | **पंचकुल** - स्थानीय स्वशासन के लिए पंचकुल की व्यवस्था की गयी | पंचकुल में सदस्यों की संख्या 5 होती थी | पंचकुल के सदस्य 'महत्तर' व अध्यक्ष 'महत्तम' होता था |

कोषागार व्यवस्था के जनक बाहरेन्द्र साय , जमाबंदी व्यवस्था के जनक कल्याण साय तथा बहीखाता व्यवस्था या बजट प्रणाली (लेखा – जोखा) के जनक लक्ष्मण साय द्वारा राजस्व संग्रहण की प्रणाली में विशेष योगदान था | कल्चुरीकालीन स्थापित प्रमुख राजधानियां तुम्माण (कलिंगराज) , रतनपुर (रत्नदेव I) , कोसगई (बाहरेन्द्र साय) , खल्लारी (लक्ष्मीदेव) व रायपुर (ब्रह्मदेव) था |

मूल्यांकन – कल्चुरीकालीन सुसंगठित शासन व्यवस्था का ही परिणाम है कि इस वंश ने छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक 741 वर्षों तक शासन किया | इनका प्रमुख दायित्व अपने क्षेत्रों में शांति व्यवस्था एवं राजस्व संग्रहण था |

Question 6. **कल्चुरीकालीन शासन व्यवस्था को रेखांकित कीजिये |**
(अंक : 8 , शब्द सीमा : 100) **[CGPSC MAINS 2013]**

पृथ्वीदेव I के आमोदा ताम्रपत्र के अनुसार छत्तीसगढ़ में लहुरी शाखा के वास्तविक संस्थापक कलिंग राज है | कलचुरीकालीन शासन में राजतंत्रीय शासन व्यवस्था प्रचलित थी | कल्चुरीकालीन मंत्रिमंडल में महामात्य , महासंधि , विग्रहक , महाक्षपटलिक , महाप्रभातृ , महापुरोहित व महाप्रतिहार शासन व्यवस्था का प्रमुख आधार स्तंभ था | प्रशासन को सुदृढ़ व सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी क्रमश: अमात्य (महाध्यक्ष) , शौल्किक , दाण्डिक , साधनिक , महादण्डपाशिक प्रशासन व्यवस्था का प्रमुख आधार स्तंभ था |

अकबर के मनसबदार व्यवस्थता के तर्ज पर कल्याण साय ने जमाबन्धी व्यवस्थता चलाया | इसके तहत सम्पूर्ण राज्य को मण्डल , गढ़ , बरहा व गाँव में विभाजित किया जिनकें प्रमुख अधिकारी क्रमश: महामण्डलेश्वर , दीवान , दाऊ व गोटिया थे | प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी | **पंचकुल** - स्थानीय स्वशासन के लिए पंचकुल की व्यवस्था की गयी | पंचकुल में सदस्यों की संख्या 5 होती थी | पंचकुल के सदस्य 'महत्तर' व अध्यक्ष 'महत्तम' होता था |

मूल्यांकन – कल्चुरीकालीन सुसंगठित शासन व्यवस्था का ही परिणाम है कि इस वंश ने छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक 741 वर्षों तक शासन किया |

Question 7. **कल्चुरीकालीन सामाजिक जीवन की विशेषताएं क्या थी ? (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)**

कल्चुरीकालीन जनजीवन सामाजिक दृष्टि से समृद्ध था | समानता , स्वतंत्रता एवं बंधुता की भावना विद्यमान थी | सामाजिक जीवन सरल व शांत थी | परिवार पितृ सत्तात्मक तथा राजतंत्रीय शासन व्यवस्था प्रचलित थी |

वर्ण व्यवस्था - वर्ण व्यवस्था का प्रचलन था | ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य का उल्लेख मिलता है , परंतु शुद्र का नहीं | **गुण्डमहादेवी शिलालेख** के अनुसार स्त्रियों की स्थिति सम्मानजनक थी | रतनपुर स्थित **सती चौरा** इस बात का द्योतक है कि कल्चुरी वंश में सती प्रथा प्रचलित थी | बहु-पत्नी प्रथा भी विद्यमान थी | इसकाल में 43 प्रकार की जनजातियाँ पायी जाती थी | **गोंड** सबसे बड़ी जनजाति थी |

मूल्यांकन – कल्चुरीकालीन सुसंगठित सामाजिक जीवन का ही परिणाम है कि इस वंश ने छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक 741 वर्षों तक शासन किया | कल्चुरीकालीन जनजीवन उच्चस्तरीय था एवं सामाजिक जीवन में समरसता थी |

Question 8. कल्चुरीकालीन आर्थिक जीवन पर प्रकाश डालिए | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)

कल्चुरीकालीन जनजीवन आर्थिक दृष्टि से समृद्ध था | ये कृषि , पशुपालन तथा व्यापार में उन्नत थे | (1) कृषि : अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था | प्रमुख फसल - कपास , गेहूं , चावल , जौ | भूमिकर राजस्व आय का प्रमुख स्त्रोत था | सब्जी बेचने वालों को दिया जाने वाला परमिट **युगा** था | (2) पशुपालन : प्रमुख पशु बैल , गाय , बकरी , भैंस , भेड़ , गधे , ऊँठ आदि का पालन इनकी विशेषता थी | उदाहरण - मंदिर की दीवारों में पशुओं का चित्रण | (3) व्यापार : हस्तशिल्प उद्योग , बुनकर उद्योग , बर्तन निर्माण उद्योग राजस्व का आधार स्तम्भ था |

कोषागार व्यवस्था के जनक बाहरेन्द्र साय , जमाबंदी व्यवस्था के जनक कल्याण साय तथा बहीखाता व्यवस्था या बजट प्रणाली (लेखा – जोखा) के जनक लक्ष्मण साय द्वारा राजस्व संग्रहण की प्रणाली में विशेष योगदान था | कल्चुरीकालीन राजस्व विभाग में महाक्षपटलिक (वित्त मंत्री) , महाप्रभातृ (प्रमुख लगान अधिकारी) व शोल्किक (कर संग्रहण अधिकारी) अर्थव्यवस्था व्यवस्था का प्रमुख आधार स्तंभ थे |

कल्चुरीकाल में विकसित मापन पद्धतियां अर्थव्यवस्था का आधार थी | (1) मुद्रा मापन की इकाई "कोड़ी : गण्डा : कोरी : दोगानी" थी | (2) द्रव मापन की इकाई "सेरी : पंसेरी : मन" थी | (3) अनाज मापन की इकाई "पोगाई : अधेलिया : कुरु : काठा : खाड़ी (खंडी) : गाढ़ा" थी |

मूल्यांकन – कल्चुरीकालीन सुदृढ़ एवं समृद्ध आर्थिक जीवन का ही परिणाम है कि इस वंश ने छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक 741 वर्षों तक शासन किया | कल्चुरीकालीन जनजीवन उच्चस्तरीय एवं समृद्ध था |

Question 9. कल्चुरीकालीन धार्मिक जीवन पर प्रकाश डालिए | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)

कल्चुरीकालीन जीवन धर्म – निरपेक्ष था | इसकाल में शैव , वैष्णव , बौद्ध , जैन धर्मों को संरक्षण प्रदान किया गया था अर्थात् इसकाल में धार्मिक सहिष्णुता की भावना विद्यमान थी | कल्चुरीकालीन शासक शैव धर्म के अनुयायी थे | वे शक्ति / शाक्त उपासक थे | वे सामान्यतया शिव या माता की मंदिर का स्थापत्य करते थे | मंदिर द्वार पर स्थित प्रतिमा गजलक्ष्मी या शिवलिंग होती थी | मंदिर द्वार पर ॐ नमः शिवाय उत्कीर्ण किया जाता था | ताम्रपत्र का आरंभ भी ॐ नमः शिवाय से किया जाता था | इनके प्रमुख आराध्य देवता बमकेश्वर महादेव तथा आराध्य देवी महिषासुर मर्दिनी थी | इस वंश की कुलदेवी गजलक्ष्मी थी |

शुद्धद्वैतवाद के जनक , पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक व अष्टछाप के कवि वल्लभाचार्य का जन्म कल्चुरी काल में हुआ था | वे कल्चुरी शासक 'शंकर साय' के समकालीन थे | वैष्णव धर्म को समर्पित दूधाधारी मठ का निर्माण ब्रह्मदेव ने किया था |

कल्चुरीकाल में स्थापित मंदिर धार्मिक सहिष्णुता का परिचायक है | कलिंगराज ने चैतुरगढ़ में महिषाशुर मर्दिनी मंदिर करवाया | यह कल्चुरीकालीन प्रथम मंदिर है | यह धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र है | रत्नदेव I ने रतनपुर में महामाया मंदिर , नानादेव कुल भूषित मंदिर , बमकेश्वर महादेव मंदिर (तुम्माण) , महिषाशुर मर्दिनी मंदिर (लाफागढ़) , पातालेश्वर महादेव मंदिर (मल्हार) का निर्माण करवाया | पृथ्वीदेव I ने तुम्माण में पृथ्वी देवेश्वर महादेव मंदिर , जाजल्लदेव I ने नकटा मंदिर (विशाल विष्णुमंदिर) का निर्माण करवाया | नकटा मंदिर वैष्णव सम्प्रदाय के संरक्षण का परिचायक है | रत्नदेव III ने रतनपुर में लखनीदेवी मंदिर , एकवीरा माता मंदिर , पूरारति शिव मंदिर का निर्माण करवाया | बाहरेन्द्र साय ने छुरी कोसगई में कोसगई माता मंदिर का निर्माण करवाया | कल्याण साय ने रतनपुर स्थित गज किला के भीतर श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर का निर्माण करवाया |

मूल्यांकन – कल्चुरीकालीन धार्मिक सहिष्णुता एवं समानता इस काल की प्रमुख विशेषता रही है |

Question 10. कल्चुरीकालीन स्थापत्य कला पर प्रकाश डालिए | (अंक : 20 , शब्द सीमा : 250)

कल्चुरी वंश को साहित्य एवं स्थापत्य का स्वर्ण युग कहा जाता है | कल्चुरीकालीन जीवन में स्थापत्य कला का विकास इसकी प्रमुख विशेषता रही है | इस काल से शासक स्थापत्य कला में अग्रणी थी | स्थापत्य कला न केवल धार्मिक सहिष्णुता का परिचायक है बल्कि कल्चुरीकालीन राज्य की सुंदरता का प्रतीक है |

कल्चुरीकालीन शासक शैव धर्म के अनुयायी थे | वे शक्ति / शाक्त उपासक थे | वे सामान्यतया शिव या माता की मंदिर का स्थापत्य करते थे | मंदिर द्वार पर स्थित प्रतिमा गजलक्ष्मी या शिवलिंग होती थी | मंदिर द्वार पर ॐ नमः शिवाय उत्कीर्ण किया जाता था | ताम्रपत्र का आरंभ भी ॐ नमः शिवाय से किया जाता था | इनके प्रमुख आराध्य देवता बमकेश्वर महादेव तथा आराध्य देवी महिषासुर मर्दिनी थी | इस वंश की कुलदेवी गजलक्ष्मी थी |

कल्चुरीकालीन जीवन का आधार स्तम्भ धार्मिक सहिष्णुता रही है | अतः इस काल में वैष्णव धर्म के भी मंदिर स्थापत्य कला की सुंदरता बिखेरते है | शुद्धद्वैतवाद के जनक , पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक व अष्टछाप के कवि वल्लभाचार्य का जन्म कल्चुरी काल में हुआ था | वे कल्चुरी शासक 'शंकर साय' के समकालीन थे | वैष्णव धर्म को समर्पित दूधाधारी मठ का निर्माण ब्रह्मदेव ने किया था |

कल्चुरीकाल में स्थापित मंदिर धार्मिक सहिष्णुता का परिचायक है | कलिंगराज ने चैतुरगढ़ में महिषाशुर मर्दिनी मंदिर करवाया | यह कल्चुरीकालीन प्रथम मंदिर है | यह धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र है | रत्नदेव I ने रतनपुर में महामाया मंदिर , नानादेव कुल भूषित मंदिर , बमकेश्वर महादेव मंदिर (तुम्माण) , महिषाशुर मर्दिनी मंदिर (लाफागढ़) , पातालेश्वर महादेव मंदिर (मल्हार) का निर्माण करवाया | पृथ्वीदेव I ने तुम्माण में पृथ्वी देवेश्वर महादेव मंदिर , जाजल्लदेव I ने नकटा मंदिर (विशाल विष्णुमंदिर) का निर्माण करवाया | नकटा मंदिर वैष्णव सम्प्रदाय के संरक्षण का परिचायक है | रत्नदेव III ने रतनपुर में लखनीदेवी मंदिर , एकवीरा माता मंदिर , पूरासति शिव मंदिर का निर्माण करवाया | बाहरेन्द्र साय ने छुरी कोसगई में कोसगई माता मंदिर का निर्माण करवाया | कल्याण साय ने रतनपुर स्थित गज किला के भीतर श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर का निर्माण करवाया |

राजसिंह द्वारा निर्मित बादलमहल व हवामहल वास्तुकला का विशिष्ट उदाहरण है | रत्नदेव I ने रतनपुर में गज किला (हाथी किला) , रत्नदेव III ने रतनपुर में मठ मंदिर , बाहरेन्द्र साय ने लाफागढ़ में चैतुरगढ़ का किला का निर्माण करवाया , जो स्थापत्य कला का उत्कृष्टता का परिचायक है |

रत्नदेव I ने रतनपुर में तालाबों का जाल बिछाया , जो कि रतनपुर की प्राकृतिक सौन्दर्यता का परिचायक है | पृथ्वीदेव I ने रतनपुर का विशाल तालाब तथा जाजल्लदेव I ने जांजगीर का विशाल तालाब बनवाया जो प्रकृति प्रेम का उत्कृष्ट उदाहरण है |

मूल्यांकन – कल्चुरीकालीन धार्मिक सहिष्णुता एवं समानता की भावना इनमे स्थापत्य कला का परिचायक है |

Question 11. **(1) कल्चुरीकालीन छत्तीसगढ़ की सामाजिक विशेषताएं क्या थी ?**
(2) कल्चुरीकालीन छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था का विवरण दीजिये |
(3) स्थापत्य के क्षेत्र में कलचुरियों का क्या योगदान था ?
(अंक : 40 , शब्द सीमा : 500) **[CGPSC MAINS 2015]**

सामाजिक जीवन - कल्चुरीकालीन जनजीवन सामाजिक दृष्टि से समृद्ध था | समानता , स्वतंत्रता एवं बंधुता की भावना विद्यमान थी | सामाजिक जीवन सरल व शांत थी | परिवार पितृ सत्तात्मक तथा राजतंत्रीय शासन व्यवस्था प्रचलित थी | **वर्ण व्यवस्था** - वर्ण व्यवस्था का प्रचलन था | ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य का उल्लेख मिलता है , परंतु शुद्र का नहीं | **गुण्डमहादेवी शिलालेख के अनुसार** स्त्रियों की स्थिति सम्मानजनक थी | रतनपुर स्थित **सती चौरा** इस बात का द्योतक है कि कल्चुरी वंश में सती प्रथा प्रचलित थी | बहु-पत्नी प्रथा भी विद्यमान थी | इसकाल में 43 प्रकार की जनजातियाँ पायी जाती थी | **गोंड** सबसे बड़ी जनजाति थी |

मूल्यांकन – कल्चुरीकालीन सुसंगठित सामाजिक जीवन का ही परिणाम है कि इस वंश ने छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक 741 वर्षों तक शासन किया | कल्चुरीकालीन जनजीवन उच्चस्तरीय था एवं सामाजिक जीवन में समरसता थी |

आर्थिक जीवन - कल्चुरीकालीन जनजीवन आर्थिक दृष्टि से समृद्ध था | ये कृषि , पशुपालन तथा व्यापार में उन्नत थे | (1) कृषि : अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था | प्रमुख फसल - कपास , गेहूं , चावल , जौ | भूमिकर राजस्व आय का प्रमुख स्त्रोत था | सब्जी बेचने वालों को दिया जाने वाला परमिट **युग्गा** था | (2) पशुपालन : प्रमुख पशु बैल , गाय , बकरी , भैंस , भेड़ , गधे , ऊँठ आदि का पालन इनकी विशेषता थी | उदाहरण - मंदिर की दीवारों में पशुओं का चित्रण | (3) व्यापार : हस्तशिल्प उद्योग , बुनकर उद्योग , बर्तन निर्माण उद्योग राजस्व का आधार स्तम्भ था |

कोषागार व्यवस्था के जनक बाहरेन्द्र साय , जमाबंदी व्यवस्था के जनक कल्याण साय तथा बहीखाता व्यवस्था या बजट प्रणाली (लेखा – जोखा) के जनक लक्ष्मण साय द्वारा राजस्व संग्रहण की प्रणाली में विशेष योगदान था | कल्चुरीकालीन राजस्व विभाग में महाक्षपटलिक (वित्त मंत्री) , महाप्रभातृ (प्रमुख लगान अधिकारी) व शौल्किक (कर संग्रहण अधिकारी) अर्थव्यवस्था व्यवस्था का प्रमुख आधार स्तंभ थे |

कल्चुरीकाल में विकसित मापन पद्धतियां अर्थव्यवस्था का आधार थी | (1) मुद्रा मापन की इकाई "कोड़ी : गण्डा : कोरी : दोगानी" थी | (2) द्रव मापन की इकाई "सेरी : पंसेरी : मन" थी | (3) अनाज मापन की इकाई "पोगाई : अधेलिया : कुरु : काठा : खाड़ी (खंडी) : गाढ़ा" थी |

मूल्यांकन – कल्चुरीकालीन सुदृढ़ एवं समृद्ध आर्थिक जीवन का ही परिणाम है कि इस वंश ने छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक 741 वर्षों तक शासन किया | कल्चुरीकालीन आर्थिक जनजीवन उच्चस्तरीय एवं समृद्ध था |

स्थापत्य कला - कल्चुरी वंश को साहित्य एवं स्थापत्य का स्वर्ण युग कहा जाता है | कल्चुरीकालीन जीवन में स्थापत्य कला का विकास इसकी प्रमुख विशेषता रही है | इस काल से शासक स्थापत्य कला में अग्रणी थी | स्थापत्य कला न केवल धार्मिक सहिष्णुता का परिचायक है बल्कि कल्चुरीकालीन राज्य की सुंदरता का प्रतीक है |

कल्चुरीकालीन शासक शैव धर्म के अनुयायी थे | वे शक्ति / शाक्त उपासक थे | वे सामान्यतया शिव या माता की मंदिर का स्थापत्य करते थे | मंदिर द्वार पर स्थित प्रतिमा गजलक्ष्मी या शिवलिंग होती थी | मंदिर द्वार पर ॐ नमः शिवाय उत्कीर्ण किया जाता था | ताम्रपत्र का आरंभ भी ॐ नमः शिवाय से किया जाता था | इनके प्रमुख आराध्य देवता बमकेश्वर महादेव तथा आराध्य देवी महिषासुर मर्दिनी थी | इस वंश की कुलदेवी गजलक्ष्मी थी |

कल्चुरीकालीन जीवन का आधार स्तम्भ धार्मिक सहिष्णुता रही है | अतः इस काल में वैष्णव धर्म के भी मंदिर स्थापत्य कला की सुंदरता बिखेरते है | शुद्धद्वैतवाद के जनक , पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक व अष्टछाप के कवि वल्लभाचार्य का जन्म कल्चुरी काल में हुआ था | वे कल्चुरी शासक 'शंकर साय' के समकालीन थे | वैष्णव धर्म को समर्पित दूधाधारी मठ का निर्माण ब्रह्मदेव ने किया था |

कल्चुरीकाल में स्थापित मंदिर धार्मिक सहिष्णुता का परिचायक है | कलिंगराज ने चैतुरगढ़ में महिषाशुर मर्दिनी मंदिर करवाया | यह कल्चुरीकालीन प्रथम मंदिर है | यह धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र है | रत्नदेव I ने रतनपुर में महामाया मंदिर , नानादेव कुल भूषित मंदिर , बमकेश्वर महादेव मंदिर (तुम्माण) , महिषाशुर मर्दिनी मंदिर (लाफागढ़) , पातालेश्वर महादेव मंदिर (मल्हार) का निर्माण करवाया | पृथ्वीदेव I ने तुम्माण में पृथ्वी देवेश्वर महादेव मंदिर , जाजल्लदेव I ने नकटा मंदिर (विशाल विष्णुमंदिर) का निर्माण करवाया | नकटा मंदिर वैष्णव सम्प्रदाय के संरक्षण का परिचायक है | रत्नदेव III ने रतनपुर में लखनीदेवी मंदिर , एकवीरा माता मंदिर , पूरारति शिव मंदिर का निर्माण करवाया | बाहरेन्द्र साय ने छुरी कोसगई में कोसगई माता मंदिर का निर्माण करवाया | कल्याण साय ने रतनपुर स्थित गज किला के भीतर श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर का निर्माण करवाया |

राजसिंह द्वारा निर्मित बादलमहल व हवामहल वास्तुकला का विशिष्ट उदाहरण है | रत्नदेव I ने रतनपुर में गज किला (हाथी किला) , रत्नदेव III ने रतनपुर में मठ मंदिर , बाहरेन्द्र साय ने लाफागढ़ में चैतुरगढ़ का किला का निर्माण करवाया , जो स्थापत्य कला का उत्कृष्टता का परिचायक है |

रत्नदेव I ने रतनपुर में तालाबों का जाल बिछाया , जो कि रतनपुर की प्राकृतिक सौन्दर्यता का परिचायक है | पृथ्वीदेव I ने रतनपुर का विशाल तालाब तथा जाजल्लदेव I ने जांजगीर का विशाल तालाब बनवाया जो प्रकृति प्रेम का उत्कृष्ट उदाहरण है |

मूल्यांकन – कल्चुरीकालीन धार्मिक सहिष्णुता एवं समानता की भावना इनमे स्थापत्य कला का परिचायक है |

Question 12. कल्चुरीकालीन साहित्य एवं भाषा पर प्रकाश डालिए | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)

कल्चुरी वंश के शासक साहित्य प्रेमी थे | कल्चुरी वंश को साहित्य एवं स्थापत्य का स्वर्ण युग कहा जाता है | इस वंश की राजकीय भाषा संस्कृत थी | ताम्रपत्र का आरंभ ॐ नम: शिवाय से होता था | जाजल्लदेव के राजगुरु रुद्रशिव ने बौद्ध ग्रंथो का अध्ययन किया | राजसिंह देव के दरबारी कवि गोपाल मिश्र थे | 1689 में गोपाल मिश्र द्वारा रचित **खूब तमाशा** में औरंगजेब की आलोचना की गयी है | इस काल के प्रमुख साहित्यकार बाबू रेवाराम द्वारा रचित तवारीख – ए – हैहयवंशी व नर्मदाकंटन कल्चुरी वंश के इतिहास का प्रमुख स्त्रोत है | गोपाल मिश्र द्वारा रचित खूब तमाशा , जैमिनी व अश्वमेघ का साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है | नारायण कवि द्वारा रचित रामाभ्युदय तथा वल्लभाचार्य द्वारा रचित भक्तिचिंतामणि का कल्चुरीकालीन इतिहास में अतुल्नीय योगदान है |

मूल्यांकन – कल्चुरी काल में साहित्य का विकास एवं संरक्षण इसकी प्रमुख विशेषता रही है | कल्चुरी कालीन इतिहास में साहित्य का अतुल्नीय योगदान है |

RAKESH SAO

CSE (BIT , Durg)

DIRECTOR (PSC ACADEMY)

FOR COMPLETE NOTES VISIT

WWW.PSCACADEMY.IN

STEPS TO DOWNLOAD PDF NOTES

(1) www.pscacademy.in

(2) CLICK ON "DOWNLOAD"

(3) CLICK ON "PSC ACADEMY SPECIAL"

PSC ACADEMY

CGPSC INTEGRATED (PRE + MAINS)

नवीनतम बैच

15TH JULY 2019

CLASS TIME @ 6PM TO 9PM
TUTION FEES @ Rs. 26,000

3 Days Free Demo Classes
10 Book Study Materials FREE

CLASS SCHEDULE

MONDAY TO FRIDAY @ CLASS
SATURDAY @ PRE + MAINS TEST

PSC ACADEMY (RAIPUR)

BESIDE DENA BANK
GOL CHOWK , DDU NAGAR
ROHANIPURAM , RAIPUR

CONTACT 7000064155
9827112187

RAKESH SAO
CSE (BIT , Durg)
DIRECTOR